

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

सामुदायिक

GOONJ

मासिक पत्रिका

वर्ष : 01 अंक : 01

जनवरी 2021

मूल्य: ₹ 25 पृष्ठ : 52

उत्साह का नवांकुर



सामुदायिक गुँज

मासिक पत्रिका

ग्वालियर, जनवरी 2021

(वर्ष 01, अंक 01, , पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

प्रधान सम्पादक

श्रीमती संध्या सिकरवार

सम्पादक

कृति सिंह

कार्यकारी संपादक

डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सह संपादक

अछेन्द्र सिंह कुशवाह

एडिटिंग

इमरान गोरी

मार्केटिंग हेड

पुनीत शर्मा

संकलन

भरत सिंह

कानूनी सलाहकार

एडवोकेट मोनिका मिश्रा

छायांकन

माहीन रहमान

कार्यालय प्रभारी

स्तुति सिंह

सिटी रिपोटर

आकांक्षा तिवारी

इस अंक में पढ़ें

(जनवरी 2021)

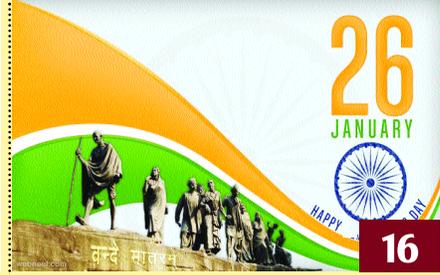


कामयाबी की वैक्सीन

08



12



16



19



22



29



32

गुँज पत्रिका संपादकीय कार्यालय

ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश

(संपर्क: 7987167692)



संपादक की कलम से संपादकीय

फिर एक नई सुबह हो.....

सा मुदायिक गूँज पत्रिका के सभी सुधि पाठकों, ईष्ट मित्रों, शुभचिंतकों को नए साल 2021 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं यह 21वीं सदी के नए और तीसरे दशक की शुरुआत है। मेरी कामना यही है कि नए साल में हम नए संकल्प लें और पुरानी गलतियों से सबक लें। कोरोना महामारी पूरे 2020 में हमें बहुत कुछ सिखा गई है जिंदगी में कई उतार चढ़ाव हमने 2020 में देखे अब 2021 से यही आशा है कि कोरोना जैसी महामारी से हमें छुटकारा मिले और अंधेरे में उजाले की तरह कोरोना वैक्सीन से यह महामारी समाप्त हो



और पूरी दुनिया में फिर एक नई सुबह हो। जिस तरह का लॉकडाउन 2020 में देखने को मिला मानव इतिहास में इस तरह का लॉकडाउन का भी पहला ही अनुभव होगा। सोचिए लॉकडाउन से लेकर सोशल डिस्टेंसिंग जैसे शब्दों और उनका प्रत्यक्ष उपयोग इसी साल देखने को मिला है। लॉकडाउन, क्वारंटाइन, सुपर स्प्रेडर, कंटेनमेंट जोन, आइसोलेशन, जूम, कांटेक्ट ट्रेसिंग, रेमडेसिविर, हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन, पीपीई किट, सोशल डिस्टेंसिंग, हेल्थ एडवाइजर, डेडिकेटेड कोविड सेंटर, वेबिनार, वर्चुअल मीटिंग्स, वर्चुअल सुनवाई, वर्क फ्रॉम होम आदि से लगभग प्रतिदिन साक्षात् होना पड़ा। जो मास्क केवल डॉक्टरों के लिए वो भी ऑपरेशन थिएटर के लिए जाना जाता था, वह हर व्यक्ति की अनिवार्य जरूरत बन गया तो कोरोना वैक्सिन को लेकर वैज्ञानिकों के प्रयास काफी हद तक सफल रहे। लगभग थम चुकी आर्थिक गतिविधियां साल की तीसरी तिमाही तक पटरी पर आने लगीं तो आर्थिक क्षेत्र में थोड़ा आशा का संचार दिखाई देने लगा है।

बीते साल की तमाम मुश्किलों-त्रासदियों के बाद जब कोरोना संक्रमण के खिलाफ टीकाकरण अभियान की शुरुआत हुई तो कई जगह उत्सव जैसा माहौल था। देश के तीन हजार के लगभग केंद्रों पर दो लाख के करीब अग्रिम योद्धाओं को कोविड-19 की वैक्सीन दी गई। कुल मिलाकर कार्यक्रम संतोषजनक रहा और बड़ा नकारात्मक पहलू सामने नहीं आया।

निस्संदेह दुनिया के चंद्र चोटी के देशों में वैक्सीनेसशन की शुरुआत हो पायी है।

भारत में कोरोना टीकाकरण की शुरुआत सुखद और ऐतिहासिक है। यह अवसर किसी उत्सव से कम नहीं है पहले चरण में टीके का खर्च पूरी तरह से केंद्र सरकार उठा रही है, तो कोई आश्चर्य नहीं। पहले चरण में करीब तीन करोड़ अग्रिम पंक्ति के कोरोना योद्धाओं को टीका लगाया जाएगा जब देश के तमाम अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं को टीका लग जाएगा, तब कम से कम डॉक्टर और चिकित्साकर्मी बेहचक सेवा कर सकेंगे। देश में हार्ड इम्युनिटी अर्थात् सामूहिक रोग प्रतिरोधक क्षमता के निर्माण में अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं का टीकाकरण बुनियाद है। यह जरूरी है कि 16 जनवरी से शुरू टीकाकरण को पर्याप्त कामयाबी मिले। बहुत से ऐसे योद्धा होंगे, जो टीका लेना पसंद नहीं करेंगे, लेकिन उन्हें आश्वस्त करते हुए इस चरण के टीकाकरण को कामयाब बनाना होगा। लोगों की भी निगाह इस अभियान की सफलता पर टिकी है। अभी भी कुछ विपक्षी पार्टियों के नेताओं को टीके की गुणवत्ता पर भरोसा नहीं हो रहा है। ऐसे में, भाजपा शासित राज्यों को इस अभियान में सोलह आना कामयाब उतरना होगा। मामला पूरी तरह से विश्वास का है, लोगों का विश्वास सशक्त करना जरूरी है। यह काम तभी बेहतर ढंग से हो सकेगा, जब डॉक्टर स्वयं टीका लेने के लिए आगे आएंगे। डॉक्टरों को न केवल टीका लेने में आगे रहना है, उन्हें इस अभियान को गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा भी करना है। तमाम सावधानियों के साथ पहला चरण पूरा होना चाहिए और इस चरण में रह जाने वाली त्रुटियों से सीखना चाहिए।

इस चरण के बाद संभव है, अगले चरण में टीके के लिए लोगों को भुगतान करना पड़े। करीब छह राज्यों ने अपने यहां लोगों को मुफ्त टीका लगाने का वादा किया है, लेकिन बाकी अनेक राज्य हैं, जो टीका का खर्च उठाने के लिए तैयार नहीं होंगे। स्वाभाविक ही चूंकि टीका महंगा है, इसलिए कुछ सरकारें मुफ्त टीके की घोषणा से बच रही हैं। जो टीका सरकारों को महंगा लग रहा है, वह आम लोगों को कितना महंगा लगेगा, इस बारे में सोच लेना चाहिए। एक और महत्वपूर्ण संकेत यह है कि शायद सरकार लोगों को टीकों में से किसी एक को चुनने का अधिकार नहीं देने पर विचार कर रही है। मतलब जिसे जो टीका दिया जाएगा, उसे वही टीका लेना पड़ेगा। यहां एक अंतर करना पड़ेगा, यदि टीकों की कीमत समान नहीं रहेगी, कम या ज्यादा रहेगी, तो लोगों को चुनने का विकल्प मिलना चाहिए। अन्त में बस यही कहना चाहूंगी कि कोरोना महामारी में जिस तरह से हमारे कोरोना वॉरियर्स डॉक्टरों ने दिन रात एक कर मरीजों की सेवा की वह वाकई सराहनीय और जनसेवा, समर्पण की एक नई मिसाल है। अभी कोरोना गया नहीं है तो मास्क अवश्य लगाएं क्योंकि अभी मास्क ही वैक्सीन है और वैक्सीन आने के बाद भी मास्क का प्रयोग अवश्य करें। ■



कृति सिंह
संपादक

“

मेरी कामना यही है कि नए साल में हम नए संकल्प लें और पुरानी गलतियों से सबक लें। कोरोना महामारी पूरे 2020 में हमें बहुत कुछ सिखा गई है जिंदगी में कई उतार चढ़ाव हमने 2020 में देखे अब 2021 से यही आशा है कि कोरोना जैसी महामारी से हमें छुटकारा मिले और अंधेरे में उजाले की तरह कोरोना वैक्सीन से यह महामारी समाप्त हो और पूरी दुनिया में फिर एक नई सुबह हो। बीते साल की तमाम मुश्किलों-त्रासदियों के बाद जब कोरोना संक्रमण के खिलाफ टीकाकरण अभियान की शुरुआत हुई तो कई जगह उत्सव जैसा माहौल था। देश के तीन हजार के लगभग केंद्रों पर दो लाख के करीब अग्रिम योद्धाओं को कोविड-19 की वैक्सीन दी गई।

”

पीएम मोदी के मार्गदर्शन में आत्मनिर्भर होता भारत

“

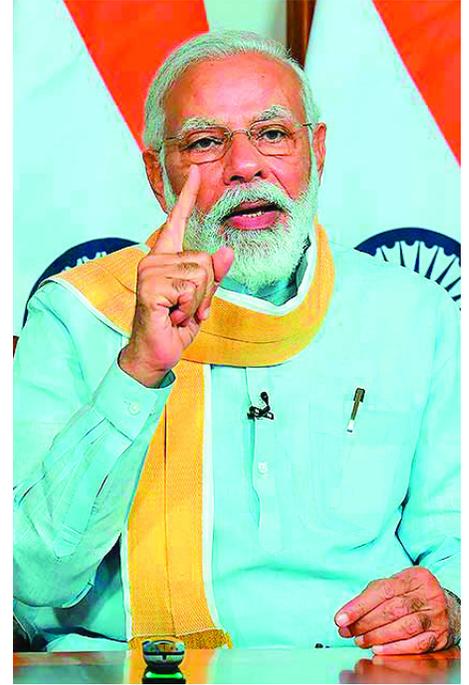
संकट के समय सबसे बड़ी परीक्षा देश का नेतृत्व कर रहे व्यक्ति की ही होती है और पूरी दुनिया ने देखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ना सिर्फ भारत में रहने वालों की चिंता की बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों में बसे भारतीयों और वहां फँसे भारतीयों की भी चिंता की। यही नहीं भारत की विश्व कल्याण की भावना को आगे बढ़ाते हुए समय-समय पर विभिन्न जरूरत वाली दवाइयों को दुनिया के बड़े देशों को भी भेजा गया और छोटे देशों की भी सिर्फ दवा ही नहीं चिकित्सा उपकरणों और अन्न से भी मदद दी गयी।

ब्रा जील के प्रधानमंत्री ने तो नरेंद्र मोदी की तुलना हनुमानजी से करते हुए कहा था कि वह संजीवनी बूटी लेकर आ गये हैं। लॉकडाउन के कारण बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हुए तो मनरेगा का दायरा बढ़ाते हुए उसके लिए बजट में विशाल वृद्धि की गयी ताकि गरीबों, मजदूरों को आमदनी होती रहे। लोग कर्ज की किराओं का भुगतान नहीं कर पा रहे थे तो आरबीआई ने उन्हें छह महीने के लिए राहत दी। दुनिया ने देखा कि कैसे भारत के प्रधानमंत्री समय-समय पर टीवी के माध्यम से देश को संबोधित करते हुए महामारी के खिलाफ लड़ाई में जनता का मार्गदर्शन भी कर रहे हैं और उनके लिए तमाम राहतों का ऐलान भी कर रहे हैं। यह भी पहली बार हुआ कि देश के प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में उद्योगपतियों, कंपनियों और अन्य नियोक्ताओं से हाथ जोड़ कर अपील की कि अपने कर्मचारियों की तनखाह नहीं काटें। उद्योग के जो भी क्षेत्र मंदी की गिरफ्त में आये उनके लिए तमाम प्रोत्साहन दिये गये। अंतरिक्ष समेत नये-नये क्षेत्रों को

निजी कंपनियों के लिए खोला गया। इसके साथ ही पहली बार 20 लाख करोड़ रुपए का राहत पैकेज जनता के लिए पेश किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नए साल के पहले दिन 6 राज्यों में लाइट हाउस प्रोजेक्ट की नींव रखी। इसके तहत मिडिल क्लास और गरीबों के लिए सस्ते और मजबूत घर बनाए जाएंगे। ग्लोबल हाउसिंग टेक्नोलॉजी चैलेंज-इंडिया के तहत यह योजना अगरतला (त्रिपुरा), रांची (झारखंड), लखनऊ (उत्तर प्रदेश), इंदौर (मध्य प्रदेश), राजकोट (गुजरात) और चेन्नई (तमिलनाडु) में शुरू की गई है। यहां दुनिया की बेहतरीन तकनीक की मदद से हर साल 1000 घर तैयार किए जाएंगे। मोदी ने नए साल की शुभकामनाएं देते हुए 30 मिनट के भाषण में कहा कि यह प्रोजेक्ट प्रकाश स्तंभ की तरह है, जो हाउसिंग को नई दिशा दिखाएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ध्यान सिर्फ भारत में कोरोना की रोकथाम तक ही नहीं रहा बल्कि उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से पहले सार्क देशों की बैठक की



पहल की ताकि पड़ोस में यह महामारी थमे और इससे एकजुटता के साथ लड़ा जा सके। इसके बाद उन्होंने तमाम वैश्विक मंचों की बैठक बुलाने की पहल की और भारत ने दिखाया कि संकट के समय अपना ख्याल रखते हुए पूरी दुनिया की चिंता कैसे की जाती है और दुनिया की मदद कैसे की जाती है।

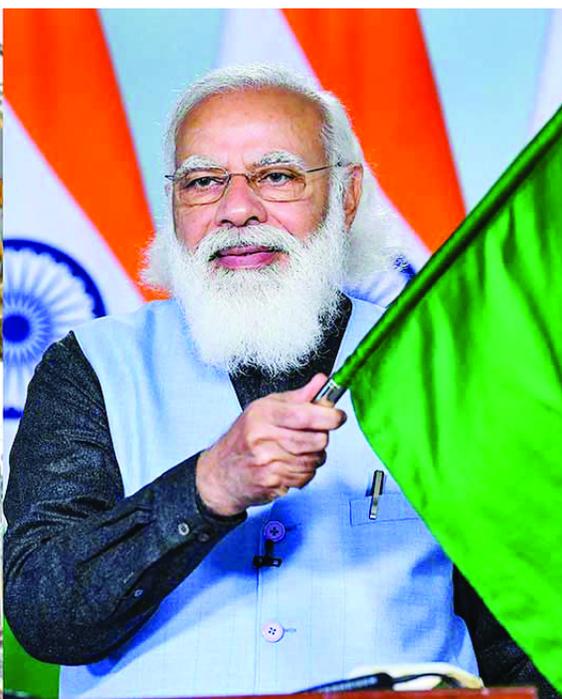
शायद ही किसी प्रधानमंत्री ने अपने कार्यकाल में मुख्यमंत्रियों के साथ इतना संवाद किया होगा जितना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिर्फ एक वर्ष में किया। समय-समय पर मुख्यमंत्रियों के साथ कोरोना की स्थिति पर चर्चा करने के अलावा उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए केंद्र सरकार के हर मंत्रालय को उन्होंने विशेष रूप से सक्रिय किया। यही नहीं प्रधानमंत्री मोदी ने कोरोना के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्र की हस्तियों, मीडिया जगत के लोगों, उद्योगपतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, बॉलीवुड हस्तियों, खेल प्रतिभाओं के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से चर्चा की। जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से कराये गये चुनाव हों या युवाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करने की बात हो, रेहड़ी-पटरी वालों से लेकर बड़े उद्योगों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देने की बात हो... सभी क्षेत्रों में काफी काम किया गया है। साल 2020 में अयोध्या में भव्य राममंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन के साथ ही प्रधानमंत्री ने संसद के नये भवन के निर्माण के लिए भी भूमि पूजन किया। संसद के नये भवन के निर्माण कार्य की राह में भले बाधाएं पैदा करने के प्रयास किये जा रहे हों लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन स्पष्ट है और वह बार-बार स्पष्ट कर चुके हैं कि राजनीति इंतजार कर सकती है लेकिन विकास इंतजार नहीं कर सकता। प्रधानमंत्री ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का जो महासंकल्प भारतीयों को दिलाया है उसमें हर व्यक्ति अपने-अपने स्तर से योगदान दे रहा है।



New Ateli Train



New Kishangarh Train



आत्मनिर्भर भारत के लिए वर्ल्ड लेवल के प्रोडक्ट बनाना जरूरी: पीएम मोदी ग्लोबल बेस्ट को अपने यहां बनाएं आत्मनिर्भर भारत, वोकल फॉर लोकल से लेकर स्वच्छता अभियान तक, जानें मन की बात में क्या-क्या बोले पीएम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेंडियो पर इस साल की आखिरी मन की बात की। मोदी ने कहा कि चार दिन बाद साल बीतने वाला है। इस साल कई चुनौतियां और संकट आए, लेकिन हमने नया सामर्थ्य पैदा किया है। आत्मनिर्भर भारत के लिए वर्ल्ड लेवल के प्रोडक्ट बनाना जरूरी है। मोदी ने मन की बात में नए साल के स्वागत, गुजरते साल की सीख, आत्मनिर्भर भारत, स्वदेशी उत्पाद, वन्यजीव, युवाओं की सोच और कश्मीर के केसर जैसे कई मुद्दों पर बात की।

गुजरते साल की नई सीख

नमो ऐप पर मुंबई के अभिषेक जी ने एक मैसेज पोस्ट किया है। कि 2020 ने जो दिखाया दिया, जो सिखाया, वह कभी सोचा ही नहीं था। ज्यादातर लोगों ने देश के सामर्थ्य की भरपूर तारीफ की है। जब कोरोना के समय लोगों ने ताली-थाली बजाकर हमारे कोरोना वॉरियर्स को सम्मान किया था, उसकी लोगों ने तारीफ की है।

स्वदेशी की मांग बढ़ी

देश में आए संकटों का हमने हिम्मत से सामना किया है। दिल्ली के अभिनव को बच्चों को गिफ्ट देने थे। वे झंडेवाला बाजार गए। अभिनव बताते हैं कि वहां दुकानदार यह बोलकर सामान बेच रहे हैं कि ये खिलौने मेड इन इंडिया हैं। लोग भी भारत में बने खिलौनों को पसंद कर रहे हैं। यह बदलाव एक साल में हुआ है। इस पैमाने को अर्थशास्त्री भी नहीं तौल सकते। विशाखापट्टनम से वेंकट मुरलीप्रसाद जी ने 2021 के लिए एक ऋष्ट बनाया है। ऋष्ट यानी आत्मनिर्भर भारत चार्ट। इसमें सभी चीजों की पूरी लिस्ट है, जिन्हें वे रोज इस्तेमाल करते हैं। वेंकट जी कहते हैं कि हम उन विदेशी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिनके विकल्प भारत में आसानी से उपलब्ध हैं। मैं उन्हीं प्रोडक्ट का इस्तेमाल करूंगा, जिनमें हमारी मेहनत और पसीना लगा हो।

विश्वस्तरीय प्रोडक्ट्स बनाएं

वोकल फॉर लोकल आज घर-घर में गूँज रहा है। ऐसे में अब यह सुनिश्चित करने का समय है कि हमारे प्रोडक्ट्स विश्वस्तरीय हों। जो भी ग्लोबल बेस्ट है, वह हम भारत में बनाकर दिखाएं। इसके लिए हमारे उद्यमी साथियों को आगे



होगा। स्टार्टअप्स को भी आगे बढ़ाना होगा।

तेंदुओं की संख्या में ऐतिहासिक बढ़ोतरी

भारत में लेपर्ड्स यानी तेंदुओं की संख्या में 2014 से 2018 के बीच 60% से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई। 2014 में देश में संख्या करीब 7,900 थी, वहीं 2019 में बढ़कर 12,852 हो गयी। लेपर्ड्स के बारे में जिम कार्बेट ने कहा था, 'जिन्होंने ने तेंदुए स्वच्छंद रूप से घूमते नहीं देखा, वे उसकी खूबसूरती की बयां ही नहीं कर सकते।' तेंदुए की सबसे ज्यादा आबादी वाले राज्यों में मध्यप्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र हैं।

जानवरों के लिए भी संवेदनशीलता दिखाएं

मैंने तमिलनाडु में एक हृदयस्पर्शी प्रयास के बारे में पढ़ा। हम सबने इंसानों के लिए व्हीलचेयर देखी है, लेकिन कोयंबटूर की बेटी गायत्री ने अपने पिताजी के साथ एक पीड़ित डॉग के लिए व्हीलचेयर बना दी। ये तभी हो सकता है, जब व्यक्ति हर जीव के प्रति, दया और करुणा से भरा हुआ हो। उत्तर प्रदेश के कौशांबी की जेल में गायों को ठंड से बचाने के लिए पुराने और फटे कम्बलों से कवर बनाए जा रहे हैं।

मंदिरों के जीर्णोद्धार में जुटे युवा

एक युवा ब्रिगेड ने कर्नाटक में स्थित श्रीरंगपट्टनम के

पास वीरभद्र स्वामी के एक प्राचीन शिव मंदिर का कायाकल्प कर दिया। यहां हर तरफ घास-फूस और झाड़ियां थीं कि लोगों को मंदिर दिखता तक नहीं था। युवाओं की लगन देखकर स्थानीय भी मदद के लिए आगे आए। वीकेड्स में युवाओं ने काम किया और मंदिर के पुराने वैभव को लौटा लाए।

कश्मीर का केसर मशहूर

अकबर के दरबारी अबुल फजल ने कश्मीर यात्रा के बाद कहा था कि कश्मीर के केसर के खेत देखकर चिड़चिड़े और गुस्सेल लोग भी झूम उठेंगे। कश्मीरी केसर मुख्य रूप से पुलवामा, बडगाम और किश्तवाड़ जैसी जगहों पर उगाया जाता है। इसी साल मई में कश्मीरी केसर को जियोग्राफिकल इंडिकेशन यानी तट्टु झड्डू दिया गया। इसके जरिए हम कश्मीरी केसर को एक ग्लोबली पॉपुलर ब्रांड बनाना चाहते हैं।

शहादत न भूलें

देश की हजारों साल पुरानी संस्कृति, सभ्यता, हमारे रीति-रिवाजों को बचाने के लिए कई बलिदान दिए गए। 27 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह जी के बेटों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को दीवार में जिंदा चुनवा दिया गया था। अत्याचारी चाहते थे कि साहिबजादे महान परंपरा की सीख छोड़ दें, लेकिन उन्होंने गजब का साहस दिखाया। दोनों बेटों के सामने मौत मंडरा रही थी, फिर भी वे सिद्धांतों से टस-से-मस नहीं हुए।



किसान आंदोलन: कई वार्ताओं के बाद भी नहीं निकल सका कोई हल

किसानों के द्वारा कृषि कानूनों को लेकर आंदोलन पिछले कई दिनों से चल रहा है अन्नदाता कृषि कानून को वापस लिये जाने पर अड़े हैं तथा इसके लिए केंद्र सरकार पर अनेकों प्रकार से दबाव बना रहे हैं जिसमें देश के कुछ प्रमुख तथाकथित बुद्धिजावियों के साथ लगभग सभी प्रमुख विपक्षी राजनीतिक दल भी भरपूर समर्थन दे रहे हैं कई दौर की बातचीत के बाद भी कोई सार्थक निष्पत्ति या हल नहीं निकल सका है किसान अपनी मांगों को लेकर अड़े हैं और सरकार की तरफ से कई बैठकों के बाद भी किसानों का आंदोलन समाप्त नहीं हो सका है। धरना, बैठक, बातचीत, चेतावनी... अब तक सबकुछ हो चुका है और हो रहा है, मगर समाधान कोई नहीं निकल सका है। किसान सड़कों पर हैं, क्योंकि रास्ता नहीं निकल रहा है। किसानों और सरकार के अब सवाल ये है कि आखिर पेच कहां फंसा कि बात एक नई तारीख तक पहुंच गई और अब इस मसले का हल कैसे होगा? निश्चय ही इन अन्नदाताओं ने अपने निहित स्वार्थों के लिए संपूर्ण देश के बहुसंख्यक सामान्य किसानों को बुरी तरह से भ्रमित करके डरा दिया है क्योंकि इनके लिए राष्ट्रहित का कोई महत्व नहीं है, अन्यथा किसानों के आंदोलन में इन सभी विघटनकारी तत्वों का क्या काम है। वर्तमान कोरोना की विश्वव्यापी महामारी के दौर में देश के प्रधानमंत्री ने जिस सूझ-बूझ का परिचय देते हुए सभी देशवासियों की सुरक्षा एवं उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सारे व्यापक उपाय किए उसकी न केवल देश में बल्कि विश्व स्वास्थ्य संगठन

जैसी वैश्विक संस्था तथा विभिन्न देशों द्वारा कई प्रमुख मंचों पर भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। कोविड-19 के कठिन दौर में भी जब पड़ोसी देश चीन ने अत्यंत



शर्मनाक विश्वासघात करते हुए भारत-चीन सीमा, (एल0ए0सी0) पर देश में अनेक स्थानों पर घुसपैठ करने की कोशिश की, उसका अत्यंत साहसपूर्वक ढंग से सामना करते हुए भारतीय सेना प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में बीजिंग को जिस तरह से मुँहतोड़ जवाब दे रही है उससे चीन बेहद परेशान हो चुका है तथा उसके कारण चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग को न केवल विश्व में बल्कि अपने देश में भी विरोध का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे चिंताजनक परिदृश्य में यद्यपि देश की सर्वोच्च अदालत ने इस कानून पर रोक लगा कर केंद्र सरकार और आंदोलनकारी किसानों के बीच चले आ रहे लंबे टकराव पर विराम लगाने का प्रयास तो किया

है और समाधान निकालने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया है परंतु एक सदस्य द्वारा समिति में शामिल न होने के फैसले से आगे की कार्यवाही प्रभावित हो सकती है और विलंब हो सकता है। केंद्र सरकार तथा आंदोलनकारी किसान नेताओं के बीच कई दौर की वार्ता के बाद भी दोनों पक्षों को स्वीकार्य कोई हल अब तक निकल नहीं सका है। वस्तुतः संपूर्ण घटनाक्रम शाहीन बाग की याद

दिला रहा है। जिस तरह से किसान आंदोलन के नाम पर चंद मुट्ठी भर अमीर से बेहद अमीर किसानों के नेतृत्व में पंजाब तथा हरियाणा के बहुसंख्य किसानों ने न केवल दिल्ली बल्कि आसपास के चतुर्दिक सामान्य जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है, वह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। ये प्रदर्शनकारी या तथाकथित अन्नदाता किसान दिल्ली के समीप सिंधु बॉर्डर पर पिछले पचास दिनों से डेरा डाले बैठे हुए हैं जिससे सामान्य किसानों की रोजी-रोटी पर तो कुठाराघात हो ही रहा है, साथ ही दैनिक मजदूरों और अन्य दिहाड़ी कामगारों को भी अपने जीवकोपार्जन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।



केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा किसानों की मांग पर जरूरी कार्रवाई करने को तैयार आंदोलन में किसान नहीं, मोदी विरोधी लोग हैं शामिल

“

केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर को विश्वास है कि जल्दी सरकार और किसान यूनियनों के बीच फिर से वार्ता होगी और समाधान निकलेगा। तोमर का मानना है कि किसानों के बीच कृत्रिम भय फैलाया जा रहा है जिसे दूर करने का सरकार पूरा प्रयास कर रही है। कृषि कानून में जो ऐक्ट है उसका भाव अभी भी किसानों के हित के अनुरूप है। कुछ मुद्दे थे जिन पर किसानों को शंका थी। उसके निवारण का प्रयास किया है। सरकार का उद्देश्य किसानों को उपज का ज्यादा से ज्यादा मूल्य मिले इसके लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ाने का था। अभी मंडी में लाइसेंसी व्यापारी ही खरीदता था। अब सभी लोग खरीद कर सकते हैं। प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी तो किसानों का कोई ज्यादा लाभ भी मिलेगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार प्रारंभ से ही किसान हितैषी फैसले ले रही है। कृषि सुधारों के लिए नए कानून भी किसानों की भलाई के लिए ही लाए गए हैं। किसान संगठनों ने जो कुछ भी बातें सरकार के समक्ष रखी, सरकार उस पर खुले मन से लगातार चर्चा कर रही है। 5 चरणों की बैठकें हो चुकी हैं, जो बहुत अच्छे माहौल में हुईं व इनमें सकारात्मक-सार्थक वार्ता की गई है। सरकार ने किसान संगठनों से उनकी बातें और स्पष्टता से बताने का आग्रह करते हुए यह जानना चाहा है, कि ऐसे कौन से बिंदु हैं जिससे वह चिंतित हैं और उनके उन बिन्दुओं या प्रावधानों से संबंधित क्या सुझाव हैं? ताकि सभी मसलों को सुलझाया जा सके। दोनों पक्षों में परस्पर भरोसा कायम है, तभी तो इतने दौर की बातचीत हो सकी है। तोमर ने कहा कि कृषि सुधारों के संबंध में स्वामीनाथन समिति जब गठित की गई थी, उसने उसी समय सभी संबंधित पक्षों से राय-मशविरा किया था। और बाद में भी समय-समय पर सरकार ने सलाह और सुझाव लिए हैं। सरकार द्वारा कोई भी कानून संबंधित लोगों की राय और रूख के साथ व्यापक जनहित में ही लाए जाते हैं। नए कानून भी कृषि क्षेत्र में आमूलचूल बदलाव लाने वाले हैं, जिनसे किसानों को फायदा ही फायदा है। सिर्फ अल्पावधि में नहीं, बल्कि लंबी अवधि तक ये कानून किसानों को लाभ पहुंचाएंगे। इनसे किसानों तथा कृषि क्षेत्र का चहुंमुखी विकास होगा। वर्षों से कृषि विशेषज्ञ इन सुधारों के बारे में लिखते आ रहे हैं। यूपीए की तत्कालीन सरकार ने भी इन सुधारों को लागू करना चाहा था, लेकिन किसानों के प्रति प्रतिबद्धता की कमी के कारण वे कदम नहीं उठा पाए। वहीं एमएमएसपी पर श्री तोमर ने कहा

एमएसपी सरकार का प्रशासकीय निर्णय है, जिसके बारे में प्रधानमंत्री जी तथा मेरे द्वारा भी सार्वजनिक तौर पर, संसद में भी स्पष्ट किया जा चुका है कि एमएसपी सतत



जारी रहेगी। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सरकार ने एमएसपी की दरों में लगातार वृद्धि की है और एमएसपी पर सरकारी खरीद पहले की तरह जारी है। यहां मैं आपके साथ एमएसपी से जुड़े कुछ तथ्य साझा करना चाहूंगा। 2013-14 में गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1400 रु. प्रति क्विंटल था, जो कि 2020-21 में बढ़कर 1975 रु. प्रति क्विंटल हो गया है। छह साल में गेहूँ की एमएसपी में 41 फीसदी की वृद्धि की गई, जो अब तक की सर्वाधिक है। इसी तरह विगत 6 वर्षों में धान की एमएसपी में 43 फीसदी की वृद्धि सरकार ने की है। 2013-14 में धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1310 रु. प्रति क्विंटल था जो कि अब बढ़कर 1858 रु. हो गया है। अब यदि इसे आप राशि से समझने का प्रयास करें तो 2013-14 में

तत्कालीन सरकार ने गेहूँ की खरीद पर 33871 करोड़ रुपए खर्च किए जबकि 2019-20 में हमारी सरकार ने गेहूँ की खरीद पर लगभग 62802 करोड़ रुपए खर्च किए

, यानि यूपीए सरकार से 85 प्रतिशत ज्यादा। धान में तो यह राशि 192 फीसदी ज्यादा है। हमने दलहन-तिलहन की खरीद में अप्रत्याशित वृद्धि की है। लागत मूल्य में कम से कम 50 फीसदी मुनाफा जोड़कर एमएसपी घोषित करने की प्रक्रिया भी प्रधानमंत्री मोदी ने ही लागू की है। तोमर ने कहा कि यह भ्रम कुछ राजनीतिक दलों ने फैलाया है, वस्तुस्थिति इससे अलग है। कृषक (सशक्तिकरण व संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार

अधिनियम, 2020 में संविदा खेती के प्रावधान किए गए हैं। इसके पीछे उद्देश्य यही है कि किसान को बुवाई से पहले ही उसकी उपज के लाभकारी मूल्य का आश्वासन मिल जाए और वह व्यापारी के साथ कंट्रैक्ट के माध्यम से उन्नत कृषि की ओर आगे बढ़ सके। इस अधिनियम में स्पष्ट प्रावधान है कि किसान की सिर्फ उपज का करार ही व्यापारी के साथ होगा। जमीन का कोई भी सौदा नहीं होगा। जमीन पर किसान का हक था, है और रहेगा। इस अधिनियम के अंतर्गत किसानों पर किसी प्रकार का पेनाल्टी का भी प्रावधान नहीं है। पंजाब-हरियाणा समेत कई राज्यों में संविदा खेती के कानून हैं, केंद्र सरकार का कानून उनसे बेहतर तरीके से किसानों के हित का संरक्षण करता है।



कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर बोले 'झूठ की दीवार' जल्द गिरेगी, कृषि कानूनों को लेकर जल्द समाधान की उम्मीद

कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि नए कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के बीच झूठ की दीवार को सुनियोजित तरीके से फैलाया गया है, लेकिन यह लंबे समय तक नहीं चलेगा और किसानों का विरोध जल्द ही खत्म हो जाएगा। साथ ही उम्मीद जताई कि गतिरोध का जल्द समाधान ढूँढ लिया जाएगा। एक महीने से अधिक समय से पंजाब, हरियाणा और उत्तरप्रदेश सहित देश के विभिन्न हिस्सों के किसान तीनों नये कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग करते हुए दिल्ली की सीमाओं पर डटे हुए हैं। किसानों ने चेतावनी दी है कि अगर उनकी मांगों नहीं मानी गईं तो वे अपना आंदोलन तेज करेंगे। अभी तक केंद्र और किसान संगठनों के बीच पांच दौर की बातचीत हो चुकी है लेकिन बेनतीजा रही है।

केंद्र द्वारा गतिरोध को समाप्त करने के लिए वार्ता बहाल करने के लगातार आग्रह के बाद किसान संगठनों ने बातचीत के लिए 29 दिसंबर का समय दिया था जिसके जवाब में सरकार ने किसान संगठनों को पत्र लिखकर वार्ता के लिए 30 दिसंबर को बुलाया है। कृषि मंत्री ने कहा कि यूपीए सरकार के दौरान, मनमोहन सिंह जी और शरद पवार कृषि सुधार कानून लाना चाहते थे, लेकिन वे दबाव और प्रभाव को बर्दाश्त नहीं कर सके। हम भाग्यशाली हैं कि आज मोदी जी हमारे पीएम हैं जो देश के विकास और लोगों के कल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से काम करते हैं। कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ ऑफ रूरल इंडिया



(सीएनआरआई) की तरफ से आयोजित डिजिटल कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री ने कहा, "जल्द ही कुछ रास्ता निकलेगा और हम समाधान तक पहुंचेंगे। हर कोई जानता है कि झूठ की दीवार कभी मजबूत नहीं होती। सच्चाई सच्चाई होती है। समय आएगा जब लोग सच्चाई स्वीकार करना शुरू करेंगे।" उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने आंदोलनकारी किसानों के दिलों में "सुनियोजित तरीके से गलतफहमी पैदा कर दी है।" उन्होंने कहा कि नये कृषि कानूनों के लाभ किसानों तक पहुंचने शुरू हो गए हैं। कई किसान इन कानूनों के बारे में "सकारात्मक सोचने" लगे हैं लेकिन किसानों के कुछ धड़े में "भ्रम" बना हुआ है। मुझे उम्मीद है कि हम इन चिंताओं को दूर करने में सफल होंगे।

कामयाबी की वैक्सीन

देशभर में कोरोना के टीकाकरण की शुरुआत हुई। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक पहले दिन 1 लाख 91 हजार 181 लोगों को कोरोना का टीका लगाया गया। वैक्सीन लगने के बाद अस्पताल में भर्ती होने का कोई मामला सामने नहीं आया। पहले चरण में अग्रिम मोर्चा पर तैनात स्वास्थ्य कर्मियों को टीके की पहली खुराक दी गई। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि 3351 सेंटर्स पर सीरम इंस्टीट्यूट की कोविशील्ड और भारत बायोटेक की कोवैक्सीन लगाई गईं। कोविशील्ड सभी राज्यों को दी गईं और कोवैक्सीन 12 राज्यों को दी गईं। पहले दिन टीकाकरण में 16 हजार 755 वैक्सीनेटर्स शामिल हुए। दिल्ली में 3,403 लोगों को कोरोना का टीका लगाया गया।

टीके से भागेगा कोरोना

मोदी बोले- 3 करोड़ लोगों से दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन प्रोग्राम शुरू, दूसरा डोज लगवाना न भूलें

कोरोना टीकाकरण अभियान की शुरुआत करते समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भावुक हो गए। वांड्या कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए देशवासियों से मुखातिब मोदी ने महामारी के शुरुआती दिनों के संघर्ष को याद किया तो उनकी आंखें डबडबा गईं। भरी आंखों से वह उस वक़्त का जिक्र करते रहे जब भारत के



पास कोरोना से लड़ाई का मजबूत इन्फ्राट्रक्चर नहीं था। मोदी ने सुबकते हुए कहा कि कोरोना से हमारी लड़ाई आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की रही है। उन्होंने कहा कि इस मुश्किल लड़ाई से लड़ने के लिए हम अपने आत्मविश्वास को कमजोर नहीं पड़ने देंगे, ये प्रण हर भारतीय में दिखा।

बीते साल की तमाम मुश्किलों-त्रासदियों के बाद



जब कोरोना संक्रमण के खिलाफ टीकाकरण अभियान की शुरुआत हुई तो कई जगह उत्सव जैसा माहौल था। देश के तीन हजार के लगभग केंद्रों पर दो लाख के करीब अग्रिम योद्धाओं को कोविड-19 की वैक्सीन दी गई। कुल मिलाकर कार्यक्रम संतोषजनक रहा और बड़ा नकारात्मक पहलू सामने नहीं आया। निस्संदेह दुनिया के चंद चोटी के देशों में वैक्सीनेशन की शुरुआत हो पायी है। उनमें हमारा

शामिल होना हर भारतीय के लिये गर्व की बात है। इस मायने में भी कि प्रयोग की जा रही दोनों वैक्सीनों का निर्माण भारत में ही हुआ है। दुनिया को साठ फीसदी वैक्सीन की आपूर्ति करने वाले देश में अपनी वैक्सीन पर भरोसा किया जा सकता है। आज तमाम विकासशील और पड़ोसी मुल्क वैक्सीन की उम्मीद को लेकर भारत की ओर देख रहे हैं। निस्संदेह वैक्सीनों को लेकर कुछ लोगों के मन



में शंकायें भी थीं। इसके जहां राजनीतिक कारण हैं वहीं कुछ तथ्यात्मकशंकायें भी हैं। भारत बायोटेक के टीके के अंतिम चरण के परीक्षण परिणामों के सामने न आने की वजह से सवाल उठाये जा रहे हैं। निस्संदेह, इन वैक्सीनों को अनुमति आपातकालीन प्रावधानों के तहत दी गई है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत बायोटेक पिछले 24 सालों से वैक्सीन बना रही है। इसने अब तक 16 वैक्सीन बनायी हैं और दुनिया के 123 देशों को निर्यात किया है। देश की ड्रग कंट्रोलर ने जांच के बाद ही अनुमति दी है। हम यह न भूलें कि भारत अमेरिका के बाद सबसे अधिक संक्रमित होने वाले देशों में था। देश में एक करोड़ से अधिक लोग संक्रमित हुए और डेढ़ लाख लोगों ने अपनी जान गंवाई। ऐसे में देश में निर्मित वैक्सीन का एक साल के भीतर बनना और उसका प्रयोग होना बड़ी उपलब्धि ही कही जायेगी। वहीं कतिपय राजनीतिक दलों के नेता कह रहे हैं कि जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों को पहले टीकाकरण करवाना चाहिए? या ताकि लोगों का इस अभियान में



विश्वास बढ़े। कुछ लोग इसे बड़ा इवेंट मैनेजमेंट बनाने को लेकर सवाल खड़े करते रहे हैं। कुछ राज्यों ने वैक्सीन कार्यक्रम के लिये बनायी गई को-विन ऐप की उपादेयता को लेकर सवाल उठाये, जिससे महाराष्ट्र में टीकाकरण कार्यक्रम प्रभावित हुआ। हालांकि सरकार ने स्पष्ट किया है कि किसी पर टीका लगाने के लिये दबाव नहीं बनाया जायेगा।

इतना जरूर कहा है कि शरीर में एंटीबॉडी विकसित होने के लिये वैक्सीन की दो डोज लेना अनिवार्य होगा। साथ ही किन रोगियों को ये वैक्सीन नहीं लेनी है, इस बाबत दिशा-निर्देश जारी किये गये हैं। इसके साथ ही कुछ समय तक संक्रमण से बचाव के परंपरागत तरीके अपनाने की भी सलाह दी गई है। बहरहाल, महीनों की हताशा और भय के बाद देश में टीकाकरण अभियान का आरंभ होना सुखद ही है। सवा ?अरब से अधिक जनसंख्या का टीकाकरण करना निस्संदेह एक बड़ी चुनौती होगी, लेकिन अच्छी शुरुआत किसी अभियान की सफलता की राह तो निर्धारित करती है।



भारतीय वैक्सीन की ग्लोबल डिमांड

भा रतीय कंपनी भारत बायोटेक की वैक्सीन कोवैक्सिन की दुनिया में डिमांड है। ब्राजीलियन एसोसिएशन ऑफ वैक्सीन क्लीनिकस ने भारत बायोटेक के साथ समझौता किया है। इसके तहत ब्राजील को कोवैक्सिन के 50 लाख डोज दिए जाएंगे। हालांकि, इस पर अंतिम मुहर ब्राजीलियन हेल्थ रेग्युलेटर अन्विंसा की अनुमति के बाद लगेगी। 3 जनवरी को ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया ने ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका की कोवीशील्ड और कोवैक्सिन के आपात इस्तेमाल की मंजूरी दे दी। कोवैक्सिन के तीसरे चरण के ट्रायल चल रहे हैं। इससे पहले ही इसके आपात इस्तेमाल की मंजूरी दी गई। भारत बायोटेक ने अभी यह भी नहीं बताया है कि यह कितनी असरदार है। हां, यह जरूर बताया है कि यह इस्तेमाल के लिए 100% सुरक्षित है। इस बीच दिल्ली डायरेक्टर डॉक्टर रणदीप गुलेरिया ने कहा कि दूसरा डोज लेने के 2 हफ्ते बाद शरीर में एंटीबॉडीज डेवलप होंगी।

कोवैक्सिन और कोवीशील्ड 100% सुरक्षित

लोगों को टीके टीकाकरण कार्यक्रम के तहत लगाए जाएंगे। कंपनियों से कहा गया है- 'तीसरे चरण के ट्रायल पूरा कर रिपोर्ट सौंपें, ताकि स्थायी लाइसेंस पर फैसला हो सके।' छष्टतट्ट ने कहा कि दोनों टीके से सामान्य या मामूली साइड इफेक्ट हैं। जैसे- हल्का बुखार, एलर्जी आदि हैं। लेकिन दोनों ही टीके 100% सुरक्षित हैं। टीके से नपुंसक होने जैसी बातें निराधार हैं। संभव है जिस राज्य में कोवीशील्ड की खेप भेजी जाएगी, वहां कोवैक्सिन न भेजी जाए। इससे टीकाकरण के दौरान किसी तरह की असमंजस की स्थिति नहीं बनेगी। इसके लिए दो-तीन दिन में स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसिजर तय हो जाएंगे। मंजूर किए गए दोनों टीको की दो-दो डोज लगेगी, जुलाई तक 30 करोड़ लोगों को टीका देने का लक्ष्य है। महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव ने बताया, 'यह टीका पूरी तरह सुरक्षित है। वायरस में अब तक जितने बदलाव हुए हैं यह सब पर काम करेगा। कितना प्रभावी है, यह अभी स्पष्ट नहीं। जानवरों पर हुए अध्ययन में यह पूरा प्रभावी रहा। पहले और दूसरे फेज में 800 लोगों को टीका दिया गया, उनमें से किसी को भी कोरोना नहीं हुआ। तीसरे फेज में जिन 22 हजार लोगों को टीका दिया गया, उनमें अब तक साइड इफेक्ट नहीं दिखा है। आखिरी नतीजे आने बाकी हैं।' सीएम इस्टीमेट्स ऑफ इंडिया के छष्टह अदार पूनावाला ने बताया, 'अभी हम टीका सिर्फ सरकार को देंगे। जब हमारे पास स्थायी लाइसेंस होगा, तब हम निर्यात भी कर सकते हैं, इसमें कोई परेशानी नहीं।' ट्रायल में कोवीशील्ड का वॉलेंटियर्स को पहले हाफ फिर फुल



पहले चरण में केवल 3 करोड़ को फ्री में लगेगी

पूरे देश में कोरोना वैक्सीन का ड्राई रन चल रहा है। इस बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा है कि पूरे देश में कोरोना की वैक्सीन फ्री में मिलेगी। साथ ही स्वास्थ्य मंत्री ने लोगों से अपील की है और कहा है कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें। देशभर में कोरोना वैक्सीन का ड्राई रन चल रहा है। पहले चार राज्यों में इसे किया गया था। शनिवार को दिल्ली में चल रहे ड्राई रन का स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने जीटीबी अस्पताल जाकर जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि देश को टीकाकरण का अनुभव है और ये वैक्सीन जनता की सुरक्षा के लिए है, इसे लेकर कोई गलतफहमी न रखें। पहले चरण में देश भर के एक करोड़ हेल्थ केयर वर्कर्स और दो करोड़ फ्रंटलाइन वर्कर्स को कोरोना की फ्री वैक्सीन दी जाएगी। उसके बाद जुलाई तक अन्य 27 करोड़ जरूरी लोगों को टीका लगाए जाने को लेकर रणनीति तय की जाएगी पत्रकारों से बातचीत में हर्षवर्धन ने



डोज दिया गया। हाफ डोज 90% असरदार रहा। एक माह बाद फुल डोज दिया गया। जब दोनों फुल डोज दिए गए तो असर 62% रह गया। दोनों ही तरह के डोज में औसत प्रभावशीलता 70% रहेगी। स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार कोवीशील्ड के करीब 7.5 करोड़ और कोवैक्सिन के

कहा, 'मैं लोगों से किसी भी अफवाहों पर विश्वास न करने की अपील करना चाहता हूँ। टीके की सुरक्षा के बारे में कोई अफवाहें नहीं होनी चाहिए। सब कुछ विस्तार से जांच के बाद किया गया है। शुरू में जब पोलियो वैक्सीन की तैयारी की गई थी तो तब भी अफवाहों का बाजार गर्म था। आगे उन्होंने कहा कि जब इसे धरातल पर लाया गया तो सभी लोगों को इसकी सुरक्षा के बारे में आश्वासन दिया गया। टीका परीक्षण को लेकर हमारे मुख्य मानदंड सुरक्षा और प्रभावकारिता हैं और कुछ भी समझौता नहीं किया जाएगा।

करीब 1 करोड़ डोज तैयार हैं। दृष्टिकोण महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव ने कहा कि अभी दुनिया में वयस्कों को ही टीका लग रहा है। बाद में 18 साल से कम उम्र वालों पर रिसर्च होगी, नतीजे आने पर इस आयु वर्ग के लोगों को टीका देने पर फैसला होगा।

भारतीय वैज्ञानिक दुनिया में किसी से भी कम नहीं

“

हमारे टीकों को ना केवल विश्व स्वास्थ्य संगठन से मान्यता प्राप्त और विश्वसनीय माना जाता है अपितु दुनिया के देशों में इन टीकों की गुणवत्ता पर पूरा भरोसा है। याद कीजिये कोरोना के शुरुआती दौर में अमेरिका ने किस तरह से हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन के लिए दबाव बनाया। आज दुनिया के देशों में बच्चों को जितने प्रकार के टीके लगाए जाते हैं उनमें भारत द्वारा निर्मित टीकों का ही बोलबाला है। एक जमाने में टिटनेस जैसी जानलेवा बीमारी से बचाने के लिए टिटनेस का टीका तैयार कर सामने आये पूना के सीरम इंस्टीट्यूट ने पोलियो जैसी बीमारी से निजात दिलाने के लिए दो बूंद के नाम से ख्यातनाम पोलियो की पीने की खुराक तक बना कर दुनिया को बता दिया कि अनुसंधान के क्षेत्र में हम दुनिया से दो कदम आगे ही हैं।



देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि कोरोना महामारी से निजात के लिए सरकार द्वारा दो-दो वैक्सीनों को अनुमति के बावजूद हमारी वैक्सीनों को हम ही संदेह के कठघरे में खड़े करने में सबसे आगे हैं। एक साथ दो वैक्सीनों के आपात उपयोग के लिए अनुमति देने वाला भारत दुनिया का पहला देश है। कल तक अमेरिका, सोवियत रूस व अन्य देशों की ओर वैक्सीनों की आस लगाए दुनिया के देशों को सबसे अधिक विश्वास भारतीय वैक्सीनों पर ही रहा है। यही कारण है कि दुनिया के अनेक देश जल्दी से जल्दी भारतीय वैक्सीनों की सप्लाई शुरू करने का दबाव बना रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन तक ने भारतीय कोविड वैक्सीनों को आपात उपयोग की अनुमति की सराहना की है वहीं ब्रिटेन सहित चार देशों ने आपात उपयोग के लिए भारतीय वैक्सीन को मान्यता दे दी है। दुनिया के देशों से बड़े आर्डर मिलने वाले हैं। ब्राजील तो जल्दी से जल्दी सप्लाई का दबाव बना रहा है। हालांकि चार हजार अरब से अधिक के सालाना कारोबार की संभावना को देखते हुए भारतीय वैक्सीन निर्माता दोनों कंपनियों के बीच अंदरखाने प्रतिस्पर्धा चल रही है जिसका परिणाम सामने है। फिर भी भारतीय वैज्ञानिकों ने एक बार फिर दुनिया के देशों को दिखा दिया है कि स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में वह दुनिया के देशों में किसी से भी कम नहीं हैं। आज हालात यह हैं कि कोरोना महामारी से दुनिया को निजात दिलाने के लिए देश में एक-दो नहीं बल्कि नौ कोरोना टीकों के

अनुसंधान में हमारे वैज्ञानिक पुरजोर ताकत के साथ लगे हुए हैं।

दरअसल हम आलोचना के नाम पर हम इस हद तक पहुंच जाते हैं कि देश के हित-अनहित को ही भूल बैठते हैं। हम भूल जाते हैं कि दुनिया के देशों में आज भी भारतीय टीकों का डंका बजता है। हम भूल जाते हैं कि दुनिया के विकसित देशों से लेकर विकासशील और अविकसित देशों में भारतीय वैक्सीनों ही नहीं बल्कि दवाओं तक का जादू चलता है। आज हम हमारे देश में हमारी जैनेरिक दवाओं को वो स्थान नहीं दिला पाए जो दुनिया के देशों में भारत द्वारा निर्मित जैनेरिक दवाओं को मिला हुआ है। बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि अमेरिका, यूरोपीय देशों सहित दुनिया के देशों की कुल मांग की 20 फीसदी से भी अधिक आपूर्ति भारतीय जैनेरिक दवा निर्यातक कंपनियां कर रही हैं। इस पर देश को गर्व होना चाहिए कि दुनिया के 60 फीसदी बच्चों को लगने वाली वैक्सीन भारत और भारत में भी सीरम की वैक्सीन ही लग रही है। दुनिया के करीब 170 देशों में डेढ़ अरब टीकों की खुराक हमारा सीरम इंस्टीट्यूट ही कर रहा है। यह सब इसलिए है कि हमारे टीकों को ना केवल विश्व स्वास्थ्य संगठन से मान्यता प्राप्त और विश्वसनीय माना जाता है अपितु दुनिया के देशों में इन टीकों की गुणवत्ता पर पूरा भरोसा है। याद कीजिए कोरोना के शुरुआती दौर में अमेरिका सहित दुनिया के देशों ने किस तरह से हमारे देश द्वारा निर्मित और मलेरिया के लिए अतिविश्वसनीय दवा हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन को उपलब्ध कराने का दबाव बनाया और फिर भारत द्वारा अमेरिका को दवा उपलब्ध कराने के कारण आलोचना का शिकार भी होना पड़ा। खैर आलोचना-प्रत्यालोचना अलग बात है पर हमें

इसका गर्व होना चाहिए कि अमेरिका जैसे देश को कोरोना के हालातों में हमारी हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन पर विश्वास जताना पड़ा। सीरम ने टिटनेस के बाद सांप काटने के ईलाज के लिए एंटीडोट्स उतारा। कोविशील्ड के पहले पोलियो वैक्सीन के साथ ही डिप्थिरिया, पर्ट्युसिस, एचआईवी, बीसीजी, आर-हेपेटाइटिस बी, खसरा, मम्स, रुबेला जैसे टीकों का निर्माण और निर्यात हो रहा है। 1967 में टिटनेस के टीके के उत्पादन से शुरू हुई इस कंपनी ने 2004 में दुनिया का पहला तरल एचडीसी रैबिज तरल टीका उतारा तो स्वाईन फ्लू का टीका भी उतारा जा चुका है। आज दुनिया के देशों के



बच्चों के जो जीवनदायी टीके लगाए जा रहे हैं उनमें 60 फीसदी भागीदारी हमारे टीकों की है। यह हमारी गुणवत्ता और विश्वसनीयता की पहचान है। ऐसे में कोरोना के विश्वव्यापी संकट के दौर में हमारे स्वदेशी टीकों की ओर दुनिया टकटकी लगाए हुए है। हमारे वैज्ञानिकों के प्रयास से वो दिन दूर नहीं जब कोविशील्ड और कोवैक्सिन का डंका भी दुनिया भर में बजेगा। आज जिस तरह से दुनिया भारतीय वैज्ञानिकों की ओर आशा भरी नजरों से देख रही है उससे आने वाला समय भी हमारा ही होगा और इसके लिए हमें हमारे वैज्ञानिकों के अनुसंधान की ना केवल सराहना करनी चाहिए अपितु हमें इस सफलता पर गौरवान्वित भी महसूस करना चाहिए।



राष्ट्र मंदिर के रूप में भी जाना जायेगा अयोध्या राम मंदिर

“

पूज्य भगवान श्रीराम हमें सदैव ही मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में दिखाई देते रहे हैं। पूरे विश्व में भारतीय नागरिकों को प्रभु श्रीराम के वंशज के रूप में जानने के कारण, आज दुनियाभर में हर भारतीय की यही पहचान भी बन गयी है। लगभग हर भारतीय न केवल ऋग्वेद कुटुंबकमऋ, अर्थात् इस धरा पर निवास करने वाला हर प्राणी हमारा परिवार है, के सिद्धांत में विश्वास करता है बल्कि आज लगभग हर भारतीय बहुत बड़ी हद तक अपने धर्म सम्बंधी मर्यादाओं का पालन करते हुए भी दिखाई दे रहा है। भारत में भगवान श्रीराम धर्म एवं मर्यादाओं के पालन करने के मामले में मूर्तिमंत स्वरूप माने जाते हैं। इस प्रकार वे भारत की आत्मा हैं।

भा रत में सनातन धर्म का गौरवशाली इतिहास पूरे विश्व में सबसे पुराना माना जाता है। कहते हैं कि लगभग 14,000 विक्रम सम्वत् पूर्व भगवान नील वराह ने अवतार लिया था। नील वराह काल के बाद आदि वराह काल और फिर श्वेत वराह काल हुए। इस काल में भगवान वराह ने धरती पर से जल को हटाया और उसे इंसानों के रहने लायक बनाया था। उसके बाद ब्रह्मा ने इंसानों की जाति का विस्तार किया और शिव ने सम्पूर्ण धरती पर धर्म और न्याय का राज्य कायम किया। सभ्यता की शुरुआत यहीं से मानी जाती है। सनातन धर्म की यह कहानी वराह कल्प से ही शुरू होती है। जबकि इससे पहले का इतिहास भी भारतीय पुराणों में दर्ज है जिसे मुख्य 5 कल्पों के माध्यम से बताया गया है। यदि भारत के इतने प्राचीन एवं महान सनातन धर्म के इतिहास पर नज़र डालते हैं तो पता चलता है कि हिन्दू संस्कृति एवं सनातन वैदिक ज्ञान वैश्विक आधुनिक विज्ञान का आधार रहा है। इसे कई उदाहरणों के माध्यम से, हिन्दू मान्यताओं एवं धार्मिक ग्रंथों का हवाला देते हुए, समथ-समथ

पर सिद्ध किया जा चुका है। सनातन वैदिक ज्ञान इतना विकसित था, जिसके मूल का उपयोग कर आज के आधुनिक विज्ञान के नाम पर पश्चिमी देशों द्वारा वैश्विक स्तर पर फैलाया



गया है। दरअसल, सैकड़ों सालों के आक्रमणों और गुलामी ने हमें सिर्फ राजनीतिक रूप से ही गुलाम नहीं बनाया बल्कि मानसिक रूप से भी हम गुलामी की जंजीरों में जकड़े गए। अंग्रेजों के शासन ने हमें हमारी ही संस्कृति के प्रति हीन भावना से भर दिया। जबकि हमारे ही ज्ञान का प्रयोग कर वे संसार भर में विजयी होते रहे और नाम कमाते रहे। अब



जूरत है कि हम अपनी इस सांस्कृतिक धरोहर को जानें और इस पर गर्व करना भी सीखें।

इसी क्रम में पूरे विश्व में निवास कर रहे हिन्दू सनातन धर्म के अनुयायियों के लिए हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जिनके नाम से आज विश्व में भारत की पहचान होती है, का एक भव्य मंदिर भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में बनाया जाना शाश्वत प्रेरणा के साथ-साथ एक आवश्यकता भी माना जाना चाहिए। चूंकि बाबर एवं मीर बाक्री नामक आक्रांताओं ने भगवान श्रीराम के मंदिर का विध्वंस कर उस स्थान पर एक मस्जिद का निर्माण कर लिया था अतः पुनः इस स्थान को मुक्त कराने हेतु प्रभु श्रीराम के भक्तों को 492 वर्षों तक लम्बा संघर्ष करना पड़ा है। अतीत के 76 संघर्षों में 4 लाख से अधिक रामभक्तों ने बलिदान दिया है एवं लगभग 36 वर्षों के सुसूत्र श्रृंखलाबद्ध अभियानों के फलस्वरूप सम्पूर्ण समाज ने लिंग, जाति, वर्ग, भाषा, सम्प्रदाय, क्षेत्र आदि भेदों से ऊपर उठकर एकात्मभाव से श्रीराम मंदिर के लिए अप्रतिम त्याग और बलिदान किया है। अंततः उक्त बलिदानों के परिणामस्वरूप 9 नवम्बर 1989 को श्रीराम जन्मभूमि पर अनुसूचित समाज के बन्धु श्री कामेश्वर चौपाल ने पूज्य संतों की उपस्थिति में शिलान्यास सम्पन्न किया था। परंतु, प्रभु श्रीराम का भव्य मंदिर निर्माण करने हेतु जमीन के स्वामित्व सम्बंधी कानूनी लड़ाई अभी भी खत्म नहीं हुई थी। इस प्रकार आस्था का यह विषय न्यायालयों की लम्बी प्रक्रिया (सत्र न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय तक) में भी फंस गया था। अंत में, पौराणिक-साक्ष्यों, पुरातात्विक-उत्खनन, राडार तरंगों की फोटो प्रणाली तथा ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर उच्चतम न्यायालय की 5 सदस्यीय पीठ ने 9 नवम्बर 2019 को सर्व सम्मति से एकमत होकर निर्णय देते हुए कहा =यह 14000 वर्गफीट भूमि श्रीराम लला की है।= इस प्रकार सत्य की प्रतिष्ठा हुई, तथ्यों और प्रमाणों के साथ श्रद्धा, आस्था और विश्वास की विजय हुई। तत्पश्चात्, भारत सरकार ने 5 फरवरी 2020 को

=श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र= नाम से न्यास का गठन कर अधिग्रहीत 70 एकड़ भूमि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र को सौंप दी। तदुपरांत 25 मार्च, 2020 को श्री राम लला तिरपाल के मन्दिर से अपने अस्थायी नवीन काष्ठ मंदिर में विराजमान हुए।

अंततः 5 अगस्त 2020 को सदियों के स्वप्न-संकल्प सिद्धि का वह अलौकिक मुहूर्त उपस्थित हुआ। जब पूज्य महंत नृत्य गोपाल दास जी सहित देश भर की विभिन्न आध्यात्मिक धाराओं के प्रतिनिधि पूज्य आचार्यों, संतों, एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के पावन सानिध्य में भारत के जनप्रिय एवं यशस्वी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भूमि पूजन कर मंदिर निर्माण का सूत्रपात किया। इस शुभ मुहूर्त में देश के 3000 से भी अधिक पवित्र नदियों एवं तीर्थों का जल, विभिन्न जाति, जन जाति, श्रद्धा केंद्रों तथा

बलिदानी कार सेवकों के घर से लायी गई रज (मिट्टी) ने सम्पूर्ण भारत वर्ष को आध्यात्मिक रूप से भूमि पूजन= में उपस्थित कर दिया था।

भारत में पूज्य संतों ने यह भी आह्वान किया है कि श्रीराम जन्म भूमि में भव्य मंदिर बनने के साथ-साथ जन-जन के हृदय मंदिर में श्रीराम एवं उनके नीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा हो। श्रीराम 14 वर्षों तक नंगे पैर वन वन घूमे, समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। उन्होंने वंचित, उपेक्षित समझे जाने वाले लोगों को आत्मीयता से गले लगाया, अपनत्व की अनुभूति कराई, सभी से मित्रता की। जटायु को भी पिता का सम्मान दिया। नारी की उच्च गरिमा को पुनर्स्थापित किया। असुरों का विनाश कर आतंकवाद का समूल नाश किया। राम राज्य में परस्पर प्रेम, सद्भाव, मैत्री, करुणा, दया, ममता, समता, बंधुत्व, आरोग्य, त्रिविधताप विहीन, सर्वसमृद्धि पूर्ण जीवन सर्वत्र था। अतः हम सभी भारतीयों को मिलकर पुनः अपने दृढ़ संकल्प एवं सामूहिक पुरुषार्थ से पुनः एक बार ऐसा ही भारत बनाना है।

विशेष रूप से आज जब पूरे विश्व में आतंकवाद अपने पैर पसार रहा है एवं जब विकसित देशों में भौतिकवादी विकास सम्बंधी मॉडल के दुष्परिणाम, लगातार बढ़ रही मानसिक बीमारियों के रूप में दिखाई देने लगे हैं, ऐसे में पूरा विश्व ही आज भारत की तरफ आशा भरी नज़रों से देख रहा है कि ऐसे माहौल में केवल भारतीय संस्कृति ही विश्व को आतंकवाद से मुक्ति दिलाने में सहायक होगी एवं भारतीय आध्यात्मवाद के सहारे मानसिक बीमारियों से मुक्ति भी सम्भव हो सकेगी। इसी कारण से आज विशेष रूप से विकसित देशों यथा, जापान, रूस, अमेरिका, दक्षिणी कोरिया, फ्रान्स, जर्मनी, इंग्लैंड, कनाडा, इंडोनेशिया आदि अन्य देशों की ऐसी कई महान हस्तियां हैं जो भारतीय सनातन धर्म की ओर रुचि लेकर, इसे अपनाने की ओर लगातार आगे बढ़ रही हैं।



मंदी के दौर में भी निर्मला बनीं ताकतवर फोर्ब्स की 100 शक्तिशाली महिलाओं की लिस्ट में शामिल

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, अमेरिका की नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति कमला हैरिस, बायांकॉन की संस्थापक किरण मजूमदार शॉ और एचसीएल इंटरप्राइज की सीईओ रोशनी नडार मल्होत्रा दुनिया की सर्वाधिक 100 शक्तिशाली महिलाओं की फोर्ब्स की सूची में शामिल की गई हैं। इस सूची में लगातार दसवें साल जर्मनी की चांसलर एंजेला मर्केल शीर्ष पर हैं। 17वीं वार्षिक 'फोर्ब्स पावर लिस्ट' में 30 देशों की महिलाएं शामिल हैं। फोर्ब्स ने कहा, "इसमें दस देशों की प्रमुख, 38 सीईओ और पांच मनोरंजन क्षेत्र से जुड़ी महिलाएं हैं। भले ही वे उम्र, राष्ट्रियता और अलग-अलग पेशे से हों मगर 2020 की चुनौतियों का सामना करने के लिए उन्होंने अपने मंचों का इस्तेमाल एक तरीके से किया।" सीतारमण सूची में 41वें स्थान पर हैं, नडार मल्होत्रा 55वें स्थान पर हैं और मजूमदार शॉ 68वें नंबर पर हैं। लैडमार्क समूह की प्रमुख रेणुका जगतियानी को सूची में 98वां स्थान दिया गया है। मर्केल लगातार दसवें वर्ष पहले स्थान पर कायम हैं। फोर्ब्स ने कहा, "मर्केल यूरोप की प्रमुख नेता हैं और जर्मनी को वित्तीय संकट से उबारकर क्षेत्र की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का नेतृत्व कर रही हैं। डोनाल्ड ट्रंप का विरोध कर जर्मनी में दस लाख से अधिक शरणार्थियों को रहने अनुमति देने वाली मर्केल का नेतृत्व बेहद मजबूत रहा है। सबसे बड़ा सवाल है कि लोग अब पूछ रहे हैं कि मर्केल का कार्यकाल समाप्त होने के बाद उनकी जगह कौन लेगा।" अमेरिका की नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति हैरिस पहली अश्वेत महिला हैं जो इस पद पर पहुंची हैं और सूची में वह तीसरे स्थान पर हैं। न्यूजीलैंड की प्रधानमंत्री जेसिंडा आर्डन सूची में दूसरे स्थान पर हैं जिन्होंने कड़े लॉकडाउन और पृथक-वास नियमों को लागू कर अपने देश को कोरोना वायरस की पहली एवं दूसरी लहर से बचाया। फोर्ब्स ने बताया कि ताईवान की राष्ट्रपति साई इंग वेन 37वें स्थान पर हैं जिन्होंने जनवरी में कोरोना वायरस के मरीजों के संपर्क में आए लोगों का पता लगाने का कठिन कार्यक्रम लागू किया। इसके परिणामस्वरूप आज तक 2.3 करोड़ की आबादी वाले प्रायद्वीप में केवल सात लोगों की जान गई है। इस वर्ष की सूची में 17 नए लोगों के नाम शामिल हैं जो दर्शाता है कि "वैश्विक महामारी से बदले समाज के हर पहलुओं पर महिलाएं" अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी



यूनाइटेड पार्सल सर्विस केरोल टोम की नई सीईओ को 11वां स्थान हासिल हुआ है और कैलिफोर्निया के क्लोरोक्स लिंडा रेंडले की प्रमुख को 87वां स्थान मिला है जो आवश्यक सेवाएं मुहैया कराने में सहयोग कर रही हैं ताकि अमेरिका के लोग एक-दूसरे से जुड़े रहें और स्वच्छता के साथ रहें। सीवीएस हेल्थ की कार्यकारी उपाध्यक्ष और भावी सीईओ करेन लिंच 38वें स्थान पर हैं। वह कोविड-19 जांच कार्यक्रम वाली दवा कंपनियों की शक्तिशाली महिलाओं में पहले स्थान पर हैं जो 2021 में कोरोना वायरस के

टीकों के प्रबंधन का महत्वपूर्ण कार्यभार देखेगी। सूची में बिल और मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन की सह-अध्यक्ष मिलिंडा गेट्स (पांचवां स्थान), अमेरिकी सदन की स्पीकर नैसी पेलेसी (सातवां स्थान), फेसबुक की मुख्य संचालन अधिकारी शेरिल सैंडबर्ग (22वां), बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना (39वां), ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय (46वां), मशहूर कलाकार रिहाना (69वां) और बेयोंसे (72वां स्थान) भी शामिल हैं।



कोरोना में गणतंत्र दिवस: 26 जनवरी की परेड में 5 गुना कम दर्शक होंगे

परेड राजपथ से मार्च करती हुई लालकिला पर खत्म होती थी। इस बार इंडिया गेट के नेशनल स्टेडियम पर ही इसे खत्म कर दिया जाएगा। (फाइल फोटो) कोरोनाकाल में देश 2021 के गणतंत्र दिवस को अलग तरीके से मनाएगा। इस बार विजय चौक से राजपथ पर निकलने वाली मुख्य परेड बेहद सीमित रहेगी। परेड का आयोजन करने वाले रक्षा मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि अमूमन परेड देखने के लिए सवा लाख लोग आते हैं। कोरोना के चलते इस बार सिर्फ 25 हजार लोगों को ही आने दिया जाएगा। परेड से लेकर दर्शक दीर्घा और झड़झड़की संख्या में भारी कमी की जाएगी। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। यह 6वां मौका है जब गणतंत्र दिवस पर ब्रिटेन के मुख्य अतिथि मौजूद रहेंगे। सूत्रों ने बताया कि गणतंत्र दिवस समारोह में भीड़ नियंत्रित करने के लिए टिकटों की बिक्री और विशेष अतिथि पास की संख्या बेहद कम कर दी गई है।

काउंटर से सिर्फ 4500 टिकटों की बिक्री

इस बार सिर्फ 4 काउंटरों से गणतंत्र दिवस कार्यक्रम के टिकट बिकेंगे। कुल 4500 से अधिक टिकट नहीं



बचे जाएंगे। 2020 की गणतंत्र दिवस की परेड में 32 हजार टिकटों की बिक्री हुई थी। दिल्ली में 8 तरह के केंद्रों से टिकट बिक्री हुई थी। मीडियाकर्मियों और उनके परिजन के लिए 5000 से ज्यादा पास जारी होते हैं, लेकिन इस बार सिर्फ 300 पास दिए गए हैं।

झाकियों की संख्या में कटौती नहीं

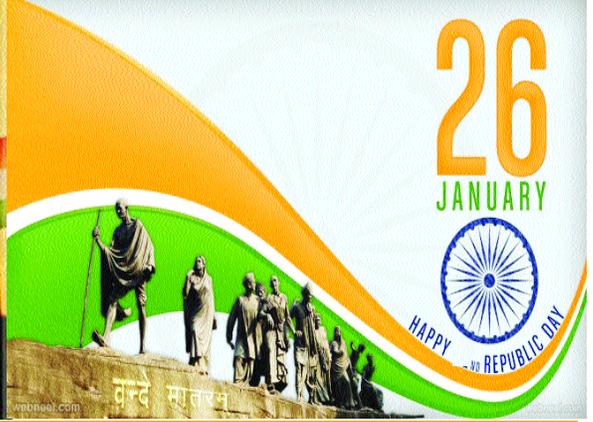
परेड में निकलने वाली झाकियों में कटौती नहीं

की गई है। इस बार 16 राज्यों और 6 केंद्रीय विभागों की झाकियां परेड में शामिल होंगी। लेकिन, सेना और अर्धसैनिक बलों की मार्चिंग टुकड़ियों में जवानों की संख्या भी कम रहेगी। इस बार सिर्फ चार स्कूलों की दो डांस टोलियां को इजाजत दी गई है। पिछली परेड में 8 स्कूलों की भागीदारी

थी।

परेड नेशनल स्टेडियम तक ही होगी

गणतंत्र दिवस की परेड राजपथ से मार्च करती हुई लालकिला पर खत्म होती थी। इस बार इंडिया गेट के नेशनल स्टेडियम पर ही इसे खत्म कर दिया जाएगा। यानी परेड का रास्ता 8 से घटा कर 3 किलोमीटर कर दिया गया है।



क्या हैं गणतंत्र के सही मायने



देशभक्तों की गाथाओं से भारतीय इतिहास के पृष्ठ भरे हुए हैं। देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों की संख्या में भारत माता के वीर सपूतों ने, भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। ऐसे ही महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के परिणाम स्वरूप हमारा देश, गणतान्त्रिक देश हो सका। 26 जनवरी, 1950 भारतीय इतिहास में इसलिये भी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारत का संविधान, इसी दिन अस्तित्व में आया और भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। भारत का संविधान लिखित एवं सबसे बड़ा संविधान है। संविधान निर्माण की प्रक्रिया में 2 वर्ष, 11 महिना, 18 दिन लगे थे। भारतीय संविधान के वास्तुकार, भारत रत्न से अलंकृत डॉ. भीमराव अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विश्व के अनेक संविधानों के अच्छे लक्षणों को अपने संविधान में आत्मसात करने का प्रयास किया है। इस दिन भारत एक सम्पूर्ण गणतान्त्रिक देश बन गया। देश को गौरवशाली गणतन्त्र राष्ट्र बनाने में जिन देशभक्तों ने अपना बलिदान दिया उन्हें याद करके, भावांजली देने का पर्व है, 26 जनवरी।

गणतन्त्र का अर्थ है, जनता के द्वारा जनता के लिये शासन। इस व्यवस्था को हम सभी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। वैसे तो भारत में सभी पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं, परन्तु गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। इस पर्व का महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है क्योंकि इसे सभी जाति एवं वर्ग के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं। गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी को ही क्यों मनाते हैं? मित्रों, जब अंग्रेज सरकार की मंशा भारत को एक स्वतंत्र उपनिवेश बनाने की नजर नहीं आ रही थी, तभी 26 जनवरी 1929 के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू जी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने पूर्णस्वराज्य की शपथ ली। पूर्ण स्वराज के अभियान को पूरा करने के लिये सभी आंदोलन तेज कर दिये गये थे। सभी देशभक्तों ने अपने-अपने तरीके से आजादी के लिये कर्म कस ली थी। एकता में बल है, की भावना को चरितार्थ करती विचारधारा में अंग्रेजों को पिछे हटना पड़ा। अंतोगत्वा 1947 को भारत आजाद हुआ, तभी यह निर्णय लिया गया कि 26 जनवरी 1929 की निर्णायक तिथी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनायेंगे। 26 जनवरी, 1950 भारतीय इतिहास में इसलिये भी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारत का संविधान, इसी दिन अस्तित्व में आया और भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। भारत का संविधान लिखित एवं सबसे बड़ा संविधान है। संविधान निर्माण की प्रक्रिया में 2 वर्ष, 11 महिना, 18 दिन लगे थे। भारतीय संविधान के वास्तुकार, भारत रत्न से अलंकृत डॉ. भीमराव अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विश्व के अनेक संविधानों के अच्छे लक्षणों को अपने संविधान में आत्मसात करने का प्रयास किया है। इस दिन भारत एक सम्पूर्ण गणतान्त्रिक देश बन गया। देश को गौरवशाली गणतन्त्र राष्ट्र बनाने में जिन देशभक्तों ने अपना बलिदान दिया उन्हें याद करके, भावांजली देने

का पर्व है, 26 जनवरी।

अतः 26 जनवरी को उन सभी देशभक्तों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व भारतवर्ष के कोने-कोने में बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती है। भारत की राजधानी दिल्ली समेत

प्रत्येक राज्य तथा विदेशों के भारतीय राजदूतावासों में भी यह त्योहार उल्लास व गर्व से मनाया जाता है। 26 जनवरी का मुख्य समारोह भारत की राजधानी दिल्ली में भव्यता के साथ मनाते हैं। देश के विभिन्न भागों से असंख्य व्यक्ति इस समारोह की शोभा देखने के लिये आते हैं। हमारे सुरक्षा प्रहरी परेड निकाल कर, अपनी आधुनिक सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हैं तथा सुरक्षा में सक्षम हैं, इस बात का हमें विश्वास दिलाते हैं। परेड विजय चौक से प्रारम्भ होकर राजपथ एवं दिल्ली के अनेक क्षेत्रों से गुजरती हुयी लाल किले पर जाकर समाप्त हो जाती है।

परेड शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री 'अमर जवान ज्योति' पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

राष्ट्रपति अपने अंगरक्षकों के साथ 14 घोड़ों की बग्घी में बैठकर इंडिया गेट पर आते हैं, जहाँ प्रधानमंत्री उनका स्वागत करते हैं। राष्ट्रीय ध्वज के साथ ध्वजारोहण करते हैं, उन्हें 21 तोपों की सलामी दी जाती है, हवाई जहाजों द्वारा पुष्पवर्षा की जाती है। आकाश में तिरंगे गुब्बारे और सफेद कबूतर छोड़े जाते हैं। जल, थल, वायु तीनों सेनाओं की टुकड़ियां, बैंडो की धुनों पर मार्च करती हैं। 26 जनवरी का पर्व देशभक्तों के त्याग, तपस्या और बलिदान की अमर कहानी समेटे हुए है। प्रत्येक भारतीय को अपने देश की आजादी प्यारी थी। भारत की भूमि पर पग-पग में उत्सर्ग और शौर्य का इतिहास अंकित है। किसी ने सच ही कहा है- कण-कण में सोया शहीद, पत्थर-पत्थर इतिहास है। ऐसे ही अनेक देशभक्तों की शहादत का परिणाम है, हमारा गणतान्त्रिक देश भारत। 26 जनवरी का पावन पर्व आज भी हर दिल में राष्ट्रीय भावना की मशाल को प्रज्वलित कर रहा है। लहराता हुआ तिरंगा रोम-रोम में जोश का संचार कर रहा है, चहुँओर खुशियों की सौगात है। हम सब मिलकर उन सभी अमर बलिदानियों को अपनी भावांजली से नमन करें, वंदन करें।



जलवायु परिवर्तन में तेजी से सुधार लाएँगे भारत की ओर से किये जा रहे प्रयास

देश में हर मकान के लिए वर्षा के जल का संग्रहण आवश्यक कर देना चाहिए ताकि पृथ्वी के जल को रीचार्ज किया जा सके। हर घर में नवीकरण ऊर्जा का उपयोग आवश्यक कर देना चाहिए, ताकि इन घरों को आवश्यक रूप से सौर ऊर्जा उत्पादन करना पड़े। जलवायु परिवर्तन में सुधार हेतु भारत तेजी से सौर ऊर्जा एवं वायु ऊर्जा की क्षमता विकसित कर रहा है। उच्चवला योजना एवं एलईडी बल्ब योजना के माध्यम से तो भारत पूरे विश्व को ऊर्जा की दक्षता का पाठ सिखा रहा है। ई-मोबिलिटी के माध्यम से वाहन उद्योग को गैस मुक्त बनाया जा रहा है। बायो इंधन के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है, पेट्रोल एवं डीजल में ईथनॉल को मिलाया जा रहा है। 15 करोड़ से अधिक परिवारों को कुकिंग गैस उपलब्ध करा दी गई है। भारत द्वारा प्रारम्भ किए गए अंतरराष्ट्रीय सौर अलायंस के 80 से अधिक देश सदस्य बन चुके हैं। वैश्विक तापमान के प्रभाव को कुछ हद तक कम करने के उद्देश्य से भारत ने पहले तय किया था कि देश में 175 तड़ु नवीकरण ऊर्जा की स्थापना की जायगी। इस लक्ष्य को हासिल करने की ओर भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। अब भारत ने अपने लिए देश में नवीकरण ऊर्जा की स्थापना के लिए एक नया लक्ष्य, अर्थात् 450 तड़ु निर्धारित किया है।

देश में बढ़ते मरुस्थलीकरण को रोकने के उद्देश्य से, भारत ने वर्ष 2030 तक 2.10 करोड़ हेक्टेयर ज़मीन को उपजाऊ बनाने के लक्ष्य को बढ़ाकर 2.60 करोड़ हेक्टेयर कर दिया है। साथ ही भारत ने मरुस्थलीकरण को बढ़ने से रोकने के लिए वर्ष 2015 एवं 2017 के बीच देश में पेड़ एवं जंगल के दायरे में 8 लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी की है। केंद्र सरकार की एक बहुत ही अच्छी पहल पर अभी तक 27 करोड़ से अधिक मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड किसानों को जारी किए जा चुके हैं। इसमें मिट्टी की जांच में पता लगाया जाता है कि किस पोषक तत्व की ज़रूरत है एवं उसी हिसाब से खाद का उपयोग किसान द्वारा किया जाता है। पोषक तत्वों का संतुलित उपयोग करने से न केवल ज़मीन की उत्पादकता बढ़ती है बल्कि उर्वरकों का उपयोग भी कम होता है। शहरों का विकास व्यवस्थित रूप से करने के उद्देश्य से देश में अब मकानों का लंबवत निर्माण किये जाने पर बल दिया जा रहा है, ताकि हरियाली के क्षेत्र को बढ़ाया जा सके। स्मार्ट शहर विकसित किए जा रहे हैं। शहरों में यातायात के दबाव को कम करने के उद्देश्य से विभिन्न मार्गों के बाई-पास बनाए जा रहे हैं। क्षेत्रीय दूरत-गति के रेलवे यातायात की व्यवस्था की जा रही है ताकि महानगरों पर जनसंख्या के दबाव को कम किया जा सके। इस रेलवे ट्रैक के आसपास समावेशी एवं मिश्रित रूप से विकसित शहरों

का विकास किया जा रहा है, ताकि इन शहरों में रहने वाले नागरिकों को इनके घरों के आसपास ही सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। देश के विभिन्न महानगरों में मेट्रो रेल का जाल बिछाया जा चुका है एवं कई महानगरों में विस्तार का काम बढ़ी तेजी से चल रहा है। देश में 100 स्मार्ट नगर बनाए जा रहे हैं। इन शहरों में नागरिकों



के लिए पैदल चलने एवं सायकिल चलाने हेतु अलग मार्ग की व्यवस्थाएं की जा रही हैं एवं इन नागरिकों को पब्लिक ट्रांसपोर्ट के अधिक से अधिक उपयोग हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है।

2 अक्टूबर 2019 से देश में प्लास्टिक छोड़ो अभियान की शुरुआत हो चुकी है ताकि वर्ष 2022 तक देश सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त हो जाये। जो सिंगल यूज प्लास्टिक रीसायकल नहीं किया जा सकता उसका इस्तेमाल सीमेंट और सड़क बनाने के काम में किया जा सकता है। जल शक्ति अभियान की शुरुआत दिनांक 1 जुलाई 2019 से जल शक्ति मंत्रालय द्वारा कर दी गई है। यह अभियान देश में स्वच्छ भारत अभियान की तर्ज पर जन भागीदारी के साथ चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत बारिश के पानी का संग्रहण, जल संरक्षण एवं पानी के प्रबंधन आदि कार्यों पर ध्यान दिया जा रहा है। देश में हर मकान के लिए वर्षा के जल का संग्रहण आवश्यक कर देना चाहिए ताकि पृथ्वी के जल को रीचार्ज किया जा सके। हर घर में नवीकरण ऊर्जा का उपयोग आवश्यक कर देना चाहिए, ताकि इन घरों को आवश्यक रूप से सौर ऊर्जा उत्पादन करना पड़े। समस्त कालोनियों एवं मकानों के आसपास पेड़ों का लगाया जाना आवश्यक कर देना चाहिए। देश में खाली पड़ी पूरी

ज़मीन को ग्रीन बेल्ट में बदल दिया जाना चाहिए। देश में 25 प्रतिशत प्रदूषण, यातायात वाहनों से फैलता है, अतः देशवासियों को यातायात वाहनों में नवीकरण ऊर्जा के उपयोग हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। इससे वातावरण में कार्बन डाई आक्साइड कम होगी एवं ऑक्सिजन की मात्रा बढ़ेगी।

प्रति बूंद अधिक पैदावार के सपने को साकार करने के लिए फव्वारा सिंचाई एवं बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति को देश में बढ़े स्तर पर अपनाया जाना चाहिए। खोई हुई उर्वरा शक्ति को हासिल करने हेतु पेड़ों और बड़ी झाड़ियों को खेतों का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। दो खेतों के बीच में ज़मीन खुली न छोड़ें, इससे पोषक तत्वों का नुकसान होता है। खाली ज़मीन पर कुछ अन्य पेड़ लगाएं। ज़मीन का उपयोग लगातार करते रहें। मिश्रित खेती करें। जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ऐसी फसलों जिन्हें लेने में पानी की अधिक आवश्यकता पड़ती है, जैसे गन्ना, अंगूर आदि को देश के उन भागों में स्थानांतरित कर देना चाहिए जहां हर वर्ष अधिक वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति निर्मित हो जाती है। देश की विभिन्न नदियों को जोड़ने के प्रयास भी प्रारम्भ किए जाने चाहिए जिससे देश के एक भाग में बाढ़ एवं दूसरे भाग में सूखे की स्थिति से भी निपटा जा सके। भूजल के अत्यधिक बेदरती से उपयोग पर भी रोक लगानी होगी ताकि भूजल के तेज़ी से कम हो रहे भंडारण को बनाए रखा जा सके। प्राथमिक शिक्षा स्तर पर पानी की बचत एवं संरक्षण आदि विषयों पर विशेष अध्याय जोड़े जाने चाहिए। प्लास्टिक के उपयोग को सीमित करने के लिए हमें कुछ आदतें अपने आप में विकसित करनी होंगी।



अत्याधुनिक
तकनीकी
सुविधाओं से
युक्त होगा

नया संसद भवन

सुप्रीम कोर्ट द्वारा 'सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट' को हरी झंडी दिए जाने के बाद नई संसद के निर्माण का रास्ता साफ हो गया है। हालांकि केवल शिलान्यास के लिए अदालत की मंजूरी के बाद 10 दिसम्बर 2020 को संसद की नई इमारत का शिलान्यास कर दिया गया था लेकिन उसके बाद से नए भवन का निर्माण रूका हुआ था। चूंकि तीन मंजिला नई संसद के निर्माण का मामला सर्वोच्च न्यायालय में लंबित था, इसलिए सभी की नजरें अदालत के फैसले पर टिकी थी। दरअसल केन्द्र सरकार के इस सेंट्रल विस्टा ड्रीम प्रोजेक्ट को कई याचिकाकर्ताओं ने यह कहते हुए अदालत में चुनौती दी थी कि बगैर उचित कानून पारित किए सरकार द्वारा इस परियोजना को शुरू किया गया और इसके लिए पर्यावरणीय मंजूरी लेने की प्रक्रिया में भी कई खामियां हैं। याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि संसद और उसके आसपास की ऐतिहासिक इमारतों को इस परियोजना से नुकसान पहुंचने की आशंका है और हजारों करोड़ रुपये की यह योजना केवल सरकारी धन की बर्बादी ही है। वर्ष 2026 में देश में लोकसभा सीटों के परिसीमन का कार्य होना है, जिसके बाद लोकसभा और राज्यसभा की सीटें बढ़ जाएंगी। परिसीमन का कार्य होने के बाद लोकसभा में सांसदों की संख्या 545 से बढ़कर 700 से ज्यादा हो सकती है। इसी प्रकार राज्यसभा की सीटें भी बढ़ सकती हैं। सर्वोच्च न्यायालय की हरी झंडी मिलने के बाद अब बहुत जल्द सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के तहत नए संसद परिसर का निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा और उम्मीद है कि नया संसद भवन अक्टूबर 2022 तक बनकर तैयार हो जाएगा, जिसके बाद संसद का पुराना भवन प्राचीन धरोहर का हिस्सा बन जाएगा और इसका इस्तेमाल संसदीय आयोजनों के लिए किया जाएगा। संसद की नई इमारत का कार्य करीब 22 माह की अवधि में पूरा होने का अनुमान है और संभावना है कि नवम्बर 2022 से नई संसद में ही लोकसभा तथा राज्यसभा के सत्रों का आयोजन होगा। लोकसभाध्यक्ष ओम बिड़ला के मुताबिक नई इमारत बनाने के लिए परिसर के अंदर ही 8822 वर्ग मीटर खाली जगह उपलब्ध है, ऐसे में नया भवन बनाने के लिए बाहर के किसी भवन को गिराए जाने का कोई प्रस्ताव नहीं है। नया संसद भवन वर्तमान

संसद भवन के पास ही बनना प्रस्तावित है, जो पुरानी इमारत से करीब 17 हजार वर्गमीटर ज्यादा बड़ा होगा और इसके निर्माण कार्य पर करीब 971 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। 64500 वर्गमीटर क्षेत्र में बनने वाले नए संसद भवन में एक बेसमेंट सहित तीन फ्लोर होंगे और इसकी ऊंचाई संसद के मौजूदा भवन के बराबर ही होगी। अदालत ने प्रोजेक्ट को चुनौती देती याचिकाओं पर 5



नवंबर को फैसला सुरक्षित रखा था, साथ ही कहा था कि अदालत इस दलील को खारिज करती है कि सेंट्रल विस्टा में कोई नया निर्माण नहीं हो सकता। अदालत का कहना था कि विचार इस पहलू पर किया जाएगा कि क्या प्रोजेक्ट के लिए सभी कानूनी जरूरतों का पालन किया गया है। अब 5 जनवरी को देश की सर्वोच्च अदालत के तीन जजों की बेंच के 2-1 के बहुमत के फैसले के साथ ही नए संसद भवन के निर्माण को सुप्रीम कोर्ट की मंजूरी मिल गई है। न्यायमूर्ति खानविलकर और न्यायमूर्ति माहेश्वरी ने बहुमत में फैसला सुनाया जबकि अल्पमत के फैसले में न्यायमूर्ति संजीव खन्ना ने 'लैंड यूज' बदलने की प्रक्रिया को कानूनन गलत बताया। अदालत ने अपने फैसले में निर्देश दिया है कि संसद के नए भवन के निर्माण से पहले हेरिटेज कमेटी की मंजूरी ली जाए और निर्माण के दौरान प्रदूषण रोकने के लिए स्मॉग टावर लगाए जाएं। वर्ष 2026 में देश में लोकसभा सीटों के परिसीमन का कार्य होना है, जिसके बाद लोकसभा और

राज्यसभा की सीटें बढ़ जाएंगी। परिसीमन का कार्य होने के बाद लोकसभा में सांसदों की संख्या 545 से बढ़कर 700 से ज्यादा हो सकती है। इसी प्रकार राज्यसभा की सीटें भी बढ़ सकती हैं। मौजूदा लोकसभा में इतने सांसदों के बैठने की व्यवस्था किया जाना असंभव है, ऐसे में समझा जा सकता है कि भविष्य की इन जरूरतों को पूरा करने के लिए नया संसद भवन कितना जरूरी है। संसद की नई इमारत

में राज्यसभा का आकार पहले के मुकाबले बढ़ेगा तथा लोकसभा का आकार भी मौजूदा से तीन गुना ज्यादा होगा। नए संसद परिसर में 888 सीट वाली लोकसभा, 384 सीट वाली राज्यसभा और 1224 सीट वाला सेंट्रल हॉल बनाया जाएगा। ऐसे में संसद की संयुक्त बैठक के दौरान सांसदों को अलग से कुर्सी लगाकर बैठाने की जरूरत खत्म हो जाएगी। अभी प्रधानमंत्री और उपराष्ट्रपति के निवास स्थान राष्ट्रपति भवन से दूर हैं लेकिन नए प्रोजेक्ट में इनके नए निवास भी राष्ट्रपति भवन के नजदीक ही बनाए जाएंगे। मौजूदा संसद भवन में सांसदों की जरूरतों के हिसाब से व्यवस्थाएं नहीं हैं, न ही संसद भवन में उनके कार्यालय हैं। नई संसद में प्रत्येक सांसद को कार्यालय के लिए 40 वर्ग मीटर स्थान उपलब्ध कराया जाएगा और हर ऑफिस सभी आधुनिक डिजिटल तकनीकों से लैस होगा। नई संसद में सांसदों के कार्यालयों को पेपरलेस ऑफिस बनाने के लिए नवीनतम डिजिटल इंटरफेस से लैस किया जाएगा और इन दफ्तरों को अंडरग्राउंड टनल से जोड़ा जाएगा। सदन में प्रत्येक बेंच पर दो सदस्य बैठ सकेंगे और हर सीट डिजिटल प्रणाली तथा टचस्क्रीन से सुसज्जित होगी। नए भवन में कॉन्स्टीट्यूशन हॉल, सांसद लॉज, लाइब्रेरी, कमेटी रूम, भोजनालय और पार्किंग की व्यवस्था होगी और भवन में करीब 1400 सांसदों के बैठने की व्यवस्था की जाएगी।



एयर इंडिया की ऐतिहासिक उड़ान : महिला कू मेंबर्स सैन फ्रांसिस्को से बेंगलुरु नॉनस्टॉप फ्लाइट लेकर आईं

महिला पायलटों ने रचा इतिहास

“

वैसे तो हमारे पौराणिक शास्त्रों में जिस तरह अनेक देवियों, उनके जीवन, उनके कार्यकलापों, अदम्य साहस तथा उनके वैभव का उल्लेख किया जाता उससे तो यही प्रतीत होता है कि महिलायें हमेशा से ही निर्माक, निरर, साहसी तथा पुरुषों की ही तरह सब कुछ कर गुजरने की क्षमता रखने वाली रही हैं। अन्याया आज उन देवियों की पूजा हरगिज न हो रही होती। हमारे इतिहास में भी गार्गी, सावित्री बाई फुले, रानी लक्ष्मी बाई, रजिया सुल्तान, बेगम हजरत महल से लेकर डॉ लक्ष्मी सहगल व इंदिरा गाँधी तक ऐसी अनेक महिलाओं ने अपनी बुद्धि व कौशल का प्रदर्शन कर बार बार यह साबित किया है कि महिलायें किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। बल्कि वास्तविकता तो यह है कि यदि महिलाओं को पूरी स्वतंत्रता, सुरक्षा व सुविधायें मुहैया कराई जायें तो कई क्षेत्रों में तो यह पुरुषों से भी बेहतर भूमिका अदा कर सकती हैं।



यदि हम विज्ञान व तकनीक के ही क्षेत्र की बात करें तो जिस दौर में नेता जी सुभाष चंद्र बोस आज़ाद हिन्द फ़ौज के माध्यम से स्वाधीनता की लड़ाई में व्यस्त थे उस समय दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जब जापानी सेना ने सिंगापुर में ब्रिटिश सेना पर हमला किया उसी दौरान डॉ लक्ष्मी सहगल सुभाष चंद्र बोस की आज़ाद हिंद फ़ौज में शामिल हो गई थीं। वे उस समय

न केवल आज़ाद हिन्द फ़ौज की निर्धारित वर्दी पहनती थीं बल्कि स्वतंत्रता सेनानियों के लिए चलाए जाने वाले रेडियो प्रसारण का जिम्मा भी बड़े ही गुप्त रूप से निभाती थीं। गोया तकनीकी क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपना परचम हमेशा लहराया है। लक्ष्मी सहगल से लेकर वर्तमान दौर की कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स तक ने यह साबित किया है कि यदि हमें अवसर मिले



तो हर उस चुनौती को स्वीकार किया जा सकता है जिसपर पुरुष अपना एकाधिकार समझता है।

पिछले दिनों एक बार फिर भारतीय महिला पायलट्स के एक दल ने बेहद चुनौतीपूर्ण उड़ान पूरी कर यह साबित किया है कि हमें कमजोर समझने वालों की बुद्धि भले ही कमजोर हो परन्तु महिलायें किसी भी क्षेत्र में अक्षम या कमजोर हरगिज़ नहीं। गत 9 जनवरी को एयर इण्डिया की उड़ान संख्या ए आई-176 ने वन्दे भारत मिशन के तहत सैन फ्रांसिस्को से केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बंगलौर के लिये अपनी पहली उड़ान उड़ान भरी। नार्थ पोल जैसे चुनौती पूर्ण वायु मार्ग से गुजरने वाली लगभग 16000 किलोमीटर लंबी इस उड़ान की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि इसे उड़ाने वाले पूरे पायलट दल में केवल महिलायें ही थीं। कैप्टन ज़ोया अग्रवाल के नेतृत्व में इस विमान को उड़ाने में कैप्टन पापागरी तनमई कैप्टन शिवानी तथा कैप्टन आकांक्षा सोनवरे सहयोग कर रही थीं। नार्थ पोल जैसे हवाई मार्ग से उड़ान भरने के परिणाम स्वरूप लगभग दस टन ईंधन भी बचाया जा सका। भारतीय विमानन इतिहास का यह पहला अवसर है जबकि इतने लंबे व खतरनाक व चुनौतीपूर्ण रास्ते से होकर इतनी लंबी दूरी की कोई फ्लाइट केवल महिला पायलट्स द्वारा उड़ाई गयी हो। बेशक पूरे देश को इन भारतीय महिला पायलट्स पर गर्व करना चाहिए। महिलाओं की इस अभूतपूर्व उपलब्धि के बाद एक बार फिर यह बहस ज़िंदा हो गयी है कि वह पुरुष प्रधान समाज जो अपने पुरुषत्व के झूठे नशे में कभी इतना चूर था कि विधवा महिलाओं को उनके पति की जलती चिता पर बिठा दिया करता था वही पुरुष समाज आज भी महिलाओं को अपने से कमतर, दूसरे दर्जे का, अल्पबुद्धि तथा अनेकानेक क्षेत्रों में अक्षम क्यों समझता है? यहाँ तक की समाज को धर्म के नाम पर विभाजित करने व धरती को मानव रक्तर्जित

देखकर स्वयं को विजेता समझने वाले विध्वंसक प्रवृत्ति का पुरुष समाज तो महिलाओं को केवल परदे व घूँघट में रखने का पात्र तथा बच्चा पैदा करने का माध्यम मात्र ही समझते हैं। महिलाओं की रक्षा पर प्रवचन देने वाले अनेकानेक नेता व धर्मगुरु आदि तो महिलाओं को केवल अपना बिस्तर गर्म करने या बलात्कार का पात्र ही समझते हैं। आज भी जब देश में कहीं बलात्कार या सामूहिक बलात्कार जैसे घटनायें होती हैं तो किसी न किसी विशिष्ट परन्तु मंद बुद्धि नेता का महिलाओं को ही दिया जाने वाला यह उपदेश जरूर सुनाई दे जाता है कि महिलायें देर रात घरों से बाहर न निकलें, अपनी सुरक्षा का स्वयं ध्यान रखें। गोया महिला को ही उसके साथ होने वाले किसी भी हादसे का जिम्मेदार ठहरा दिया जाता है। भारतीय महिलाओं के वास्तविक साहस को यदि आज भी देखना व समझना है तो न केवल एयर इण्डिया की यह चारों पायलट्स के सहस को देखा जा सकता है बल्कि

दिल्ली की सीमा पर चल रहे किसान आंदोलन में उन महिलाओं की भागीदारी को भी देखा जा सकता है जो स्वयं ट्रैक्टर चला कर सैकड़ों किलोमीटर का सफ़र तय कर आंदोलन में शिरकत कर रही हैं। उन सैकड़ों आंदोलनकारी महिलाओं को भी देखा जा सकता है जो धरने पर बैठे किसानों के लिए लंगर बनाने हेतु पूरे समर्पण से काम कर रही हैं। यदि महिलाओं के साहस व हिम्मत को देखना हो तो हरियाणा पंजाब के खेतों में काम करते हुए व मशीनों चलाते हुए तथा बिहार, बंगाल, उड़ीसा, महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में बाजारों में विभिन्न व्यवसाय करती महिलाओं से भी सबक लिया जा सकता है। बात तो सिर्फ़ अवसर मिलने की है और पुरुष प्रधान समाज द्वारा महिलाओं पर भरोसा व विश्वास कर उन्हें अवसर दिए जाने की। बेशक यदि अवसर मिले तो- महिलायें क्या कुछ न कर दिखायें।

पिछले दिनों एक बार फिर भारतीय महिला पायलट्स के एक दल ने बेहद चुनौतीपूर्ण उड़ान पूरी कर यह साबित किया है कि हमें कमजोर समझने वालों की बुद्धि भले ही कमजोर हो परन्तु महिलायें किसी भी क्षेत्र में अक्षम या कमजोर हरगिज़ नहीं। गत 9 जनवरी को एयर इण्डिया की उड़ान संख्या ए आई-176 ने वन्दे भारत मिशन के तहत सैन फ्रांसिस्को से केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बंगलौर के लिये अपनी पहली उड़ान उड़ान भरी। नार्थ पोल जैसे चुनौती पूर्ण वायु मार्ग से गुजरने वाली लगभग 16000 किलोमीटर लंबी इस उड़ान की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि इसे उड़ाने वाले पूरे पायलट दल में केवल महिलायें ही थीं।



पांच राज्यों में 30 फीसदी से ज्यादा महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार कोरोना काल में बढ़ गई घटनाएं



देश के 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में किए गए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के मुताबिक, पांच राज्यों की 30 फीसदी से अधिक महिलाएं अपने पति द्वारा शारीरिक और यौन हिंसा की शिकार हुई हैं। एनएफएचएस के मुताबिक, महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के मामलों में सबसे बुरा हाल कर्नाटक, असम, मिजोरम, तेलंगाना और बिहार में है। सामाजिक कार्यकर्ताओं और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) ने कोविड-19 महामारी के मद्देनजर ऐसी घटनाओं में वृद्धि की आशंका जताई है।

इस सर्वेक्षण में देश भर के 6.1 लाख घरों को शामिल किया गया। इसमें साक्षात्कार के जरिए आबादी, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और पोषण संबंधी मानकों के संबंध में सूचनाएं इकट्ठा की गईं। एनएफएचएस-5 सर्वेक्षण के मुताबिक, कर्नाटक में 18 से 49 आयु वर्ग की करीब 44.4 फीसदी महिलाओं को अपने पति द्वारा घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ा है। जबकि 2015-2016 के सर्वेक्षण के दौरान राज्य में ऐसी महिलाओं की संख्या करीब 20.6 फीसदी थी। एनएफएचएस के सर्वेक्षण के आंकड़ों के मुताबिक, बिहार में तकरीबन 40 फीसदी महिलाओं को उनके पति द्वारा शारीरिक और यौन हिंसा झेलनी पड़ी। वहीं मणिपुर में 39 फीसदी, तेलंगाना में 36.9 फीसदी, असम में 32 फीसदी और आंध्र प्रदेश में 30 फीसदी

महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार हुईं। इस सर्वेक्षण में सात राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में पिछले एनएफएचएस सर्वेक्षण की तुलना में घरेलू हिंसा के मामलों में वृद्धि दर्ज की गई। इनमें असम, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, सिक्किम, जम्मू और कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं। इसके अलावा नौ राज्यों और केंद्र शासित में 18 से 29 वर्ष आयु की लड़कियों और

महिलाओं के उत्पीड़न के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। इनका कहना था कि उन्हें 18 साल की उम्र तक यौन हिंसा का सामना करना पड़ा। इनमें असम, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा, मेघालय, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, जम्मू और कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं।

घरेलू हिंसा के खिलाफ सख्ती जरूरी

इस बीच, सामाजिक कार्यकर्ताओं और एनजीओ ने घरेलू हिंसा के मामलों में वृद्धि के लिए कम साक्षरता दर और शराब का सेवन समेत अन्य कारणों को जिम्मेदार ठहराया है। जनस्वास्थ्य विशेषज्ञ पूनम मुतरेजा ने कहा कि बड़े राज्यों में महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के मामलों की संख्या में वृद्धि चिंता का विषय है, क्योंकि यह सभी क्षेत्रों में प्रचलित हिंसा की संस्कृति को दर्शाता है। महिला अधिकार कार्यकर्ता शमीना शफीक ने कहा कि सरकार को घरेलू हिंसा को लेकर सख्ती से पेश आने की जरूरत है। इस साल कोरोनावायरस के प्रसार ने घरेलू हिंसा की घटनाओं में खासी वृद्धि की है। पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया की सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ और कार्यकारी निदेशक पूनम मुतरेजा ने कहा कि भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को घरेलू हिंसा को एक सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता के रूप में देखना चाहिए और तत्काल आधार पर इसका जवाब देना चाहिए। हमें केवल सबूतों को देखकर प्रतिक्रिया देने के अलावा अब इस संबंध में कार्य करने की



प्रदेश में बेटी बचाओ अभियान को नए सिरे से चलाया जाएगा :शिवराज

मु ख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रदेश में बेटी बचाओ अभियान को नए सिरे से चलाया जाएगा। इसके अंतर्गत बच्चियों के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा, सुरक्षा तथा सशक्तीकरण हर पहलू पर ध्यान दिया जाएगा। मध्यप्रदेश की पोषण नीति तैयार है, जिसे शीघ्र ही अंतिम रूप दिया जाएगा।



मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जिसने गंभीर कुपोषित बच्चों का एकीकृत प्रबंधन कार्यक्रम राज्य में लागू किया है। हम कुपोषण को पूरी तरह समाप्त करेंगे। हमारा ध्येय है पोषित परिवार-सुपोषित मध्यप्रदेश। मुख्यमंत्री श्री चौहान मंत्रालय में महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैस, प्रमुख सचिव श्री अशोक शाह और प्रमुख सचिव श्री मनोज गोविल उपस्थित थे।

बच्चों का कुपोषण दूर करने के सघन प्रयास

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में बच्चों का कुपोषण दूर करने के लिए सघन प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत उनका नियमित रूप से वजन लिए जाना, पोषण आहार प्रदाय, सामान्य कुपोषित बच्चों का समुदाय स्तर पर उपचार एवं पोषण प्रबंधन, अतिरिक्त पोषण आहार प्रदाय, गंभीर कुपोषित बच्चों का पोषण पुनर्वास केन्द्रों पर उपचार एवं देखभाल आदि कार्य किए जा रहे हैं। पोषण सेवाओं की मॉनीटरिंग के लिए श्पोषण डैशबोर्ड तैयार किया गया है।

पोषण स्तर में सुधार होने पर प्रोत्साहन

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि श्पोषित परिवार-सुपोषित मध्यप्रदेश कार्यक्रम के अंतर्गत गंभीर कुपोषण वाले बच्चों के पोषण स्तर में सुधार होने पर परिवार को प्रोत्साहन राशि दी जाती है तथा सम्मान किया जाता है। प्रदेश की 62 हजार 500 आंगनवाड़ी केन्द्रों में पोषण वाटिका बनाई जा रही है।



पूरी ताकत से रोकेंगे महिला अपराध

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश में अपराधियों पर अंकुश लगाने का कार्य पूरी ताकत से किया जाएगा। आम लोगों को कानून के राज का एहसास करवाया जाएगा। गत 08 माह में अपराधियों के विरुद्ध की जा रही सख्त कार्यवाही का परिणाम है कि विभिन्न तरह के अपराधों में 15 से लेकर 50 प्रतिशत तक की कमी आयी है। बालिकाओं और महिलाओं से जुड़े अपराधों में लिंग लोग नरपिशाच हैं। उन्हें किसी भी स्थिति में न छोड़ा जाए। बलात्कारियों को तो फाँसी ही मिलना चाहिए। प्रदेश में गुप्त बालिकाओं के संबंध में विस्तार से समीक्षा की गई है। अपहृत बच्चे की बरामदगी के लिए चैकलिस्ट के अनुसार कार्यवाही होगी। परिजनों को एक रिकार्ड पत्र दिया जाएगा जिसमें पुलिस द्वारा की जा रही विवेचना का विस्तृत विवरण होगा। अधिकार पत्र में जानकारी रहेगी कि कितने दिनों में क्या-क्या कार्यवाही की गई है। इस व्यवस्था में अब अपहृत होने वाले बच्चे के परिजन के साथ प्रत्येक 15 दिन में थाना प्रभारी और प्रत्येक 30 दिन में एसडीओपी केस डायरी के साथ बैठेंगे। इसमें यह सुनिश्चित किया जाएगा कि अधिकार पत्र के अनुसार कार्यवाही हुई है अथवा नहीं। मुख्यमंत्री श्री चौहान मिंटो हॉल में प्रदेश-स्तरीय सम्मान अभियान का शुभारंभ कर रहे थे। इस अभियान का उद्देश्य महिला अपराध के उन्मूलन में समाज की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना, महिलाओं और बालिकाओं के लिए सम्मानजनक एवं अनुकूल वातावरण तैयार करना और आम लोगों को कानूनी प्रावधानों के प्रति इस तरह जागरूक करना है कि वे महिला सुरक्षा

के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभा सकें। कार्यक्रम में गृह विभाग के साथ ही अभियान में सहयोगी महिला एवं बाल विकास और जनसंपर्क विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रदेश के 6 साहसी



नागरिकों को उनके जिलों के कलेक्टर, एस.पी. के माध्यम से प्रशंसा पत्र भी प्रदान किए। इन नागरिकों द्वारा विभिन्न अपराधियों को पकड़वाने में भूमिका निभाई गई। गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री चौहान के नेतृत्व में प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति को मजबूत बनाया गया है। अब महिला अपराधों में कमी आ रही है। पंचायतों, नगरीय निकायों, शिक्षण संस्थानों और पुलिस बल में महिलाओं की भागीदारी से उनकी शक्ति बढ़ी है। विकृत मानसिकता वाले लोगों के विरुद्ध निरंतर कदम उठाए जा रहे हैं। हमारी संस्कृति नारियों के सम्मान को प्रमुखता देती है। महिलाओं के सम्मान को आंच पहुंचाने वाले बख्शे नहीं जाएंगे।

ऊर्जा हानियों का स्तर कम किया जाए : ऊर्जा मंत्री तोमर

मध्यप्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत उपभोक्ताओं को जागरूक करने के लिए संदेश देते हुए कहा है कि ऊर्जा हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। ऊर्जा ने विभिन्न रूपों में हमारी जीवन-शैली में महत्वपूर्ण



स्थान बना लिया है आधिकारिक जानकारी में तोमर ने कहा कि इन विभिन्न रूपों में बिजली ऊर्जा का वह प्रकार है, जो सबको सुगमता से हर कहीं उपलब्ध और सुलभ है। यही कारण है कि ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों को भी बिजली के रूप में बदलकर उसका उपयोग प्रकाश, यातायात, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, कृषि जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के साथ मनोरंजन, दूरसंचार एवं पर्यटन जैसे सुख-साधन में भी किया जा रहा है। यह संदेश जारी किया है। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि वैश्वीकरण के दौर में हमारी जीवन-शैली में तेजी से बदलाव हो रहा है। उदाहरण के रूप

में जो काम हम दिन के उजाले में सरलता से कर सकते हैं उन्हें भी हम देर रात तक बिजली की व्यवस्था करके करते हैं। और तो और हम अपने कार्यालयों में बड़े-बड़े पर्दे लगाकर प्राकृतिक प्रकाश में काम करने के बजाए बिजली का उपयोग प्रकाश के लिए कर रहे हैं। हमारी दिनचर्या इस प्रकार बदलती जा रही है कि ऊर्जा की मांग भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। तोमर ने बताया कि एक अनुमान के अनुसार विद्युत के गुणवत्तापूर्ण उपयोग तथा उचित प्रबंधन और अनावश्यक उपयोग पर अंकुश लगाकर औद्योगिक क्षेत्र में 20 से 25 प्रतिशत, कृषि क्षेत्र में 25 से 30 प्रतिशत तथा घरेलू एवं वाणिज्यिक क्षेत्र में 15 से 20 प्रतिशत तक बिजली की बचत की जा सकती है। यदि हम ऊर्जा हानियों में कमी ला सकें और उपभोक्ताओं को ऊर्जा संरक्षण के लिए प्रेरित कर सकें, तो प्रदेश का हित ऊर्जा क्षेत्र में और अधिक कर सकते हैं।

सत्ता में आने पर प.बंगाल में भी लव जिहाद के खिलाफ कानून लाएगी भाजपा : मिश्रा

मध्य प्रदेश में धर्म स्वातंत्र्य अध्यादेश लाने के बाद अब बीजेपी पश्चिम बंगाल में भी लव जिहाद के खिलाफ कानून बनाएगी। बशर्ते वहां अगले चुनाव में पार्टी सत्ता में आ जाए। स्कर्म में कल ही राज्यपाल ने लव जिहाद अध्यादेश को



मंजूरी दी है। मध्य प्रदेश में लव जिहाद पर कानून बनाने वाली बीजेपी सरकार अब इसे पश्चिम बंगाल में केश कराने की तैयारी में जुट गई है। षड्यंत्र या जबरिया विवाह कर धर्म बदलवाने के मामले में सख्त कानून बनाने वाली प्रदेश की बीजेपी सरकार अपने इस फैसले का ममता के राज्य पश्चिम बंगाल में प्रचार करेगी। प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने ऐलान किया है कि पश्चिम बंगाल में बीजेपी सत्ता में आते ही एमपी की तर्ज पर लव जिहाद

के खिलाफ धर्म स्वातंत्र्य कानून लाएगी। पश्चिम बंगाल में जबरिया या फिर साजिश के तहत धर्म बदलवाने वालों के खिलाफ कानून बनाया जाएगा। मिश्रा ने कहा पश्चिम बंगाल में सत्ता में आते ही एमपी की तर्ज पर पश्चिम बंगाल में गौ कैबिनेट भी बनायी जाएगी। राज्य की गायों को सुरक्षा देने के लिए गौ कैबिनेट का गठन कर बड़े फैसले लिए जाएंगे। गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा पश्चिम बंगाल में बीजेपी के प्रभारी भी हैं और इन दिनों पश्चिम बंगाल में पार्टी को मजबूती देने में जुटे हुए हैं। यही कारण है कि मध्य प्रदेश में लव जिहाद के खिलाफ सख्त कानून बनाने के बाद अब इसका प्रचार ममता के राज्य में किया जा रहा है। ताकि बीजेपी पश्चिम बंगाल में अपनी हिंदुत्व की छवि को पेश कर पार्टी को मजबूती दे सके।

कमलनाथ का ऐलान- कृषि कानूनों के खिलाफ कांग्रेस का किसान सम्मेलन

देश में जारी किसान आंदोलन के बीच कांग्रेस ने भाजपा पर बड़ा हमला बोला है। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा है कि केंद्र सरकार का नया कृषि कानून स्क्वखत्म करने वाला है। केंद्र कृषि क्षेत्र का निजीकरण कर रही है। इसके खिलाफ कांग्रेस 16 जनवरी से छिंदवाड़ा में किसान सम्मेलन आयोजित करेगी। इसके बाद एक बड़ा सम्मेलन 20 जनवरी को होगा। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने गुरुवार को मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार किसानों को खत्म करने का काम कर रही है। केंद्र सरकार के कानून की बुनियाद कमजोर है। उन्होंने कहा कि इस कानून का केवल हम ही विरोध नहीं करे रहे, बल्कि हड़क के घटक दल भी कर रहे हैं पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्य प्रदेश देश में सबसे ज्यादा गेहूं पैदा करने वाला राज्य है। केंद्र सरकार के इस कानून से कॉन्ट्रेक्ट फॉर्मिंग के लिए किसान मजबूर हो जाएंगे। अभी प्रदेश में 20 फीसदी लोगो को ही स्क्वका फायदा मिलता है। इससे सबसे ज्यादा मध्य प्रदेश के किसान प्रभावित होंगे। इसलिए किसानों को जागरूक



करने के लिए किसान सम्मेलन की शुरुआत 16 जनवरी से छिंदवाड़ा में होगी और फिर एक बड़ा सम्मेलन 20 जनवरी को होगा। दिल्ली जाने के सवाल पर कमलनाथ ने कहा कि वे कहीं नहीं जाएंगे। मध्य प्रदेश ही उनकी कर्मभूमि है। कमलनाथ ने आराम करने के मामले पर कहा कि फिलहाल उनकी ऐसी कोई योजना नहीं है।



शिवराज मंत्रिमंडल का विस्तार सिंधिया समर्थक सिलावट और राजपूत फिर बने मंत्री

“

राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक तुलसी सिलावट और गोविंद सिंह राजपूत ने मंत्री पद की शपथ ली। इसके साथ ही शिवराज सरकार के बहुप्रतीक्षित मंत्रिमंडल का विस्तार हो गया। मंत्रियों को प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने पद की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण कार्यक्रम सादगी पूर्ण ढंग से राजभवन में आयोजित किया गया। शपथ ग्रहण समारोह कुछ ही मिनट में संपन्न हो गया। जानकारी के मुताबिक, कोविड-19 के कारण राजभवन में शपथ कार्यक्रम के दौरान केवल डेढ़ सौ लोगों को ही प्रवेश दिया गया। जानकारी के मुताबिक, विधायकों को मंत्री बनने के बाद पूर्व के विभागों की ही जिम्मेदारी मिलेगी।

गो विंद सिंह राजपूत राजस्व और परिवहन, तुलसी सिलावट जल संसाधन विभाग का जिम्मा संभालेंगे। आपको बता दें कि ये दोनों ही विधायक ज्योतिरादित्य सिंधिया के कट्टर समर्थक माने जाते हैं। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश कैबिनेट के 14 सदस्यों गोविंद सिंह राजपूत, तुलसीराम सिलावट, इमरती देवी, प्रद्युम्न सिंह तोमर, महेंद्र सिंह सिसोदिया, डॉ. प्रभुराम चौधरी, बिसाहूलाल सिंह, एदल सिंह कंधाना, हरदीप सिंह डंग, राज्यवर्धन सिंह दत्तीगांव, बृजेंद्र सिंह यादव, गिरांज दंडोतिया, सुरेश धाकड़ और ओपीएस भदौरिया ने चुनाव लड़ा था। इसमें से इमरती देवी, एदल सिंह कंधाना और गिरांज दंडोतिया चुनाव हार गए थे। इसमें से 2 तुलसी सिलावट और गोविंद सिंह राजपूत को छह माह का कार्यकाल पूरा होने पर चुनाव के दौरान ही मंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा था। अब दोनों को फिर से कैबिनेट में लिया जा रहा है। इसके बाद भी 4 पद खाली रह जाएंगे यानि आगे भी कैबिनेट विस्तार होगा।

तुलसी सिलावट का राजनीतिक सफर

सांवेर विधायक तुलसी सिलावट 1977 से 1979 तक इंदौर के शासकीय आर्ट एंड कॉमर्स कॉलेज तथा 1980-81 में देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष रहे। 1982 में इंदौर में पार्षद बने। 1985 में पहली बार विधानसभा का चुनाव जीता और उन्हें संसदीय सचिव की अहम जिम्मेदारी दी गई। 1995 में नेहरू युवा केंद्र के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बने। इसके बाद 1998-2003 तक ऊर्जा विकास निगम के अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली। इस दौरान उन्हें प्रदेश कांग्रेस कमेटी का उपाध्यक्ष बनाया गया। 2007 में उपचुनाव में कांग्रेस ने उन्हें फिर से टिकिट दिया और वे जीते। इसके बाद 2008 के आम चुनाव में जीत हासिल हुई। सिलावट 2018 में चौथी बार विधायक बने और कमलनाथ सरकार में उन्हें कैबिनेट मंत्री



बनाया गया। उन्हें स्वास्थ्य विभाग की अहम जिम्मेदारी दी गई। 10 मार्च 2020 को विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए थे। शिवराज सरकार में उन्हें जल संसाधन और मछुआ कल्याण विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके बाद हुए उपचुनाव में जीत हासिल कर वे 5वीं बार विधायक बने।

गोविंद सिंह राजपूत का राजनीतिक सफर

सुरखी विधायक गोविंद सिंह राजपूत प्रदेश युवक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे हैं। 2002 से 2020 तक प्रदेश कांग्रेस के महासचिव और उपाध्यक्ष के पद पर रहे। उन्होंने 2003 में पहली बार विधानसभा चुनाव जीता। उन्हें कांग्रेस विधायक दल के सचेतक की जिम्मेदारी पार्टी ने सौंपी थी। 2008 में दूसरी बार

विधायक बने लेकिन 2013 में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। 2018 में भाजपा उम्मीदवार सुधीर यादव को हरा कर राजपूत एक बार फिर विधायक बन गए। उन्हें कमलनाथ सरकार में परिवहन और राजस्व विभाग की जिम्मेदारी मिली। राजपूत 10 मार्च 2020 को विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए थे। शिवराज सरकार में उन्हें खाद्य और सहकारिता मंत्री बनाया गया। राजपूत उन पांच मंत्रियों में शामिल रहे, जिन्हें मुख्यमंत्री बनने के बाद शिवराज सिंह चौहान ने कैबिनेट का सदस्य बनाया था। मंत्रिमंडल के विस्तार में राजपूत को फिर से परिवहन और राजस्व विभाग दिया गया। छह माह की अवधि समाप्त होने के कारण उन्हें मंत्री पद से 20 अक्टूबर को इस्तीफा देना पड़ा था। राजपूत ने उपचुनाव में कांग्रेस की पारुल साहू को हराया और चौथी बार विधायक बने।



स्वच्छ भारत मिशन के तहत करोड़ों लोगों के लिए शौचालय तैयार किए गए। करोड़ों शौचालयों के निर्माण की बात सुनकर विश्व अचंभित है। स्वच्छता के चलते गरीब का इलाज पर होने वाला खर्च कम हुआ है। इस अभियान ने ग्रामीण इलाकों और आदिवासी अंचलों में रोजगार के नए अवसर दिए हैं। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के मौके पर पीएम मोदी ने कहा, ग्रामीण भारत के लोगों ने खुद को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया।

सभी के सहयोग से होगा स्वच्छ भारत

2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान के मकसद की बात करें तो इसके दो हिस्से हैं, एक सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर साफ सफाई तथा दूसरा भारत के गाँवों को खुले में शौच से मुक्त करना।

2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान के मकसद की बात करें तो इसके दो हिस्से हैं, एक सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर साफ सफाई तथा दूसरा भारत के गाँवों को खुले में शौच से मुक्त करना। बात निकली ही है तो यह जानना भी रोचक होगा कि स्वच्छता का यह अभियान इन 70 सालों में भारत सरकार का देश में सफाई और उसे खुले में शौच से मुक्त करने का कोई पहला कदम हो या फिर प्रधानमंत्री मोदी की कोई अनूठी पहल ही हो ऐसा भी नहीं है। 1954 से ही भारत सरकार द्वारा ग्रामीण भारत में स्वच्छता के लिए कोई न कोई कार्यक्रम हमेशा से ही अस्तित्व में रहा है लेकिन इस दिशा में ठोस कदम उठाया गया 1999 में तत्कालीन सरकार द्वारा।

खुले में मल त्याग की पारंपरिक प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने के उद्देश्य से निर्मल भारत अभियान की शुरुआत की गई, जिसका प्रारंभिक नाम सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान रखा गया था। इस सबके बावजूद 2014 में आई यूनन की रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत की करीब 60 लाख आबादी खुले में शौच करती है और इसी रिपोर्ट के आधार पर प्रधानमंत्री मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की। अब एक बार फिर जब इस अभियान की सालगिरह आयी तो हमारे देश के नेता अभिनेता और

विभिन्न क्षेत्रों के सेलिब्रिटीस एक बार फिर हाथों में झाड़ू लेकर फोटो सेशन करवाने लगे। ट्विटर और फेसबुक पर स्वच्छ भारत अभियान हैश टैग के साथ स्टेटस अपडेट हुआ, अखबारों के पन्ने मुख्यमंत्रियों, नेताओं और

दरअसल स्वच्छ भारत, जो कि कल तक गाँधी जी का सपना था, आज वो मोदी जी का सपना बन गया है लेकिन इसे इस देश का दुर्भाग्य कहा जाए या फिर अज्ञानता कि 70 सालों में हम मंगल ग्रह पर पहुंच गए,



परमाणु ऊर्जा संयंत्र बना लिए, हर हाथ में मोबाइल फोन पकड़ा दिए लेकिन हर घर में शौचालय बनाने के लिए आज भी संघर्ष कर रहे हैं? गाँधी जी ने 1916 में पहली बार अपने भाषण में भारत में स्वच्छता का विषय उठाया था और 2014 में हमारे प्रधानमंत्री

अभिनेताओं के झाड़ू लगाते फोटो से भरे रहे और ब्यूरोक्रेट्स द्वारा फाइलों में ओडीएफ (खुले में शौच मुक्त) गाँवों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही होगी लेकिन क्या वास्तव में हमारा देश साफ दिखाई देने लगा है?

इस मुद्दे को उठा रहे हैं। स्वच्छता 21वीं सदी के आजाद भारत में एक मुद्दा है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन 2019 में भी अगर यह एक मुद्दा रहा, तो अधिक दुर्भाग्यपूर्ण होगा।

कोरोना काल और लॉकडाउन में जिंदगी की नई परिभाषा सिखा गया 2020

साल 2020 सिर्फ बुरी यादें नहीं छोड़ कर जा रहा। इस साल देश ने कुछ उपलब्धियां भी हासिल कीं तो कुछ चीजें ऐसी भी हुईं जोकि लंबे अर्से तक मुसकान के साथ याद की जाएंगी। सोचिये बच्चों को स्कूल से एक दिन की छुट्टी मिल जाये तो वह क्या खुश हो जाते हैं, यही नहीं लंबा वीकेंड आ जाये और ऑफिस नहीं जाना पड़े तो लोग कितने खुश हो जाते थे। लेकिन इस साल कोरोना काल में बच्चे पूरी तरह घर बैठ गये और ऑनलाइन कक्षाएं ही चलीं। यह सही है कि बच्चे अब ऑनलाइन कक्षाओं से उबने लगे हैं लेकिन वह खुश भी बहुत हुए। यही नहीं वर्क फ्रॉम होम मिल जाने से रोजाना ट्रैफिक में फँसने से बचना हो, सुबह जल्दी उठ कर भागना हो, इन सबसे भी लोग इस साल बच गये। ऑफिस के काम के साथ-साथ लोग अपने घर के काम भी निपटाते रहे।

यही नहीं इस साल के शुरू में जब लोगों को मास्क पहनने को कहा गया तो लोग बड़े अनमने ढंग से उसे लगा रहे थे लेकिन अब मास्क का फैशन-सा दिखता है। हर आयोजन के हिसाब से आपकी ड्रेस से मैच करते मास्क बाजार में उपलब्ध हैं। शादी-विवाह के लिए डिजाइनर मास्क आ गये हैं। कोरोना काल में जिन लोगों की शादी हुई है वह आजीवन अपनी शादी की एलबम मुसकुराते हुए देखेंगे। कोरोना काल ने और भी कई बड़े बदलाव किये जैसे कि शादी-विवाह आदि बड़े सादे ढंग से आयोजित किये जाने लगे और नाममात्र के ही रिश्तेदारों की उपस्थिति इन आयोजनों में रहने लगी। कहीं 50 तो कहीं 100 लोगों के एक साथ उपस्थित रहने की अनिवार्यता से शादी-विवाह जैसे बड़े आयोजनों में नाममात्र के रिश्तेदार या करीबी ही आमंत्रित किये जा रहे हैं।

लॉकडाउन के दौरान लोगों के मनोरंजन के माध्यम भी बदल गये। सिनेमाघर बंद हो गये, बार बंद हो गये, पार्क बंद हो गये तो लोग घरों पर ही टीवी के आगे बैठ गये। दूरदर्शन ने रामायण, महाभारत, श्रीकृष्णा आदि पुराने धारावाहिक शुरू किये तो वह काफी हिट हुए और ऐसे में जब शूटिंग बंद होने से विभिन्न धारावाहिकों के नये एपिसोड नहीं आये तो लोग वेब सीरीज आदि देखकर समय बिताने लगे। यही नहीं बड़े पर्दे की फिल्मों भी तीसरे पर्दे पर रिलीज होने लगीं हैं। लोगों के पैसे बचने लगे हैं क्योंकि ताजा फिल्में ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर सस्ते में उपलब्ध हैं।

कोरोना काल में घरों में लॉकडाउन के दौरान काम

वाली बाई ना होने के कारण लोग घरों के काम खुद ही करते नजर आये, टाइम पास के लिए सभी परिजन मिलकर लूडो, कैरम बोर्ड आदि खेल खेलने लगे और अधिकांश ऑफिस अब भी बंद होने के कारण अब वर्क फ्रॉम होम भारत में एक स्थापित संस्कृति बन

2020 में भूमि पूजन किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से किये गये भूमि पूजन के दौरान सर्वधर्म प्रार्थना सभा का भी आयोजन किया गया। बहरहाल, 2020 जाते-जाते हम सभी को स्वच्छता का जो संदेश देकर गया है वह अभूतपूर्व



गया है। ऑनलाइन शॉपिंग ऐसा चलन बन गया है जोकि सामान्य दुकानों से खरीदारी की जगह ले चुका है और छोटे-छोटे दुकानदार भी होम डिलिवरी सुविधा शुरू कर चुके हैं। यही नहीं डिजिटल पेमेंट के क्षेत्र में भारत काफी आगे बढ़ चला है। इतना आगे बढ़ चला है कि यदि सरकारें तेजी से प्रयास करतीं तो भी अब तक की स्थिति में पहुँचने में दो-तीन साल लग जाते। साल 2020 में इसरो और डीआरडीओ ने जहाँ भारत के लिए नये कीर्तिमान स्थापित किये, भारत को रक्षा क्षेत्र में, अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार की ओर से तेजी से कदम उठाये गये वहीं राफेल विमानों के आने से भारतीय वायुसेना की ताकत में भी अपार इजाफा हुआ। देश के सामाजिक तानेबाने को वर्षों तक परेशान किये रहे अयोध्या मुद्दे का हल तो 2019 में निकल गया था लेकिन अगस्त 2020 में तब यह पूरी तरह सुलझ गया जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण के लिए भूमि पूजन किया। सभी धर्मों के लोगों ने इसका स्वागत कर भारत की एकता को दर्शाया। यही नहीं भारतीय लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर संसद के नये भवन के लिए भी दिसंबर

है। यकीनन लोग अपनी खुद की सफाई रखने और अपने आसपास भी सफाई रखने के प्रति पूरी तरह जागरूक हो चुके हैं। बस इस जागरूकता को बनाये रखने और इसका प्रसार करते रहने की जरूरत है। साल 2020 जाते-जाते यह भी दिखा गया कि भारत जब एक होकर लड़ता है तो विजय निश्चित होती है। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में जिस तरह देश ने एक होकर इसका मुकाबला किया वही कारण है कि दुनिया के बड़े देश जहाँ अब भी इस महामारी के कहर का सामना कर रहे हैं वहीं भारत में इस पर काफी हद तक काबू पाया जा चुका है। इससे पहले शायद ही हमारी आज की पीढ़ी ने विरोधी विचारधारा वाली केंद्र तथा राज्य सरकारों की ऐसी एकजुटता देखी होगी जो कोरोना के खिलाफ लड़ाई में देखी गयी। यही नहीं हमारे वैज्ञानिक रिकॉर्ड समय में कोरोना की वैक्सीन भी तैयार कर चुके हैं। इसके अलावा पूरी दुनिया ने इम्युनिटी बढ़ाने के लिए भारत के आयुर्वेदिक तत्वों का सहारा लेकर भारत की इस प्राचीन चिकित्सा पद्धति के प्रति वैश्विक मान्यता सिद्ध कर दी है।



चंबल के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

चंबलांचल में वैसे तो भगवान कृष्ण के समय के उनसे जुड़ी हुई यादें अंचल ने सहेज कर रखी हैं परंतु उसके बाद भी तपस्वियों राजा महाराजाओं की उपलब्धियां भी चंबलांचल को गौरवान्वित करती हैं जहां एक ओर भगवान कृष्ण तपसी बाबा और छाकी बाबा की तप स्थली में गाय चराने मुरैना गांव में आकर सरोवर में स्नान कर गुफा में होते हुए घरौना मंदिर पहुंच जाते थे।

मुना से ग्वालियर की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग पर लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर नूराबाद का पुल निर्मित है। कुछ वर्ष पूर्व यह पुल राष्ट्रीय राजमार्ग का एक हिस्सा था। परंतु इतिहास का हिस्सा होने से एवं क्षतिग्रस्त होने के कारण राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण द्वारा इसे अलग कर दिया गया और विशेष स्थान का दर्जा दिया गया। यह पुल कूर शासक औरंगजेब और महारानी नूरजहां के शासनकाल का है। गांव का नाम महारानी नूरजहां के नाम से नूराबाद रखा गया है। उनके सात पुत्रों के समाधि के रूप में इस पुल पर क्षत्रियों का निर्माण किया गया, जिसका पुरातत्व विभाग द्वारा जीर्णोद्धार किया गया है। अब यह एक पर्यटन स्थल भी है। नूराबाद से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व की ओर बटेश्वर मंदिर है जहां 108 शिवलिंग हैं। कुछ वर्षों से लगातार यहां खुदाई हो रही है। उस खुदाई में लगातार शिवलिंग की मूर्तियां निकल रही हैं। लगभग दो या तीन वर्ष पूर्व यहां खुदाई में 11 फीट लंबी शिवलिंग निकली थी। इसलिए बटेश्वर मंदिर को भगवान महादेव से जुड़ा हुआ हिस्सा उनका वरदान मानते हैं। भगवान शिव की कृपा से यहां लोगों को अलौकिक शांति मिलती है इसलिए इसे शांति स्थल भी कहा जाता है। टेश्वर से लगभग 3 किलोमीटर आगे चलकर पथरीले रास्तों से निकलकर पड़ावली पहुंचते हैं। यहां के मंदिर की समानता खजुराहो के मंदिर से की जा सकती है। इस पुरातात्विक धरोहर में योग और भोग से जुड़ी ऐसी कलाकृतियां मौजूद हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। पूरे मंदिर

प्रांगण में ये नक्काशी की हुई कलाकृतियां मन को मोह लेती हैं। यहां हरे भरे वृक्षों की छांव में शांति और सुकून की अनुभूति होती है। पड़ावली से लगभग 7 किलोमीटर आगे पूर्व की ओर चलने के बाद दूर एक गुम्बदनुमा मठ दिखाई देता है। इसकी छवि अति मनमोहक एवं आकर्षक करने वाली



होती है। यहां पहुंचने पर पता चलता है कि ये एक भव्य एवं विशाल 64 योगिनी मंदिर है। अगर कहा जाए कि संसद भवन का नक्शा यहां से गया था तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह मंदिर तार्त्रिक सिद्धियों के लिए विख्यात रहा है जो अपने आप में विशालता लिए हुए है। यहां 64 शिवलिंग अलग-अलग रखे हुए हैं एवं मंदिर को अंदर और बाहर से देखने पर यह प्रतीत होता है कि संसद भवन का नक्शा जरूर यहां से ही गया है। 64 योगिनी मंदिर को यहां के लोग मितावली गांव के नाम से जानता है। यहां रास्ता खराब होने के कारण काफी कम लोग पहुंचते हैं। मितावली गांव से थोड़ा आगे चलकर भारत का दूसरा शनिचरा मंदिर चंबलांचल में स्थित है। यहां हर शनिवार को लोग श्रद्धाभाव के साथ दर्शन करने आते हैं। देश की राजधानी एवं प्रदेश की

राजधानी तक के लोग यहां आते हैं। यहां दर्शन कर इसमें बने हुए कुण्ड में स्नान करने से लोगों के ऊपर चल रही शनि की दशा उतरने लगती है। यह शनिचरा का भव्य मंदिर ऐंती गांव के पहाड़ी इलाकों में जंगल के बीच बना हुआ है परंतु प्रशासन की व्यवस्था के चलते यहां सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं।



हर शानेश्वरों अमावस्या का यहां विशाल मेल का आयोजन होता है, जो अमावस्या से तीन दिन पहले से तीन दिन बाद तक चलता है। रह धाम के कुएँ के जल से सेके गए थे पुण्ड्रैना से ग्वालियर मार्ग पर टेकरी गांव जहां नूराबाद पुलिस चौकी है से लगभग 5 किलोमीटर पश्चिम की ओर करह धाम है, जिसे पटिया वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है। यहां बाबा रामदास ने एक पटिया पर बैठकर तपस्या की थी लोग बताते हैं कि तपस्या करते समय उनके यहां शेर और गाय एक ही घाट पर आकर पानी पीते थे और उनके पास बैठ जाते थे। यहां के सरोवर का जल आवश्यकता पड़ने पर घी का कार्य भी करता है परंतु घी के रूप में जितना जल उपयोग होता है उतना ही घी लाकर उस सरोवर में डालना पड़ता है।

स्वतंत्रता के लिए बलिदान का संदेश दिया था वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई ने

वी रांगना नाम सुनते ही हमारे मनोमस्तिष्क में रानी लक्ष्मीबाई की छवि उभरने लगती है। भारतीय वसुंधरा को अपने वीरोचित भाव से गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई सच्चे

जिन महापुरुषों का मन वीरोचित भाव से भरा होता है, उसका लक्ष्य सामाजिक उत्थान और राष्ट्रीय उत्थान ही होता है। वह एक ऐसे आदर्श चरित्र को जीता है, जो समाज के लिए प्रेरणा बनता है। इसके साथ ही वह अपने

सरकार को सूचना दे दी थी। परंतु ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया। 27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दत्तक पुत्र दामोदर राव की गोद अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। यह सूचना पाते ही रानी के मुख से यह वाक्य प्रस्फुटित हो गया, मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी। यहीं से भारत की प्रथम स्वाधीनता क्रांति का बीज प्रस्फुटित हुआ।

रानी लक्ष्मीबाई ने अत्यंत वीरोचित भाव से झांसी की सुरक्षा करने का संकल्प लिया। इससे यही स्पष्ट होता है कि रानी के मन में गजब की राष्ट्रभक्ति थी। वे अकेले ही अपनी पीठ के पीछे दामोदर राव को कसकर घोड़े पर सवार हो, अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं। बहुत दिन तक युद्ध का क्रम इस प्रकार चलना असंभव था। सरदारों का आग्रह मानकर रानी ने कालपी प्रस्थान किया। वहां जाकर वे शांत नहीं बैठीं। उन्होंने नाना साहब और उनके योग्य सेनापति ताल्या टोपे से संपर्क स्थापित किया और विचार-विमर्श किया। रानी की वीरता और साहस का लोहा अंग्रेज मान गए, लेकिन उन्होंने रानी का पीछा किया। रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ, लेकिन रानी ने साहस नहीं छोड़ा और शौर्य का

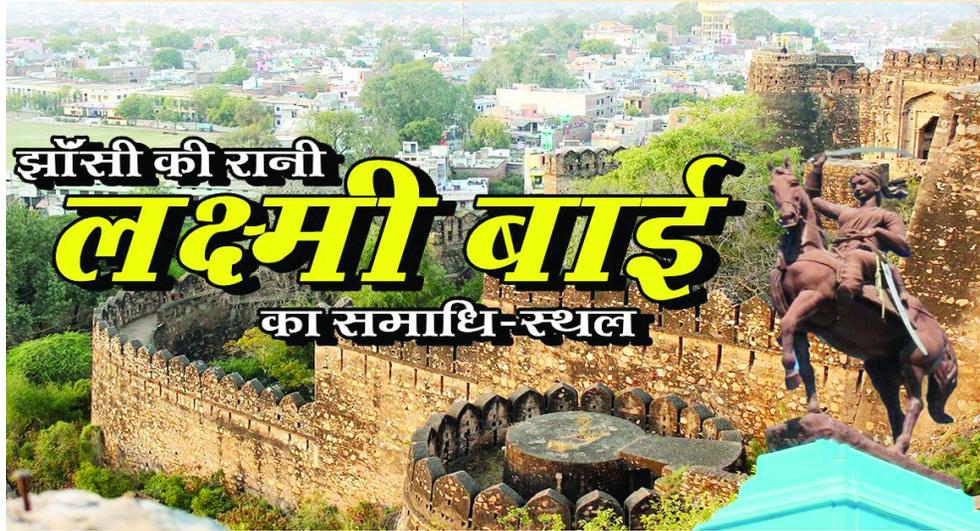
अर्थों में वीरांगना ही थीं। वे भारतीय महिलाओं के समक्ष अपने जीवन काल में ही ऐसा आदर्श स्थापित करके विदा हुईं, जिससे हर कोई प्रेरणा ले सकता है। कहा जाता है कि सच्चे वीर को कोई भी प्रलोभन अपने कर्तव्य से विमुख नहीं कर सकता। ऐसा ही रानी लक्ष्मीबाई का जीवन था। उसके मन में अपने राज्य और राष्ट्र से एकात्म स्थापित करने वाली भक्ति हमेशा विद्यमान रही। वीरांगना के मन में हमेशा यह बात कचोटती रही कि देश के दुश्मन अंग्रेजों को सबक सिखाया जाए। इसी कारण उन्होंने यह घोषणा की कि मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी। इतिहास बताता है कि इस घोषणा के बाद रानी ने अंग्रेजों से युद्ध किया।

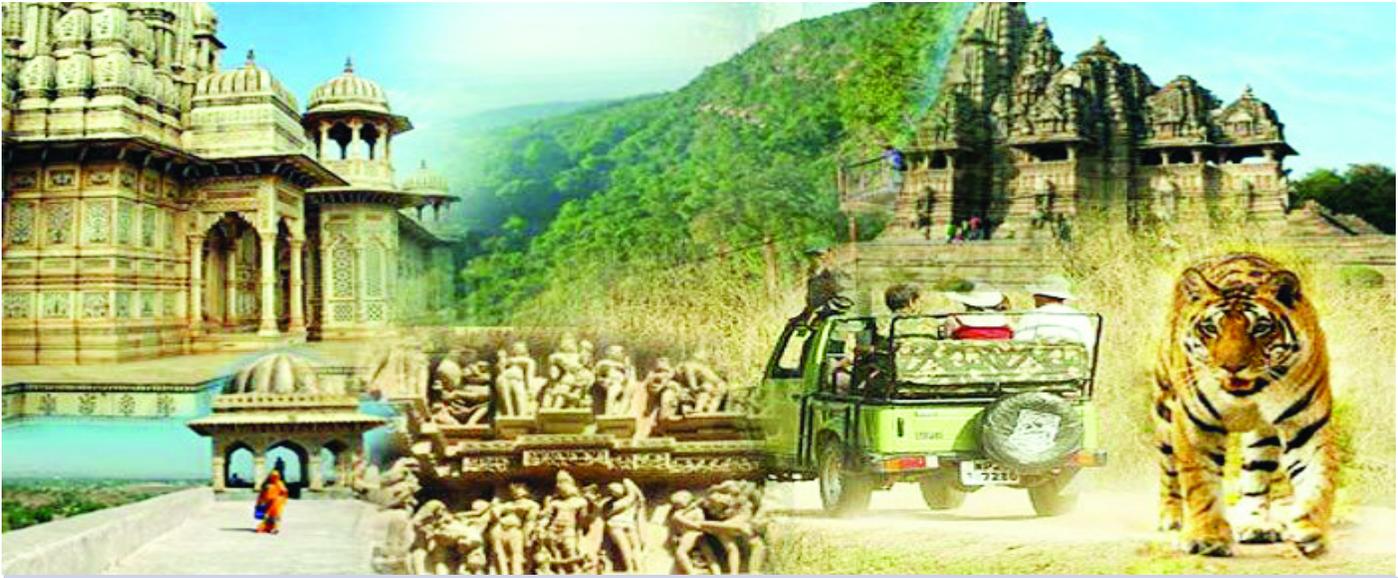
वीरांगना लक्ष्मीबाई के मन में अंग्रेजों के प्रति किस कदर घृणा थी, वह इस बात से पता चल जाता है कि जब रानी का अंतिम समय आया, तब ग्वालियर की भूमि पर स्थित गंगादास की बड़ी शाला में रानी ने संतों से कहा कि कुछ ऐसा करो कि मेरा शरीर अंग्रेज न छू पाए। इसके बाद रानी स्वर्ग सिंघार गई और बड़ी शाला में स्थित एक झोंपड़ी को चिता का रूप देकर रानी का अंतिम संस्कार कर दिया और अंग्रेज देखते ही रह गए। हालांकि इससे पूर्व रानी के समर्थन में बड़ी शाला के संतों ने अंग्रेजों से भीषण युद्ध किया, जिसमें 745 संतों का बलिदान भी हुआ, पूरी तरह सैनिकों की भांति अंग्रेजों से युद्ध करने वाले संतों ने रानी के शरीर की मरते दम तक रक्षा की।

पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सदैव आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी और धर्मनिष्ठ होता है। ऐसी ही थीं महारानी लक्ष्मीबाई। उनका जन्म काशी में 19 नवंबर 1835 को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी। लक्ष्मीबाई अपने बाल्यकाल में मनु व मणिकर्णिका के नाम से जानी जाती थीं। सन् 1850 मात्र 15 वर्ष की आयु में झांसी के महाराजा गंगाधर राव से मणिकर्णिका का विवाह हुआ।

एक वर्ष बाद ही उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। लेकिन चार माह पश्चात ही उस बालक का निधन हो गया। राजा गंगाधर राव को तो इतना गहरा धक्का पहुंचा कि वे फिर स्वस्थ न हो सके और 21 नवंबर 1853 को चल बसे। यद्यपि महाराजा का निधन महारानी के लिए असहनीय था, लेकिन फिर भी वे घबराई नहीं, उन्होंने विवेक नहीं खोया। राजा गंगाधर राव ने अपने जीवनकाल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मानकर अंग्रेज

प्रदर्शन किया। और आखिरकार 18 जून को वह दिन आ ही गया, जब रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुईं। रानी लक्ष्मीबाई ने स्वातंत्र्य युद्ध में अपने जीवन की अंतिम आहुति देकर जनता जनार्दन को चेतना प्रदान की और स्वतंत्रता के लिए बलिदान का संदेश दिया। उनका समाज और राष्ट्र की रक्षा के लिए दिया गया यह बलिदान निश्चित रूप से समाज के हर व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा है, एक आदर्श पाथेय है।



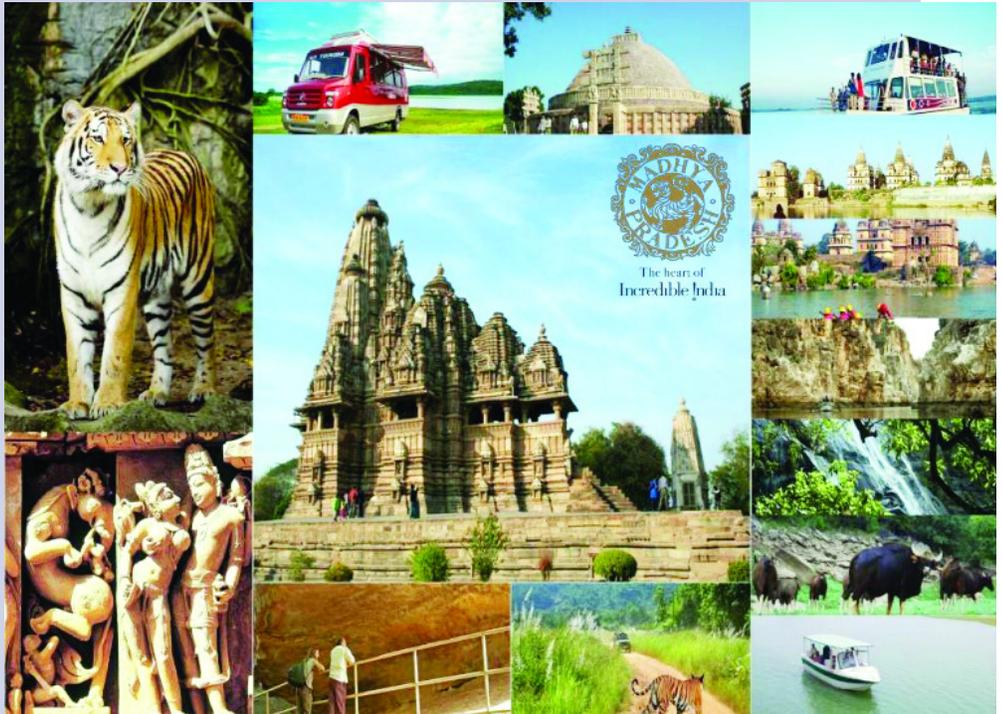
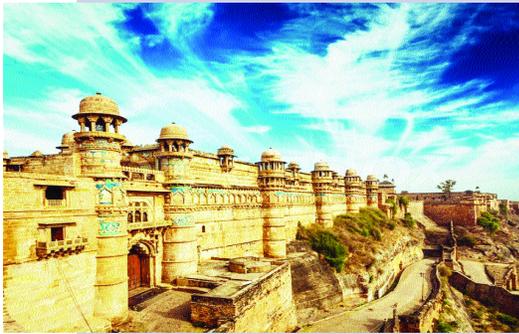


मप्र के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

मध्य प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक, ग्वालियर कला, संस्कृति और इतिहास में समृद्ध है। यह शहर मध्य प्रदेश पर्यटन का एक प्रमुख हिस्सा है और वास्तुशिल्प चमत्कारों और ऐतिहासिक मील के पत्थर का एक आदर्श मिश्रण है। भारत अपनी विविधता के लिए जाना जाता है। यहां

देखने के अलावा सासबहू मंदिर में जाएं, पाटनकर और सर्राफा बाजारों में खरीदारी करें और गुजरी महल पुरातत्व संग्रहालय में समय बिताएं। मध्य प्रदेश पर्यटन

जबलपुर प्राकृतिक भव्यता से भरा हुआ है। यह मध्य प्रदेश में घूमने के लिए सबसे आकर्षक स्थानों में से एक है। नर्मदा नदी के किनारे बसा यह शहर प्राकृतिक सौंदर्य



के हर राज्य की अपनी एक अलग विशेषता है, जो आंगतुकों को अपनी ओर खींचती है। वैसे अगर बात मध्यप्रदेश की हो तो इसे लोग भारत के दिल के रूप में भी जानते हैं, क्योंकि यहां पर आपको खाने-पीने से लेकर घूमने, शॉपिंग करने व इतिहास को करीब से जानने का मौका मिलेगा। अगर आप भी अपनी टेवल लिस्ट में मध्यप्रदेश को शामिल कर रहे हैं तो चलिए आज हम आपको मध्यप्रदेश में घूमने की कुछ बेहतरीन जगहों के बारे में बता रहे हैं-

मध्य प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक, ग्वालियर कला, संस्कृति और इतिहास में समृद्ध है। यह शहर मध्य प्रदेश पर्यटन का एक प्रमुख हिस्सा है और वास्तुशिल्प चमत्कारों और ऐतिहासिक मील के पत्थर का एक आदर्श मिश्रण है। शहर का सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण ग्वालियर का किला भारत के सर्वश्रेष्ठ किलों में से एक है। यहां पर आप ग्वालियर किले को

स्थलों के नक्शे पर विचित्र शहर ओरछा, बुंदेला के राजपूतों की पूर्ववर्ती राजधानी है। इसके पास कुछ अद्भुत किले और मंदिर हैं जो राजपूताना वास्तुकला को दर्शाते हैं। यहां पर आप राजा राम मंदिर में एक शानदार शाम की आरती में भाग ले सकते हैं। लक्ष्मीनारायण मंदिर में जाएं, फूलबाग का आनंद लें, बेतवा नदी में बोटिंग करें और ओरछा वन्यजीव अभ्यारण्य में जंगल सफारी करें।

से भरपूर है, जो ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां पर आपको अद्भुत झरने से लेकर संगमरमर के चट्टानी आउटर तक और राजसी किलों से लेकर बांधों तक को देखने का मौका मिलेगा। भोपाल को झीलों का शहर भी कहा जाता है। यह मध्य प्रदेश के सबसे दिलचस्प पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां पर कई झीलों, अविश्वसनीय संग्रहालयों, वन्यजीवों के भंडार, और ऐतिहासिक महलों की लंबी सूची है जो



भारतीय महिलाओं की सुरक्षा के लिए ढाल बने ये कानून

1909 में शुरू हुआ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कारवां आज इस मुकाम पर पहुंच चुका है दुनिया के सभी देशों की महिला हर फील्ड में बुलंदियों को छू रही हैं। इसी लंबे कालखंड में महिलाओं की सुरक्षा के लिए भारत समेत दुनिया के तमाम देशों ऐसे कानून बने हैं जो न सिर्फ उनकी सुरक्षा के लिए ढाल बने बल्कि उन्हें एक सम्मान की जिंदगी देने का जरिया भी बनें। जानें ऐसे भारतीय कानूनों के बारे में जो भारतीय महिलाओं के लिए सुरक्षा की ढाल का काम कर रहे हैं-

संवैधानिक मौलिक अधिकार

भारतीय संविधान के प्रावधान के अनुसार पुरुषों की तरह सभी क्षेत्रों में महिलाओं को बराबर अधिकार देने के लिए कानूनी स्थिति है। भारत में बच्चों और महिलाओं के उचित विकास हेतु इस क्षेत्र में महिला और बाल-विकास अच्छे से कार्य कर रहा है।

संविधान के अनुच्छेद-14 में कानूनी समानता, अनुच्छेद-15 (3) में जाति, धर्म, लिंग एवं जन्म स्थान आदि के आधार पर भेदभाव न करना।

अनुच्छेद-16 (1) में लोक सेवाओं में बिना भेदभाव के अवसर की समानता। अनुच्छेद-19 (1) में समान रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।

अनुच्छेद-21 में स्त्री एवं पुरुषों दोनों को प्राण एवं दैहिक स्वाधीनता से वंचित न करना।

अनुच्छेद-23-24 में स्त्री एवं पुरुष दोनों को ही शोषण के विरुद्ध अधिकार समान रूप से प्राप्त।

अनुच्छेद-25-28 में धार्मिक स्वतंत्रता दोनों को समान रूप से प्राप्त।

अनुच्छेद-29-30 में शिक्षा एवं संस्कृति का अधिकार।

अनुच्छेद-32 में संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

अनुच्छेद-39(घ) में पुरुषों एवं स्त्रियों दोनों को समान कार्य के लिए समान वेतन का अधिकार।

अनुच्छेद-42 महिलाओं हेतु प्रसूति सहायता प्राप्ति की व्यवस्था।

घरेलू हिंसा अधिनियम

घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम 2005 भारत की संसद द्वारा पारित एक अधिनियम है जिसका उद्देश्य घरेलू हिंसा से महिलाओं को बचाना है। यह अधिनियम 26 अक्टूबर 2006 को लागू हुआ था।

जानिए घरेलू हिंसा क्या है

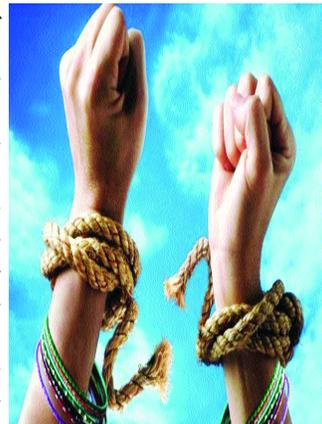
शारीरिक पीड़ा, अपहानि या जीवन या अंग या स्वास्थ्य को खतरा या लैगिंग दुर्व्यवहार अर्थात महिला की गरिमा का उल्लंघन, अपमान या तिरस्कार करना या अतिक्रमण करना या मौखिक और भावनात्मक दुर्व्यवहार अर्थात अपमान, उपहास, गाली देना या आर्थिक दुर्व्यवहार अर्थात आर्थिक या वित्तीय संसाधनों, जिसकी

वह हकदार है, से वंचित करना, मानसिक रूप से परेशान करना ये सभी घरेलू हिंसा कहलाते हैं।

क्या है घरेलू हिंसा अधिनियम?

घरेलू हिंसा अधिनियम महिला बाल विकास द्वारा ही संचालित किया जाता है। शहर में महिला बाल विकास द्वारा जोन के अनुसार आठ संरक्षण अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। जो घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं की शिकायत सुनते हैं और पूरी जांच पड़ताल करने के बाद प्रकरण को न्यायालय भेजा जाता है। ऐसी महिलाओं के लिए है जो घर के अंदर होने वाली किसी किस्म की हिंसा से

पीड़ित हैं। इसमें अपशब्द कहे जाने, किसी प्रकार की रोक-टोक करने और मारपीट करना आदि प्रताड़ना के प्रकार शामिल हैं। इस अधिनियम के तहत महिलाओं के हर रूप मां, भाभी, बहन, पत्नी व महिलाओं के हर रूप और किशोरियों से संबंधित

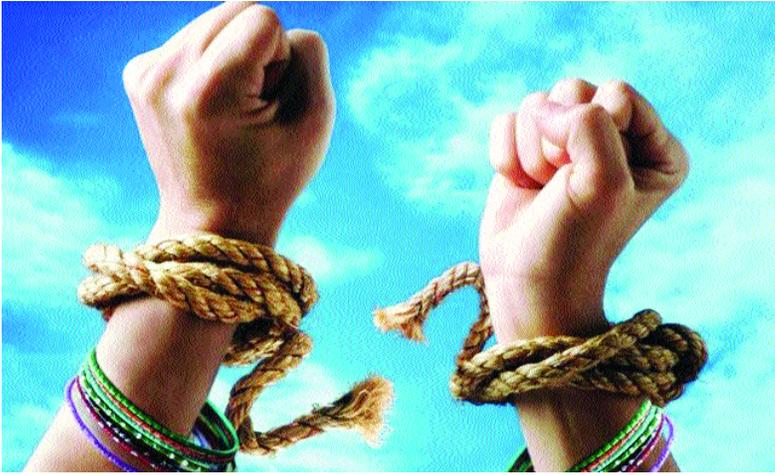


प्रकरणों को शामिल किया जाता है। घरेलू हिंसा अधिनियम के तहत प्रताड़ित महिला किसी भी वयस्क पुरुष को अभियोजित कर सकती है अर्थात उसके विरुद्ध प्रकरण दर्ज करा सकती है।

कौन करा सकता है शिकायत दर्ज?

घरेलू हिंसा के मामले में कौन पीड़ित खुद शिकायत कर सकती है। अगर आप पीड़ित नहीं हैं तो भी आप संरक्षण अधिकारी से

संपर्क कर सकते हैं। कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसे किसी कारण से लगता है कि घरेलू हिंसा की कोई घटना घटित हुई है या हो रही है या जिसे ऐसा अंदेशा भी है कि ऐसी घटना घटित हो सकती है, वह संरक्षण अधिकारी को सूचित कर सकता है। यदि आपने सद्भावना में यह काम किया है तो जानकारी की पुष्टि न होने पर भी आपके खिलाफ कार्यवाही नहीं की जाएगी। सुरक्षा अधिकारी के अलावा पीड़ित 'सेवा प्रदाता' से भी संपर्क कर सकती है, सेवा प्रदाता फिर शिकायत दर्ज कर 'घरेलू हिंसा घटना रिपोर्ट' बना कर मजिस्ट्रेट और संरक्षण अधिकारी को सूचित करता है।

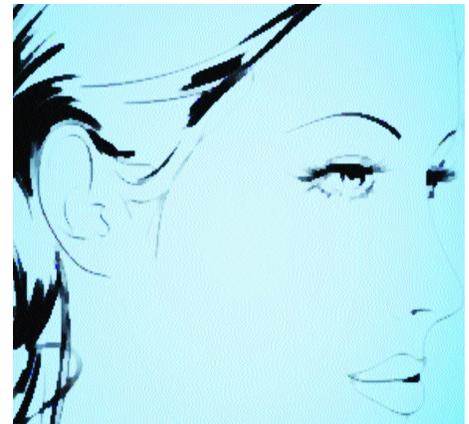


हर क्षेत्र में आगे बढ़ती आज की महिलाएं

हमारे देश की महिलायें आज हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर अपनी ताकत का अहसास करवा रही हैं। महिलाओं का काम अब केवल घर चलाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि वे हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। परिवार हो या व्यवसाय, महिलाओं ने साबित कर दिखाया है कि वे हर वह काम करके दिखा सकती हैं जिसमें अभी तब सिर्फ पुरुषों का ही वर्चस्व माना जाता था। शिक्षित होने के साथ ही महिलाओं की समझ में वृद्धि हुयी है। अब उनमें खुद को आत्मनिर्भर बनाने की सोच पनपने लगी है। शिक्षा मिलने से महिलाओं ने अपने पर विश्वास करना सीखा है और घर के बाहर की दुनिया को जीतने का सपना सच करने की दिशा में कदम बढ़ाने लगी हैं सरकार ने महिलाओं के लिए नियम-कायदे और कानून तो बहुत सारे बना रखे हैं किन्तु उन पर हिंसा और अत्याचार के आंकड़ों में अभी तक कोई कमी नहीं आई है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 15 से 49 वर्ष की उम्र वाली 70 फीसदी महिलाएं किसी न किसी रूप में कभी न कभी हिंसा का शिकार होती हैं। इनमें कामकाजी व घरेलू महिलायें भी शामिल हैं। देशभर में महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के लगभग 1.5 लाख मामले सालाना दर्ज किए जाते हैं। जबकि इसके कई गुणा अधिक मामले दबकर रह जाते हैं। घरेलू हिंसा अधिनियम देश का पहला ऐसा कानून है



जो महिलाओं को उनके घर में सम्मानपूर्वक रहने का अधिकार सुनिश्चित करता है। इस कानून में महिलाओं को सिर्फ शारीरिक हिंसा से ही नहीं बल्कि मानसिक, आर्थिक एवं यौन हिंसा से बचाव करने का अधिकार भी शामिल है। भारत में लिंगानुपात की स्थिति भी अच्छी नहीं मानी जा सकती है। लिंगानुपात के वैश्विक औसत 990 के मुकाबले भारत में 941 ही है। हमें भारत में लिंगानुपात सुधारने की दिशा में विशेष काम करना होगा ताकि लिंगानुपात की खराब स्थिति को बेहतर बनायी जा सके। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के



महिला सशक्तिकरण



बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ अभियान का जरूर कुछ असर दिखने लगा है। इस अभियान से अब देश में महिलाओं के प्रति सम्मान बढ़ने लगा है। जो इस बात का अहसास करवाता है कि आने वाले समय में महिलाओं के प्रति समाज का नजरिया सकारात्मक होने वाला होगा। विकसित देशों की तुलना में हमारे देश में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी नहीं है। आज भी महाराष्ट्र के बीड़, गुजरात के सूरत, भुज में घटने वाली महिला उत्पीड़न की घटनायें सभ्य समाज पर एक बदनमा दाग लगा जाती हैं।



सबसे उत्तम है भारत का संविधान

“

संविधान, किसी भी देश का मौलिक कानून है जो सरकार के विभिन्न अंगों की रूपरेखा और मुख्य कार्य का निर्धारण करता है। साथ ही यह सरकार और देश के नागरिकों के बीच संबंध भी स्थापित करता है। वर्तमान में, भारत का संविधान 465 अनुच्छेद जो 25 भागों और 12 अनुसूचियों में लिखित है। हालांकि, संविधान की कई विशेषताएं हैं जैसे धर्मनिरपेक्ष राज्य, संघवाद, संसदीय सरकार इत्यादि। भारतीय संविधान सभा की ओर से 26 नवंबर 1949 को भारत का संविधान पारित हुआ और 26 जनवरी 1950 को प्रभावी हुआ। भारत का संविधान विश्व के किसी भी गणतंत्रिक देश का सबसे लंबा लिखित संविधान है। भारतीय संविधान में वर्तमान समय में 465 अनुच्छेद, 12 अनुसूचियां और 22 भागों में विभाजित है। बाबासाहेब डॉ. भीम राव अंबेडकर को भारत का संविधान निर्माता कहा जाता है। वे संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष थे। अंबेडकर को संविधान का फाइनल ड्राफ्ट तैयार करने में 2 साल 11 महीने और 18 दिन लगे। पूरे देश में 26 नवंबर को संविधान दिवस के तौर पर मनाया जाता है।

जब-जब देश की गणतंत्रता की बात होगी, तब-तब देश के संविधान का नाम आना स्वाभाविक है। हमारा संविधान अनूठा संविधान है। संविधान को बनाने के लिए संविधान-सभा बनाई गई थी, जिसका गठन स्वतंत्रता पूर्व ही दिसम्बर, 1946 को हो गया था। भारत का सर्वोच्च विधान संविधान है हमारा संविधान दुनिया का

तक बहस चली। कुल 12 अधिवेशन किए गये। लास्ट डे 284 लोगों ने इस पर साइन किए। संविधान सभा के प्रमुख सदस्यों में 'पंडित जवाहर लाल नेहरू', 'डा. भीमराव अम्बेडकर', 'डा. राजेन्द्र प्रसाद', 'सरदार वल्लभ भाई पटेल', 'मौलाना अब्दुल कलाम आजाद' आदि थे। भारत के संविधान में शुरुआत में 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियां थी, जो अब बढ़कर 448 अनुच्छेद, 25 भाग और 12 अनुसूचियां हो गयी हैं। हमारे भारत का संविधान दुनिया का सबसे अच्छा संविधान माना जाता है। इसे दुनिया भर के संविधानों का अध्ययन करने के बाद बनाया गया है। उन सभी देशों की अच्छी-अच्छी बातों को आत्मसात किया गया है। संविधान की नज़र में सब एक समान है। सबके अधिकार और कर्तव्य एक समान है। इसकी दृष्टि में कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा, न ही अमीर, न ही गरीब। सबके लिए एक जैसे पुरस्कार और दंड का विधान है।

संविधान विशेष कानूनी शुचिता वाले लोगों के विश्वास और आकांक्षाओं का दस्तावेज है। देश के बाकी सभी कानून और रीति रिवाजों को वैध होने के लिए इसका पालन करना होगा। भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ था जिसमें 395 अनुच्छेद, 8 अनुसूचि और 22 हिस्से थे। यह दुनिया का सबसे विस्तृत

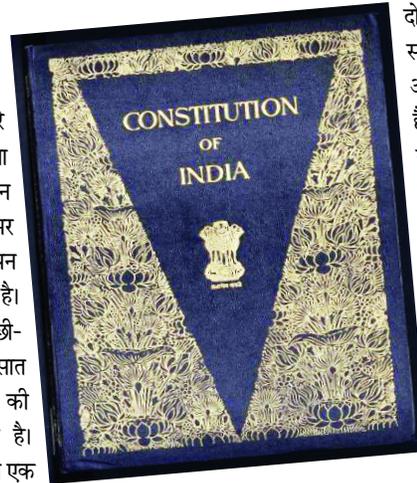
लिखित संविधान है। वर्तमान में, भारत का संविधान 465 अनुच्छेद जो 25 भागों और 12 अनुसूचियों में लिखित है। समय समय पर संविधान में कई संशोधन किए गए हैं। जैसे, 42 वें संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा कई बदलाव किए गए। संघ और राज्यों दोनों के लिए एक ही संविधान भारत में संघ और राज्य दोनों ही के लिए एक ही संविधान है। संविधान एकता और राष्ट्रवाद के आदर्शों के सम्मिलन को बढ़ावा देता है। एकल संविधान सिर्फ भारत की संसद को संविधान में बदलाव करने की शक्ति प्रदान करता है। यह संसद को नए राज्य के गठन या मौजूदा राज्य को समाप्त करने या उसकी सीमा में बदलाव करने की शक्ति प्रदान करता है।

संविधान के स्रोत भारतीय संविधान ने विभिन्न देशों से प्रावधान उधार लिए हैं और देश की उपयुक्तता और जरूरतों के

लिहाज से उसमें संशोधन किया है। भारत के संविधान का संरचनात्मक भाग भारत सरकार अधिनियम, 1935 से लिया गया है। सरकार की संसदीय प्रणाली और कानून के नियम जैसे प्रावधान यूनाइटेड किंगडम से लिए गए हैं। कठोरता और लचीलापन भारत का संविधान न तो कठोर है और न ही लचीला। कठोर संविधान का अर्थ है कि संशोधन के लिए विशेष प्रक्रियाओं की जरूरत होती है जबकि लचीला संविधान वह होता है जिसमें संशोधन आसानी से किया जा सकता है।



सबसे लम्बा लिखित संविधान है। हमारे देश में लोकतंत्रात्मक गणराज्य स्थापित है। इसकी सम्प्रभुता, और धर्म-निरपेक्षता इसे दूसरों से अलग करती है। संविधान को निर्मित करने के लिए संविधान-सभा में अलग-अलग समितियां बनाई गयी थी। इसका मसौदा बनाने का जिम्मा प्रारूप-समिति को दिया गया था, जिसके अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे। देश का कानून ही देश का संविधान कहलाता है। इसे धर्म-शास्त्र, विधि-शास्त्र आदि नामों से भी जाना जाता है। हमारा संविधान 26 नवंबर 1949 को अंगीकृत कर लिया गया था, और सम्पूर्ण भारत में इसके एक महीने बाद, 26 जनवरी 1950 से प्रभाव में आया। इसे पूर्णतः बनने में 2 साल, 11 महीने और 18 दिनों का वक़्त लगा। इसके लिए 114 दिनों



जाय हिन्द की सेना

देश की आजादी के बाद भारतीय सेना पांच बड़े युद्ध लड़ चुकी है, जिनमें चार पाकिस्तान के खिलाफ और एक चीन के साथ लड़ा था। देश की आजादी के बाद 1947-48 में हुए भारत-पाक युद्ध को 'कश्मीर युद्ध' नाम से भी जाना जाता है, जिसके बाद कश्मीर का भारत में विलय हुआ था। 1962 में चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी द्वारा धोखे से थाग-ला-रिज पर भारतीय सेना पर हमला बोल दिया

सेना के ध्वज का बैकग्राउंड लाल रंग का है, ऊपर बायीं ओर तिरंगा झंडा, दायीं ओर भारत का राष्ट्रीय चिह्न और तलवार हैं। सेना दिवस के अवसर पर सेना प्रमुख को सलामी दी जाती रही है लेकिन 2020 में पहली बार सेना प्रमुख के स्थान पर सीडीएस जनरल बिपिन रावत को सलामी दी गई थी।

सेना दिवस के महत्वपूर्ण अवसर पर चीन द्वारा वर्तमान में लगातार पेश की जा रही चुनौतियों के दौर में भारतीय

भारतीय सेना के 73वें स्थापना दिवस विशेष

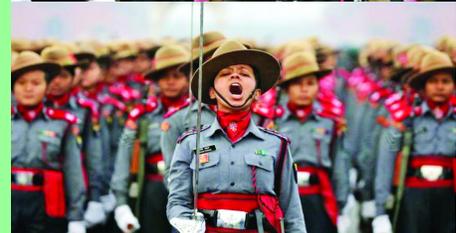


सेना की निरन्तर बढ़ती ताकत का उल्लेख करना बेहद जरूरी है। भारतीय सैन्यबल में करीब 13.25 लाख सक्रिय सैनिक, 11.55 लाख आरक्षित बल तथा 20 लाख अर्धसैनिक बल हैं। भारतीय थलसेना में 4426 टैंक (2410 टी-72, 1650 टी-90, 248 अर्जुन एमके-1, 118 अर्जुन एमके-2), 5067 तोपें, 290 स्वचालित तोपें, 292 रॉकेट तोपें तथा 8600 बख्तरबंद वाहन शामिल हैं। पूरी दुनिया आज भारतीय सेना का लोहा मानती है। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि

भारतीय थल सेना का गठन ईस्ट इंडिया कम्पनी की सैन्य टुकड़ी के रूप में कोलकाता में 1776 में हुआ था, जो बाद में ब्रिटिश भारतीय सेना बनी और देश की आजादी के बाद इसे 'भारतीय थल सेना' नाम दिया गया। भारतीय सेना की 53 छावनियां और 9 आर्मी बेस हैं और चीन तथा अमेरिका के साथ भारतीय सेना दुनिया की तीन सबसे बड़ी सेनाओं में शामिल है। हमारी सेना संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में सबसे बड़ी योगदानकर्ताओं में से एक है। यह दुनिया की कुछेक ऐसी सेनाओं में से एक है, जिसने कभी भी अपनी ओर से युद्ध की शुरुआत नहीं की। भारतीय

भारतीय थलसेना हर परिस्थिति में चीनी सेना से बेहतर और अनुभवी है, जिसके पास युद्ध का बड़ा अनुभव है, जो कि विश्व में शायद ही किसी अन्य देश के पास हो। भले ही चीन के पास भारत से ज्यादा बड़ी सेना और सैन्य साजो-सामान है लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में दुनिया में किसी के लिए भी इस तथ्य को नजरअंदाज करना संभव नहीं हो सकता कि भारत की सेना को अब धरती पर दुनिया की सबसे खतरनाक सेना माना जाता है और सेना के विभिन्न अंगों के पास ऐसे-ऐसे खतरनाक हथियार हैं, जो चीनी सेना के पास भी नहीं हैं। धरती पर लड़ी जाने वाली लड़ाइयों के लिए भारतीय सेना की गिनती दुनिया की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में होती है और कहा जाता है कि अगर किसी सेना में अंग्रेज अधिकारी, अमेरिकी हथियार और भारतीय सैनिक हों तो उस सेना को युद्ध के मैदान में हराना असंभव होगा।

प्रतिवर्ष 15 जनवरी को भारतीय सेना दिवस मनाया जाता है और हम इस वर्ष 15 जनवरी को 73वां सेना



दिवस मना रहे हैं। सेना दिवस के अवसर पर पूरा दश थलसेना के अदम्य साहस, जांबाज सैनिकों की वीरता, शौर्य और उसकी शहादत को याद करता है। इस विशेष अवसर पर जवानों के दस्ते और अलग-अलग रेजीमेंट की परेड के अलावा झांकियां भी निकाली जाती हैं और उन सभी बहादुर सेनानियों को सलामी दी जाती है, जिन्होंने देश और लोगों की सलामती के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। 15 जनवरी को ही यह दिवस मनाए जाने का विशेष कारण यही है कि आज ही के दिन वर्ष 1949 में लेफ्टिनेंट जनरल केएम करियप्पा भारतीय सेना के पहले कमांडर-इन-चीफ बने थे। उन्होंने 15 जनवरी 1949 को ब्रिटिश जनरल फ्रांसिस बुचर से भारतीय सेना की कमान संभाली थी। जनरल फ्रांसिस बुचर भारत के आखिरी ब्रिटिश कमांडर-इन-चीफ थे।



भारत का स्वत्व है हिन्दी

भाषाओं के मामले में भारत को विश्व का सबसे बड़ा देश निरूपित किया जाए तो कोई आतिशयोक्ति नहीं होगी। भारत दक्षिण के राज्यों में अपनी एक भाषा है, जिसे हम विविधता के रूप में प्रचारित करते हैं। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि भाषा के मामले में हम अत्यंत समृद्ध हैं। निज भाषा उन्नति, सब उन्नति को मूल, बिना निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूला। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र की यह पंक्तियां निश्चित रूप से यह बोध कराने के लिए पर्याप्त हैं कि अपनी भाषा के माध्यम से हम किसी भी समस्या का समाधान खोज सकते हैं। यह सर्वकालिक सत्य है कि कोई भी देश अपनी भाषा में ही अपने मूल स्वत्व को प्रकट कर सकता है। किसी भी देश की आत्मा उसका स्वत्व होती है, बिना स्वत्व के कोई भी देश अपने आधार पर जीवित नहीं रह सकता। हिंदी भी एक ऐसा आधार है, जिसे हम भारत का स्वत्व कहते हैं। वह हमारे भारत का निजत्व है, निजी भाषा है। निज भाषा देश की उन्नति का मूल होता है। निज भाषा को नकारना अपनी संस्कृति को विस्मरण करना है। जिसे अपनी भाषा पर गौरव का बोध नहीं होता, वह निश्चित ही अपनी जड़ों से कट जाता है और जो जड़ों से कट गया उसका अंत हो जाता है। भारत का परिवेश निसंदेह हिंदी से भी जुड़ा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि हिंदी भारत का प्राण है, हिंदी भारत का स्वाभिमान है, हिंदी भारत का गौरवगान है। भारत के अस्तित्व का भान कराने वाले प्रमुख बिंदुओं में हिंदी का भी स्थान है। हिंदी भारत का अस्तित्व है। आज हम जाने अनजाने में जिस प्रकार से भाषा के साथ मजाक कर रहे हैं, वह अभी हमें समझ में नहीं आ रहा होगा, लेकिन भविष्य के लिए यह अत्यंत दुखदायी होने वाला है।

वर्तमान में प्रायः देखा जा रहा है कि हिंदी की बोलचाल में अंग्रेजी और उर्दू शब्दों का समावेश बेखटके हो रहा है। इसे हम अपने स्वभाव का हिस्सा मान चुके हैं, लेकिन हम विचार करें कि क्या यह हिंदी के शब्दों की हत्या नहीं है। हम विचार करें कि जब भारत में अंग्रेजी नहीं थी, तब हमारा देश किस स्थिति में था। हम अत्यंत समृद्ध थे, इतने समृद्ध कि विश्व के कई देश भारत की इस समृद्धि से जलन रखते थे। इसी कारण विश्व के कई देशों ने भारत की इस समृद्धि को नष्ट करने का उस समय तक षड्यंत्र किया, जब तक वे सफल नहीं हो गए। लेकिन एक बात ध्यान में रखना होगा कि हम अंग्रेजी को केवल एक भाषा के तौर पर स्वीकार करें। भारत के लिए अंग्रेजी केवल एक भाषा ही है। जब हम हिंदी को मातृभाषा का दर्जा देते हैं तो यह भाव हमारे स्वभाव में प्रकट होना चाहिये। हिंदी हमारा स्वत्व है। भारत का मूल है।

इसलिए कहा जा सकता है कि हिंदी हृदय की भाषा है। भाषाओं के मामले में भारत को विश्व का सबसे बड़ा देश निरूपित किया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारत दक्षिण के राज्यों में अपनी एक भाषा है, जिसे हम विविधता के रूप में प्रचारित करते हैं। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि भाषा के मामले में हम अत्यंत समृद्ध हैं। लेकिन कभी कभी यह भी देखा जाता है कि राजनीतिक कारणों के प्रभाव में आकर दक्षिण भारत के कुछ लोग हिंदी का विरोध करते हैं।

भारत में हिंदी दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है। भारत में अंग्रेजी दिवस और उर्दू दिवस क्यों नहीं मनाया जाता। इसके पीछे यूं तो कई कारण हैं, लेकिन वर्तमान का अध्ययन किया जाए तो यही परिलक्षित होता है कि आज हम स्वयं ही हिंदी के शब्दों की हत्या करने पर उतारू हो गए हैं। ध्यान रखना होगा कि आज जिस प्रकार से हिंदी के शब्दों की हत्या हो रही है, कल पूरी हिंदी भाषा की भी हत्या हो सकती है। हम विचार करें कि हिंदी भारत के स्वर्णिम अतीत का हिस्सा है। हमें हमारी संस्कृति का हिस्सा है। ऐसा हम अंग्रेजी के बारे में कदापि नहीं बोल सकते। आज हिंदी को पहले की भांति वैश्विक धरातल प्राप्त हो रहा है। विश्व के कई देशों में हिंदी के प्रति आकर्षण का आत्मीय भाव संचरित हुआ है।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस पर विशेष



इस विरोध को जन सामान्य का कुछ भी लेना देना नहीं होता, लेकिन ऐसा प्रचारित करने का प्रयास किया जाता है जैसे पूरा समाज ही विरोध कर रहा हो। दक्षिण भारत के राज्यों में जो भाषा बोली जाती है, उसका हिंदी भाषियों ने सदैव सम्मान किया है। भाषा और बोली तौर पर भारत की एक विशेषता यह भी है कि चाहे वह दक्षिण भारत का राज्य हो या फिर उत्तर भारत का, हर प्रदेश का नागरिक अपने शब्दों के उच्चारण मात्र से यह प्रदर्शित कर देता है कि वह किस राज्य का है। प्रायः सुना भी होगा कि भाषा को सुनकर हम उसका राज्य या अंचल तक बता देते हैं। यह भारत की बेहतरीन खूबसूरती ही है।

जहां तक राष्ट्रीयता का सवाल आता है तो हर देश की पहचान उसकी भाषा भी होती है। हिन्दी हमारी राष्ट्रीय पहचान है। दक्षिण के राज्यों के नागरिकों की प्रादेशिक पहचान के रूप में उनकी अपनी भाषा हो सकती है, लेकिन राष्ट्रीय पहचान की बात की जाए तो वह केवल हिंदी ही हो सकती है। हालांकि आज दक्षिण के राज्यों में हिंदी को जानने और बोलने की उत्सुकता बढ़ी है, जो उनके राष्ट्रीय होने को प्रमाणित करता है। आज पूरा भारत राष्ट्रीय भाव की तरफ कदम बढ़ा रहा है। हिन्दी के प्रति प्रेम प्रदर्शित हो रहा है।

आज हमें इस बात पर भी मंथन करना चाहिए कि

वे भारत के बारे में गहराई से अध्ययन करना चाह रहे हैं। विश्व के कई प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम संचालित किए जाने लगे हैं। इतना ही नहीं आज विश्व के कई देशों में हिंदी के संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं। अमेरिका में एक साप्ताहिक समाचार पत्र उल्लेखनीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। हिंदी संचेतना नामक पत्रिका भी विदेश से प्रकाशित होने वाली प्रमुख पत्रिका के तौर पर स्थापित हो चुकी है। ऐसे और भी प्रकाशन हैं, जो वैश्विक स्तर पर हिंदी की समृद्धि का प्रकाश फैला रहे हैं। भारत के साथ ही सूरीनाम फिजी, त्रिनिदाद, गुआना, मॉरीशस, थाईलैंड व सिंगापुर इन 7 देशों में भी हिंदी वहां की राजभाषा या सह राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुकी है। इतना ही नहीं आबूधाबी में भी हिंदी को तीसरी आधिकारिक भाषा की मान्यता मिल चुकी है। आज विश्व के लगभग 44 ऐसे देश हैं, जहां हिंदी बोलने का प्रचलन बढ़ रहा है। सवाल यह है कि जब हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता बढ़ रही है, तब हम अंग्रेजी के पीछे क्यों भाग रहे हैं। हम अपने आपको भुलाने की दिशा में कदम क्यों बढ़ा रहे हैं। हिंदी के सहारे ही हमारी वैश्विक पहचान है। हम हिंदी को अपनाएं, अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। यही हमारा स्वत्व है और यही हमारी संस्कृति है।

कठोर फैसले लेने के लिए जानी जाती थीं आयरन लेडी इंदिरा गांधी

आयरन लेडी के रूप में विश्व विख्यात श्रीमती इंदिरा गांधी का जन्म देश के एक आर्थिक एवं बौद्धिक रूप से समृद्ध परिवार में 19 नवंबर 1917 को इलाहाबाद के आनंद भवन में हुआ था। उनके पिता पं. जवाहर लाल नेहरू तथा माता का नाम श्रीमती कमला नेहरू तथा दादा का नाम पं. मोती लाल नेहरू था। इनके दादा देश के जाने-माने वकील थे। इन्हें दादा से ज्यादा लाड़-दुलार मिला क्योंकि यह घर की इकलौती संतान थी।

उनका पूरा नाम था- इंदिरा प्रियदर्शिनी। उन्हें एक घरेलू नाम भी मिला था जो इंदिरा का संक्षिप्त रूप इंदु था। उनका इंदिरा नाम उनके दादा पंडित मोतीलाल नेहरू ने रखा था। जिसका मतलब होता है कांति, लक्ष्मी एवं शोभा। इस नाम के पीछे की वजह यह थी कि उनके दादाजी को लगता था कि पौत्री के रूप में उन्हें मां लक्ष्मी और दुर्गा की प्राप्ति हुई है। इंदिरा को उनका गांधी उपनाम गुजराती पारसी फिरोज गांधी से विवाह के बाद मिला था। इंदिरा जी को बचपन में भी एक स्थिर पारिवारिक जीवन का अनुभव नहीं मिल पाया था। इसकी वजह यह थी कि 1936 में 18 वर्ष की उम्र में ही उनकी मां श्रीमती कमला नेहरू का तपेदिक के कारण एक लंबे संघर्ष के बाद निधन हो गया था और पिता हमेशा स्वतंत्रता आंदोलन में व्यस्त रहे।

इंदिरा की प्रारंभिक शिक्षा उनके आवास आनंद भवन में ही हुई। फिर कविवर रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांति निकेतन में कुछ समय तक शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद वह उच्च शिक्षा हेतु इंग्लैंड गईं जहाँ उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन करके वह भारत आ गईं। इंदिरा जी शुरू से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहीं। बचपन में उन्होंने महात्मा गांधी की प्रेरणा से बाल चरखा संघ की स्थापना की और असहयोग आंदोलन के दौरान कांग्रेस पार्टी की सहायता के लिए 1930 में बच्चों के सहयोग से वानर सेना का निर्माण किया। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय सहभागिता के लिए सितम्बर 1942 में उन्हें जेल में डाल दिया गया। 1947 में इन्होंने गांधी जी के मार्गदर्शन में दिल्ली के दंगा प्रभावित क्षेत्रों में कार्य किया। पंडित नेहरू के देश प्रथम प्रधानमंत्री बने थे। 1950 के दशक में उन्होंने पंडित नेहरू के सहायक के रूप में भी कार्य किया। लंदन में अध्ययन के दौरान ही इनकी मुलाकात फिरोज गांधी से हुई थी। उन्होंने 26 मार्च 1942 को फिरोज गांधी से विवाह किया। उनके दो पुत्र राजीव तथा संजय थे। 1960 में उनके पति फिरोज गांधी का स्वर्गवास हो गया। 27 मई 1964 में नेहरू जी की मृत्यु हो गयी। लालबहादुर शास्त्री देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। 11 जनवरी 1966 को भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की असामयिक मृत्यु के बाद 24

जनवरी 1966 को इंदिरा गांधी भारत की तीसरी और प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनीं। इसके बाद तो वह लगातार तीन बार 1967-1977 और फिर चौथी बार 1980-84 देश की प्रधानमंत्री बनीं। 1967 के चुनाव में वह बहुत ही कम बहुमत से जीत सकी थीं लेकिन 1971 में फिर से वह भारी बहुमत से प्रधानमंत्री बनीं और 1977

राष्ट्रपति चुनाव में कांग्रेस पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार श्री नीलम संजीव रेड्डी की जगह स्वतंत्र उम्मीदवार श्री वी.वी. गिरी को राष्ट्रपति चुनाव जीताकर उन्होंने अपनी अलग छवि बनायी। इंदिरा गांधी 16 वर्ष देश की प्रधानमंत्री रहीं और उनके शासनकाल में कई उतार-चढ़ाव आए। जय प्रकाश नारायण ने इंदिरा गांधी की



तक रहीं। 1977 के बाद वह 1980 में एक बार फिर प्रधानमंत्री बनीं और 1984 तक प्रधानमंत्री के पद पर रहीं। इंदिरा गांधी ने 1971 के भारत पाक युद्ध में विश्व शक्तियों के सामने न झुकने के नीतिगत और समयानुकूल निर्णय क्षमता से पाकिस्तान को परास्त किया और बांग्लादेश को मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र भारत को एक नया गौरवपूर्ण क्षण दिलवाया। दृढ़ निश्चयी और किसी भी परिस्थिति से जूझने और जीतने की क्षमता रखने वाली प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने न केवल इतिहास बल्कि पाकिस्तान को विभाजित कर दक्षिण एशिया के भूगोल को ही बदल डाला और 1962 के भारत चीन युद्ध की अपमानजनक पराजय को कड़वाहट धूमिल कर भारतीयों में जोश का संचार किया। आधुनिक भारत के निर्माता श्री जवाहर लाल नेहरू ने भारत में कई महत्वपूर्ण पहल कीं, लेकिन उन्हें अमली जामा इंदिरा गांधी ने पहनाया। चाहे रजवाड़ों के प्रिवीपर्स समाप्त करना, बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो अथवा कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण... इनके जरिए उन्होंने अपने आपको गरीबों और आम आदमी का समर्थक साबित करने की सफल कोशिश की। ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास के लिए बैंकों का विस्तार ग्रामीण भारत में काफी हुआ। 1971 का चुनाव उन्होंने -गरीबी हटाओ- के नारे के बलबूते जीता था। चौथे

सरकार के विरुद्ध अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ किया। इस अस्थिरता के चलते 1975 में आपातकाल लागू करके अपने सभी राजनीतिक विरोधियों को जेलों में डाल दिया। इस कठोर फैसले को लेकर इंदिरा गांधी को भारी विरोध-प्रदर्शन और तीखी आलोचनाएं झेलनी पड़ी थीं। हालांकि कांग्रेस को 1977 के चुनाव में गठबंधन पार्टी से हार का सामना करना पड़ा, लेकिन 1980 में उन्होंने भारी बहुमत से वापसी की। फिर 1983 में उन्होंने नई दिल्ली में निर्गुट सम्मेलन और उसी साल नवंबर में राष्ट्रमंडल राष्ट्रध्यक्षों के सम्मेलन का आयोजन किया। इनसे भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि सशक्त हुई। एक ऐसी महिला जो न केवल भारतीय राजनीति पर छाई रहीं बल्कि विश्व राजनीति के क्षितिज पर भी वह विलक्षण प्रभाव छोड़ गईं। यही वजह है कि उन्हें आयरन लेडी अर्थात् लौह महिला के नाम से संबोधित किया जाता है। आज इंदिरा गांधी को सिर्फ इस कारण नहीं जाना जाता कि वह पंडित जवाहरलाल नेहरू की बेटी थीं बल्कि इंदिरा गांधी अपनी प्रतिभा और राजनीतिक दृढ़ता के लिए विश्व राजनीति के इतिहास में हमेशा जानी जाती रहेंगी। उन्हें विश्व भर के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया था। विश्वविख्यात कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें विशेष योग्यता प्रमाण दिया गया था।

गुरु नानक देव जी के उपदेशों को अपनाएँ, जीवन सफल बनाएँ

गुरु नानक देवजी सिखों के पहले गुरु थे। अंधविश्वास और आडंबरो के कट्टर विरोधी गुरु नानक का प्रकाश उत्सव (जन्मदिन) कार्तिक पूर्णिमा को मनाया जाता है हालांकि उनका जन्म 15 अप्रैल 1469 को हुआ था। गुरु नानक जी पंजाब के तलवंडी नामक स्थान पर एक किसान के घर जन्मे थे। उनके मस्तक पर शुरू से ही तेज आभा थी। तलवंडी जोकि पाकिस्तान के लाहौर से 30 मील पश्चिम में स्थित है, गुरु नानक का नाम साथ जुड़ने के बाद आगे चलकर ननकाना कहलाया। गुरु नानक के प्रकाश उत्सव पर प्रति वर्ष भारत से सिख श्रद्धालुओं का जत्था ननकाना साहिब जाकर वहाँ अरदास करता है।

गुरु नानक का बचपन

वह बचपन से ही गंभीर प्रवृत्ति के थे। बाल्यकाल में जब उनके अन्य साथी खेल कूद में व्यस्त होते थे तो वह अपने नेत्र बंद कर चिंतन मनन में खो जाते थे। यह देख उनके पिता कालू एवं माता तृप्ता चिंतित रहते थे। उनके

पिता ने पंडित हरदयाल के पास उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा लेकिन पंडितजी बालक नानक के प्रश्नों पर निरुत्तर हो जाते थे और उनके ज्ञान को देखकर समझ गए कि नानक को स्वयं ईश्वर ने पढ़ाकर संसार में भेजा है। नानक को मौलवी कुतुबुद्दीन के पास पढ़ने के लिए भेजा गया लेकिन वह भी नानक के प्रश्नों से निरुत्तर हो गए। नानक जी ने घर बार छोड़ दिया और दूर दूर के देशों में भ्रमण किया जिससे उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने में उन्हें बड़ी सहायता मिली। अंत में कबीरदास की निर्गुण उपासना का प्रचार उन्होंने पंजाब में आरंभ किया और वे सिख संप्रदाय के आदिगुरु हुए।

गुरु नानक जी का परिवार

गुरु नानक जी का विवाह सन 1485 में बटाला

निवासी कन्या सुलक्खनी से हुआ। उनके दो पुत्र श्रीचन्द और लक्ष्मीचन्द थे। गुरु नानक के पिता ने उन्हें कृषि, व्यापार आदि में लगाना चाहा किन्तु यह सारे प्रयास नाकाम साबित हुए। उनके पिता ने उन्हें घोड़ों का व्यापार करने के लिए जो राशि दी, नानक जी ने उसे साधु सेवा में लगा दिया। कुछ समय बाद नानक जी अपने बहनोई के पास सुल्तानपुर चले गये। वहाँ वे सुल्तानपुर के गवर्नर दौलत खां के यहाँ मादी रख लिये गये। नानक जी अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ करते थे और जो भी आय होती थी उसका ज्यादातर हिस्सा साधुओं और गरीबों को दे देते थे।

परमात्मा ने पिलाया अमृत

सिख ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि गुरु नानक नित्य बेई नदी में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन वे स्नान करने के पश्चात वन में अन्तर्ध्यान हो गये। उस समय उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। परमात्मा ने उन्हें अमृत पिलाया और कहा- मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ, जो तुम्हारे सम्पर्क में आयेगे वे भी आनन्दित होंगे। जाओ दान दो, उपासना करो, स्वयं नाम लो और दूसरों से भी नाम स्मरण कराओ। इस घटना के पश्चात वे अपने परिवार का भार अपने श्वसुर को सौंपकर विचरण करने निकल पड़े और धर्म का प्रचार करने लगे। उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही विदेशों की भी यात्राएँ कीं और जन सेवा का उपदेश दिया। बाद में वे करतारपुर में बस गये और 1521 ई. से 1539 ई. तक वहीं रहे।

गुरु के लंगर की शुरुआत

गुरु नानक देवजी ने जात-पात को समाप्त करने और

गुरु नानक देव जी के 10 उपदेश

1. ईश्वर एक है।
2. सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो।
3. ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है।
4. ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता।
5. ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए।
6. बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं।
7. सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए।
8. मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से ज़रूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए।
9. सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं।
10. भोजन शरीर को ज़िंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ-लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है।

सभा का समान दृष्टि से देखन को दिशा में कदम उठाते हुए लंगर की प्रथा शुरू की थी। लंगर में सब छोटे-बड़े, अमीर-गरीब एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। आज भी गुरुद्वारों में उसी लंगर की व्यवस्था चल रही है, जहाँ हर समय हर किसी को भोजन उपलब्ध होता है। इस में सेवा और भक्ति का भाव मुख्य होता है। नानक देवजी का जन्मदिन गुरु पूर्व के रूप में मनाया जाता है। तीन दिन पहले से ही प्रभात फेरियाँ निकाली जाती हैं। जगह-जगह भक्त लोग पानी और शरबत आदि की व्यवस्था करते हैं। गुरु नानक जी का निधन सन 1539 ई. में हुआ। इन्होंने गुरुगद्दी का भार गुरु अंगददेव (बाबा लहना) को सौंप दिया और स्वयं करतारपुर में ज्योति में लीन हो गए।

गुरु नानक जी के उपदेश

गुरु नानक जी ने अपने अनुयायियों को दस उपदेश दिए जो कि सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे। गुरु नानक जी की शिक्षा का मूल निचोड़ यही है कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है। मूर्ति-पूजा आदि निरर्थक है। नाम-स्मरण सर्वोपरि तत्त्व है और नाम गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत-प्रोत है।

12वीं पास के बाद इन कोर्स को करने पर मिलेगी गारंटीड जॉब

जब छात्र 12वीं पास करते हैं तो उनके सामने सबसे पहले यही सवाल होता है कि अब क्या करें। दरअसल, यही समय होता है, जब वह वास्तव में अपने करियर की नींव रखते हैं। इस दौरान वह सबसे ज्यादा दुविधा में होते हैं। जहां कुछ छात्र 12वीं के बाद ग्रेजुएशन और फिर पोस्ट ग्रेजुएशन करना पसंद करते हैं तो वहीं कुछ छात्र चाहते हैं कि उन्हें जल्दी से जल्दी जॉब मिले। इसके लिए वह कुछ कोर्स का सहारा ले सकते हैं। दरअसल, आजकल ऐसे कई कोर्स हैं, जिन्हें 12वीं के बाद करने से आपको अच्छी जॉब मिल सकती है। तो चलिए जानते हैं इन कोर्सेज के बारे में-

वेब डिजाइनिंग

आज के समय में इंटरनेट का इस्तेमाल काफी बढ़ गया है। इतना ही नहीं, हर व्यक्ति खुद को डिजिटल करते हुए अपना बिजनेस व काम इंटरनेट के जरिए सबको दिखाना चाहता है। जिसके कारण वेब डिजाइनर की मांग काफी बढ़ गई है। आप 12वीं के बाद इस कोर्स को कर सकते हैं। वैसे तो यह कोर्स लगभग एक साल का होता है, लेकिन आप इस फील्ड में तीन से छह महीने के शॉर्ट टर्म कोर्स करके भी जॉब के लिए अप्लाई कर सकते हैं।



इंटीरियर डिजाइनिंग

अगर आपको डिजाइनिंग व पेंटिंग करना पसंद है तो आप इंटीरियर डिजाइनिंग के क्षेत्र में हाथ आजमा सकते हैं। 12वीं के बाद आप किसी अच्छे इंस्टीट्यूट से इंटीरियर डिजाइनिंग का शॉर्ट टर्म कोर्स कर सकते हैं। इसके बाद आपके लिए जॉब पाना काफी आसान हो

जाएगा।

मेकअप आर्टिस्ट

आज के समय में मेकअप आर्टिस्ट की हर जगह डिमांड है। फिर चाहे बात न्यूज चैनल की हो या टीवी सीरियल की या फिल्मों की, मेकअप आर्टिस्ट की जरूरत पड़ती ही है। ऐसे में अगर आप अपने स्कूल के जरिए अच्छा खासा पैसा कमाना चाहते हैं तो मेकअप व हेयरस्टाइलिंग का कोर्स करें। यह कोर्स एक महीने से लेकर छह महीने तक का होता है। यह कोर्स करने के बाद आप कई जगह पर जॉब पा सकते हैं।

योगा एक्सपर्ट

पिछले कुछ सालों में लोगों का क्रेज योग की तरफ बढ़ा है। इसके साथ ही योगा एक्सपर्ट की मांग भी बढ़ी है। आज के समय में लोग योगा करना चाहते हैं, लेकिन किसी योग विशेषज्ञ की देख रेख में। आप भी 12वीं के बाद योग से संबंधित कोर्स करके अपना करियर शुरू कर सकते हैं। शुरूआत में आप किसी योगा सेंटर में जॉब कर सकते हैं और बाद में आप खुद का योगा सेंटर भी खोल सकते हैं।

घरेलू महिलाओं के लिए रोजगार के कई अवसर

आज के समय में अधिकतर महिलाएं वर्किंग हैं, लेकिन कुछ महिलाएं ऐसी भी हैं, जो फुल टाइम घर-परिवार की



जिम्मेदारी उठाना पसंद करती हैं। ऐसे में जॉब करने की जगह पूरा दिन घर को ही देती हैं। लेकिन घर पर रहकर भी अगर आप आर्थिक जिम्मेदारी में अपना सहयोग देना चाहती हैं तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। ऐसे कई पार्ट टाइम जॉब या काम हैं, जिसे महिलाएं घर से रहकर भी कर सकती हैं और अच्छी खासी आमदनी कर सकती हैं। तो चलिए जानते हैं ऐसे कहीं कुछ काम के बारे में-

ट्यूटर

अगर आपके पास दिन का समय खाली होता है तो आप उस समय अपने आस-पड़ोस के बच्चों को पढ़ा सकती हैं। वर्तमान समय में, बच्चों की पढ़ाई इतनी टफ होती जा रही है कि पैरेंट्स बच्चों के लिए ट्यूटर रखना पसंद करते हैं। अगर आप बच्चों को अच्छी तरह हैंडल करके उन्हें पढ़ा सकती हैं तो बतौर ट्यूटर काम कर सकती हैं।

कॉल सेंटर एजेंट

आज के समय कॉल सेंटर एजेंट बनने के लिए आपको नौ से पांच की जॉब करने की आवश्यकता नहीं है। टेवल से लेकर हॉस्पिटैलिटीज से जुड़ी कई कंपनियां अब घरेलू महिलाओं को भी यह काम मुहैया करा रही हैं। अगर आपको अपना अधिकतर समय फोन पर गुजारने और कस्टमर्स की मदद करने से कोई परहेज नहीं है तो आप घर से बतौर कॉल सेंटर एजेंट बनकर काम कर सकती हैं।

लेखक

फ्रीलांस राइटर भी एक ऐसी जॉब है, जिसे घर से ही किया जा सकता है। अगर आपकी लेखनी में दम है तो आप अपने लिखे लेखों, कविताओं, कहानियों व स्क्रिप्ट आदि को अखबार से लेकर मैगजीन, ऑनलाइन वेबसाइट आदि को भेज सकती हैं। एक बार अगर आपका लिखा गया लेख उन लोगों को पसंद आता है तो आपको घर बैठे ही काफी अच्छा काम मिल सकता है।

हॉबी को करियर

अगर आपके लिए बाहर जाकर जॉब करना संभव नहीं है तो आप अपनी हॉबी को ही घर से अपना करियर बना सकती हैं। मसलन, अगर आपको पेंटिंग पसंद है तो आप घर से ही पेंटिंग बना सकती हैं और फिर एक्जीबिशन लगा सकती हैं। इस तरह आप मेहंदी आर्टिस्ट बनकर या फिर मेकअप आर्टिस्ट बनकर भी घर से आसानी से काम कर सकती हैं।

ऑनलाइन जॉब

अगर आप घर बैठकर अच्छी आमदनी करना चाहती हैं तो ऑनलाइन जॉब सबसे बेहतर ऑप्शन है। जैसे आप वीडियो बनाकर यूट्यूब के जरिए आमदनी करें या फिर ऑनलाइन ट्यूटर, लैंग्वेज टीचर, योगा टीचर आदि बनकर काम कर सकती हैं। इसके अलावा आप ऑनलाइन सर्वे से लेकर ट्रांसक्रिप्शनिस्ट व ब्लॉगर आदि बनकर कमाई कर सकती हैं।

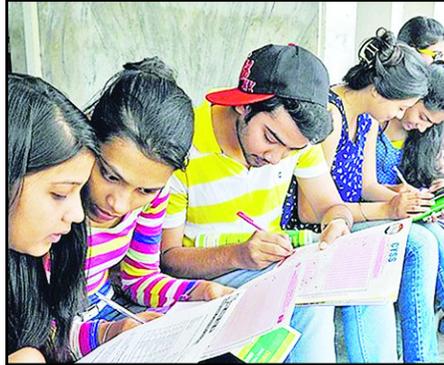
क्रिएटिव राइटिंग के जरिए बनाएं लेखन के क्षेत्र में करियर

रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके करियर की राह को आसान बनाती है। ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जिन्हें लिखना बहुत पसंद होता है। लेखन की कई विधाएं हैं, इन्हीं में से एक है क्रिएटिव राइटिंग। लेखन के क्षेत्र की यह विधा बेहद कलात्मक है। इस क्षेत्र से जुड़े लोग वास्तव में रचनात्मक लेखक हैं, जिन्हें लोग उपन्यासकार, कवि, गीतकार आदि विभिन्न नामों से जानते हैं। क्रिएटिव राइटर्स के पास लेखन में जादुई शक्ति होती है और अपने काम के माध्यम से, वे पाठकों को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें परेशान, घृणित, मंत्रमुग्ध या खुश कर सकते हैं। आमतौर पर लोग इस काम को आसान मानते हैं, जबकि लेखन बनाना एक लंबी प्रक्रिया है जिसमें बहुत अधिक शोध और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। अगर आप भी लेखन में अपनी रुचि रखते हैं तो इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा सकते हैं-

क्या है क्रिएटिव राइटिंग

रचनात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें एक लेखक का उद्देश्य गद्य और काव्य छंदों के माध्यम से अपनी

भावनाओं, भावनाओं, कल्पनाशील विचारों और विचारों को व्यक्त करना है। विभिन्न तरह के लेखन जैसे उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आत्मकथा, पटकथा



लेखन, कॉपी लेखन आदि को रचनात्मक लेखन कहा जाता है। रचनात्मक लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्राकृतिक दुनिया के चित्र बनाने के लिए बहुत अधिक कल्पना, अवलोकन और एक जन्मजात क्षमता की आवश्यकता होती है। विभिन्न विषयों और शैलियों पर लेख पढ़कर एक अच्छा लेखक बन सकता है हर तरह से जीवन का अनुभव करना और बहुत सारे मुहावरों, लहजों और स्थानीय भावों को सीखना और सुनना। वैसे तो क्रिएटिव राइटिंग कुछ लोगों को जन्मजात उपहार में

मिलती हैं, लेकिन रचनात्मक लेखन में कोर्स करके कोई भी अपने लेखन कौशल में सुधार कर सकता है। इसे भी पढ़ें-लॉग टर्म कोर्स की बजाय रोजगार पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं आज के युवा

योग्यता

करियर एक्सपर्ट कहते हैं कि रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके करियर की राह को आसान बनाती है। वैसे भारत में कुछ संस्थान रचनात्मक लेखन में शार्ट टर्म कोर्स कराते हैं और इन पाठ्यक्रम में आवेदन करने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता हायर सेकंडरी या 10+2 होनी चाहिए। इन पाठ्यक्रमों की न्यूनतम अवधि एक वर्ष है।

प्रमुख संस्थान

इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद
नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मीडिया स्टडीज, अहमदाबाद
कर्नाटक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी

अगर बनाना चाहते हैं अच्छा भविष्य तो 12 वीं बाद चुने यह करियर ऑप्शंस

12वीं के बाद आप अपने निर्णय को बदल सकते हैं और आने वाले दिनों में करियर को सही दिशा में ले जा सकते हैं। आखिर निर्णय बदलने का यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव जो है, इसलिए किसी विषय को जबरदस्ती अपने ऊपर न थोपें! 12वीं का एग्जाम क्लियर करने के बाद आप करियर के असली रोड पर आ जाते हो! वस्तुतः इस वक्त आप खुद को बालिंग मान सकते हो और आप इतने सक्षम भी हो जाते हो कि करियर के तमाम पहलुओं के बारे में खुद निर्णय ले सको। वैसे तो दसवीं के बाद ही 12वीं के जो सब्जेक्ट आप चुनते हो, उसी के अनुरूप आगे बढ़ना होता है, फिर भी 12वीं के बाद आपको बहुत सारे निर्णय लेते समय आवश्यक सावधानी रखनी ही चाहिए।

इसे भी पढ़ें- क्रिएटिव राइटिंग के जरिए बनाएं लेखन के क्षेत्र में करियर सच कहा जाए तो 12वीं पास करने के बाद आप समझ चुके होते हैं कि जो विषय आपने दसवीं के बाद चूज किया था, उसमें आपकी परफॉर्मंस और आपकी रुचि कितनी रही है! कल्पना कीजिए कि आप ने दसवीं के बाद मैथ्स स्ट्रीम चूज किया था, लेकिन उस स्ट्रीम में आप उम्मीद के अनुरूप बेहतर

प्रदर्शन नहीं कर पाए तो आप की रुचि भी उस सब्जेक्ट में कुछ खास नहीं रही है! ऐसी स्थिति में



12वीं के बाद आप अपने निर्णय को बदल सकते हैं और आने वाले दिनों में करियर को सही दिशा में ले जा सकते हैं। आखिर निर्णय बदलने का यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव जो है, इसलिए किसी विषय को जबरदस्ती अपने ऊपर न थोपें! ऐसे ही अगर आपको लगता है कि आपने बायोलॉजी का चुनाव किया था और डॉक्टरी पेशे में आपको काफी इंटरैस्ट है तो

सब्जेक्ट की एक-एक चीज पढ़ने में आपकी रुचि गहरी होती जा रही है, तो फिर सोने पर सुहागा कहा जाएगा। कई बार ऐसा देखा गया है कि बच्चे देखा देखी किसी एक कोर्स में दाखिला लेना शुरू कर देते हैं, जो बाद में उनके लिए बोझ बन जाता है। सोचने वाली बात है कि अगर आपके साथी का मैथ में इंटरैस्ट है और वह इंजीनियरिंग में एडमिशन ले रहा है तो कोई आवश्यक नहीं है कि आप भी इंजीनियरिंग में ही एडमिशन लें! खासकर तब, जब आपकी इंजीनियरिंग सब्जेक्ट्स में रुचि कम हो। ऐसे में हो सकता है कि सिविल सर्विसेज, लोक प्रशासन इत्यादि विषय आप को लुभाते हों, तो क्यों ना आप आईएएस अफसर बनने हेतु यूपीएससी की तैयारी करें! बता दें कि इंजीनियर, डॉक्टर बनने के अलावा दूसरे तमाम कोर्सेज भी आप चुन सकते हैं। इसमें आर्ट, ड्रामा जैसे तमाम नॉन ट्रेडिशनल कोर्सेज आजकल काफी चलन में हैं। बता दें कि डिफेंस सर्विसेज के ऑप्शन भी 12वीं के बाद आपके सामने उपलब्ध होता है। सेना में अफसर बनने का रास्ता एनडीए एग्जाम क्रेक करने के रास्ते ही होकर जाता है, जो आप 12वीं के बाद कर सकते हैं।



हर पीढ़ी के लिए आदर्श हैं शहीद ए आजम भगत सिंह

ज़रा याद करो कुर्बानी

23 मार्च है 1931 में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दी गयी थी. केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने के जिस मामले में भगत सिंह को फांसी की सजा हुई थी उसकी तारीख 24 मार्च तय की गयी थी. लेकिन भगत सिंह के समर्थन में इतने प्रदर्शन हो रहे थे कि अंग्रेज सरकार डरी हुई थी और उसने तय तारीख से पहली ही भगत सिंह, राजगुरु और सुखबीर को फांसी दे दी.

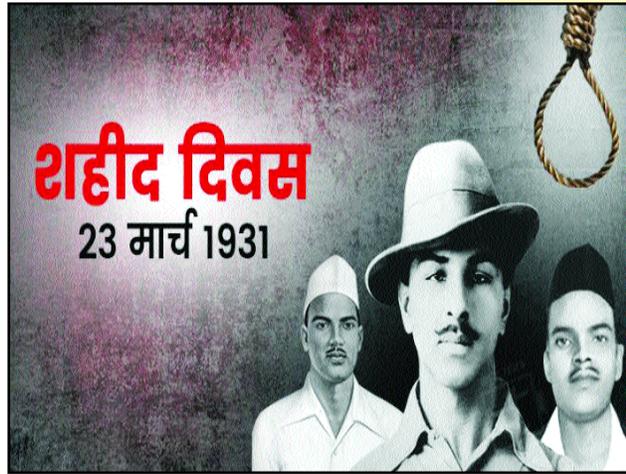
जब यह बात जेल से बाहर गयी, तो लोग बेचैन हो गये और सच जानने के लिए परेशान हो गये. अखबारों में खबर छपी थी कि भगत सिंह, राजगुरु और सुखबीर को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी दे दी गयी और इस तरह देश की आजादी के लिए ये तीन युवाओं ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी.

भगत सिंह को फांसी दिये जाने का पूरे देश में इतना विरोध हो रहा था कि अंग्रेज सरकार डरी हुई थी और कहीं कोई आंदोलन ना भड़क जाये इस डर से अंग्रेजों ने इनके शव के टुकड़े किये और फिर उन्हें बोरियों में भरकर

फिरोजपुर ले जाया गया और वहां इनके शव को मिट्टी का तेल डालकर जलाने का प्रयास किया गया, लेकिन यह संभव नहीं हो पाया क्योंकि ग्रामीणों ने देख लिया था, जिसके बाद अंग्रेज उनके शव को सतलुज नदी में फेंककर भाग गये, जिसके बाद ग्रामीणों ने उनके शव को एकत्रित कर उनका दाह संस्कार किया. भगत सिंह को किताबें पढ़ने का इतना शौक था कि एक बार उन्होंने अपने स्कूल के साथी जयदेव कपूर को लिखा था कि वो उनके लिए कार्ल लीबनेख

की मिलिट्रिज़्म, लेनिन की लेफ्ट विंग कम्युनिज्म और अपटन सिनक्लेयर का उपन्यास द स्पाइ कुलबीर के जरिए भिजवा दें।

भगत सिंह जेल की कठिन जिंदगी के आदी हो चले थे। उनकी कोठरी नंबर 14 का फर्श पक्का नहीं था। उस पर घास उगी हुई थी। कोठरी में बस इतनी ही जगह थी कि उनका पाँच फिट, दस इंच का शरीर बमुश्किल उसमें लेट पाए। मेहता के



जाने के थोड़ी देर बाद जेल अधिकारियों ने तीनों क्रांतिकारियों को बता दिया कि उनको वक्त से 12 घंटे पहले ही फांसी दी जा रही है। अगले दिन सुबह छह बजे की बजाय उन्हें उसी शाम सात बजे फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा। भगत सिंह मेहता द्वारा दी गई किताब के कुछ पन्ने ही पढ़ पाए थे। उनके मुंह से निकला, क्या आप मुझे इस किताब का एक अध्याय भी खत्म नहीं करने देंगे? भगत सिंह ने जेल के मुस्लिम सफ़ाई कर्मचारी बेबे से अनुरोध किया था कि वो उनके

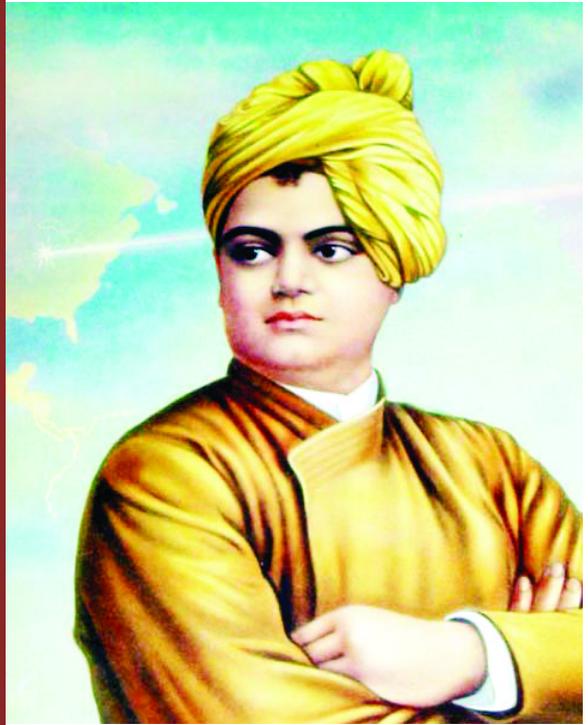
भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में शहीद ए आजम भगत सिंह एक ऐसा नाम हैं जिनके बिना शायद आजादी की कहानी अधूरी रहती। वह सिर्फ युवाओं ही नहीं, बल्कि बुजुर्गों और बच्चों के भी आदर्श हैं। लाहौर सेंट्रल जेल में उनके द्वारा लिखी गई 400 पृष्ठ की डायरी उनके विहंगम व्यक्तित्व की कहानी बयां करती है। वह लेखकों, रचनाकारों, इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों सबके लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं। भगत सिंह को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चमनलाल क्रांतिवीर मानने के साथ ही वैचारिक क्रांति का पुरोधा भी मानते हैं। उनका कहना है कि मात्र 23 साल की उम्र में शहीद हो जाने वाले इस युवा के बिना शायद आजादी की कहानी अधूरी कहलाती।

चमनलाल ने अपनी पुस्तक 'क्रांतिवीर भगत सिंह- अभ्युदय और भविष्य' में शहीद ए आजम के विहंगम व्यक्तित्व, कृतित्व और उनकी लोकप्रियता का व्यापक वर्णन किया है। उनका कहना है कि यदि भगत सिंह न होते तो आज देश के लिए शायद कोई ऐसा आदर्श न होता जिसने वैचारिक क्रांति के दम पर ऐसे शासन की नींव हिला दी जिसका साम्राज्य दुनियाभर में फैला था। उन्होंने बताया कि 23 मार्च 1931 को भगत सिंह की फांसी के बाद भारत का पत्रकारिता जगत उनसे संबंधित खबरों से अटा पड़ा रहता था। शहीद ए आजम की जीवनी लिखने के लिए जितेंद्रनाथ सान्याल को गोरी हुकूमत ने दो साल कैद की सजा सुनाई थी।

चमनलाल के अनुसार भगत सिंह ने जहां क्रांतिवीर के रूप में दुनिया के मानसपटल पर अपनी छाप छोड़ी, वहीं पत्रकार के रूप में भी उन्होंने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। उन्होंने कहा कि अलीगढ़ के शादीपुर गांव में स्थित स्कूल आज भी इस बात का गवाह है कि देश के लिए मर मिटने वाला यह नौजवान एक कुशल शिक्षक भी था। समाजशास्त्री स्वर्ण सहगल के अनुसार भगत सिंह के लिए क्रांति का मतलब हिंसा से नहीं, बल्कि वैचारिक परिवर्तन से था। बहरों को सुनाने के लिए सेंट्रल असेंबली में धमाका कर वह दुश्मन को उसी की भाषा में जवाब देने वाले योद्धा के रूप में नजर आते हैं। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए सांडर्स को गोली से उड़ा देना भी उनके इसी जज्बे का प्रतीक था। शहीद ए आजम के पोते (भतीजे बाबर सिंह संधु के पुत्र) यादविंदर सिंह ने कहा कि उनके दादा द्वारा लाहौर सेंट्रल जेल में लिखी गई डायरी इस बात की गवाह है कि उनके बिना भारत का स्वाधीनता संग्राम संभवतः अधूरा कहलाता। उन्होंने कहा कि भगत सिंह की इस डायरी में जहां वैचारिक तूफान दिखाई देता है, वहीं उनके द्वारा लिखे गए गणित और राजनीति के सूत्र उनके व्यक्तित्व की विशालता को दर्शाते हैं।

भारत में हर युवा की ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद एक ऐसे युगपुरुष थे जिनका रोम-रोम राष्ट्रभक्ति और भारतीयता से सराबोर था। उनके सारे चिंतन का केंद्रबिंदु राष्ट्र और राष्ट्रवाद था। भारत के विकास और उत्थान के लिए अद्वितीय चिंतन और कर्म इस तेजस्वी संन्यासी ने किया। उन्होंने कभी सीधे राजनीति में भाग नहीं लिया किंतु उनके कर्म और चिंतन की प्रेरणा से हजारों ऐसे कार्यकर्ता तैयार हुए जिन्होंने राष्ट्र रथ को आगे बढ़ाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस युवा संन्यासी ने निजी मुक्ति को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया था। बल्कि करोड़ों देशवासियों के उत्थान को ही अपना जीवन लक्ष्य बनाया। राष्ट्र और इसके दीन-हीन जनों की सेवा को ही वह ईश्वर की सच्ची पूजा मानते थे।

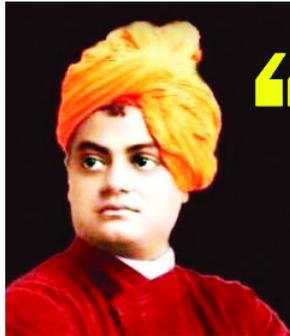


से

वा की इस भावना को उन्होंने प्रबल शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा था- 'भले ही मुझे बार-बार जन्म लेना पड़े और जन्म-मरण की अनेक यातनाओं से गुजरना पड़े लेकिन मैं चाहूंगा कि मैं उस एकमात्र ईश्वर की सेवा कर सकूँ, जो असंख्य आत्माओं का ही विस्तार है। वह और मेरी भावना से सभी जातियों, वर्गों, धर्मों के निर्धनों में बसता है, उनकी सेवा ही मेरा अभीष्ट है।' सवाल यह है कि स्वामी विवेकानंद में राष्ट्र और इसके पीड़ितजनों की सेवा की भावना का उद्गम क्या था? क्यों उन्होंने निजी मुक्ति से भी बढ़कर राष्ट्रसेवा को ही अपना लक्ष्य बनाया। अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से प्रेरित स्वामी विवेकानंद ने साधना प्रारंभ की और परमहंस के जीवनकाल में ही समाधि प्राप्त कर ली थी किंतु विवेकानंद का इस राष्ट्र के प्रति प्रारब्ध कुछ और ही था इसलिए जब स्वामी विवेकानंद ने दीर्घकाल तक समाधि अवस्था में रहने की इच्छा प्रकट की तो उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें एक महान लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हुए कहा- 'मैंने सोचा था कि तुम जीवन के एक प्रखर प्रकाश पुंज बनोगे और तुम हो कि एक साधारण मनुष्य की तरह व्यक्तिगत आनंद में ही डूब जाना चाहते हो, तुम्हें संसार में महान कार्य करने हैं, तुम्हें मानवता में आध्यात्मिक चेतना उत्पन्न करनी है और दीनहीन मानवों के दुखों का निवारण करना है।'

स्वामी विवेकानंद अपने आराध्य के इन शब्दों से अभिभूत हो उठे और अपने गुरु के वचनों में सदा के लिए खो गए। स्वयं रामकृष्ण परमहंस भी विवेकानंद के आश्वासन को पाकर अभिभूत हो गए और उन्होंने अपनी मृत्युशैया पर अंतिम क्षणों में कहा- 'मैं ऐसे एक व्यक्ति की सहायता के लिए बीस हजार बार जन्म लेकर अपने प्राण न्योछावर करना पसंद करूंगा।' जब 1886

में पूज्य रामकृष्ण परमहंस ने अपना नश्वर शरीर त्यागा तब उनके 12 युवा शिष्यों ने संसार छोड़कर साधना का पथ अपना लिया, लेकिन स्वामी विवेकानंद ने दरिद्र-नारायण की सेवा के लिए एक कोने से दूसरे कोने तक सारे भारत का भ्रमण किया। उन्होंने देखा कि देश की जनता भयानक गरीबी से घिरी हुई है और तब



“ ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं. वो हम ही हैं, जो अपनी आंखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है ”

उनके मुख से रामकृष्ण परमहंस के शब्द अनायास ही निकल पड़े- 'भूखे पेट से धर्म की चर्चा नहीं हो सकती।' किसी भी रूप में धर्म को इस सबके लिए जवाबदार माने बिना उनकी मान्यता थी कि समाज की यह दुरावस्था (गरीबी) धर्म के कारण नहीं हुई बल्कि इस कारण हुई कि समाज में धर्म को इस प्रकार आचरित नहीं किया गया जिस प्रकार किया जाना चाहिए था।' अपने रचनात्मक विचारों को मूर्तरूप देने के लिए 1 मई 1879 को स्वामीजी ने रामकृष्ण मिशन एसोसिएशन की स्थापना की और इसकी कार्यपद्धति इस प्रकार निश्चित की गई कि वास्तव में विवेकानंदजी ने रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन नाम से दो पृथक संस्थाएं गठित कीं यद्यपि इन दोनों संस्थाओं में परस्पर नीतिगत सामंजस्य था तथापि इनके उद्देश्य भिन्न किन्तु पूरक थे। रामकृष्ण मठ समर्पित संन्यासियों की श्रृंखला

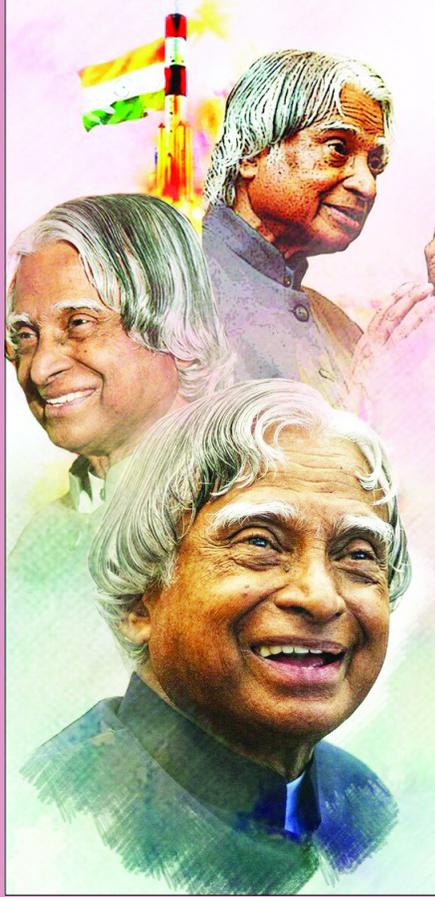
तैयार करने के लिए थी जबकि दूसरी रामकृष्ण मिशन जनसेवा की गतिविधियों के लिए थी। वर्तमान में इन दोनों संस्थाओं के विश्वभर में सैंकड़ों केंद्र हैं और ये संस्थाएं शिक्षा, चिकित्सा, संस्कृति, अध्यात्म और अन्यान्य सेवा प्रकल्पों के लिए विश्वव्यापी व प्रख्यात हो चुकी हैं शिकागो संभाषण के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को

भारत के विश्वगुरु होने का दृढ़ सन्देश दे चुके स्वामी जी को पश्चिमी मीडिया जगत साइक्लोनिक हिन्दू-के नाम से पुकारने लगा था। इन महान कार्यों की स्थापना के बाद स्वामी जी केवल पांच वर्ष ही जीवित रह पाए और मात्र चालीस वर्ष की अल्पायु में उनका दुखद निधन हो गया किन्तु इस अल्पायु के जीवन में उन्होंने सदियों के जीवन को क्रियान्वित कर दिया था। इस कार्य यज्ञ हेतु उन्होंने सात बार सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया था और पाया था कि जनता गहन अंधकार में भटकती हुई है। उन्होंने भारत में व्याप्त दो महान बुराइयों की ओर संकेत किया- पहली महिलाओं पर अत्याचार और दूसरी जातिवादी विषयों की चक्की में गरीबों का शोषण। उन्होंने देखा कि कोई निःशक्ति के चक्र से एक बार निम्न जाति में पैदा हो गया तो उसके उत्थान की कोई आशा नहीं रखती थी। उस समय तो निम्न जाति के लोग उस समय सड़क से गुजर भी नहीं सकते थे जिससे उच्च जाति के लोग आते-जाते थे। स्वामीजी ने जाति प्रथा की इस भीषण दुर्दशा को देखकर आर्त स्वर में कहा था- 'आह! यह कैसा धर्म है, जो गरीबों के दुख दूर न कर सके।'

जन-जन के थे डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम के धनुषकोडी गाँव में एक मध्यमवर्ग मुस्लिम परिवार में हुआ। डॉ. कलाम की प्रसिद्धि, महानता, युवा सोच और आजीवन शिक्षक की भूमिका में रहने की वजह से सयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके सम्मान में सन् 2010 में उनके जन्मदिवस 15 अक्टूबर को विश्व विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। डॉ. कलाम बच्चों से बहुत प्यार करते थे। स्कूली बच्चों को उनके जीवन से प्रेरणा मिले, इसी उद्देश्य से उनके जन्मदिन को विश्व विद्यार्थी दिवस के रूप में सयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मनाने का निर्णय लिया गया था। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी के पिता का नाम जैनुलाब्दीन था। पिता जैनुलाब्दीन न तो ज्यादा पढ़े-लिखे थे, और उनकी आर्थिक हालत भी अच्छी नहीं थी। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी की माता का नाम अशिअम्मा जैनुलाब्दीन था। जो कि एक गृहणी थीं। माता-पिता के संस्कार और उनकी कठिन परिश्रम की आदत ने ही उन्हें इतना महान बनाया। डॉ. कलाम के पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे और एक स्थानीय मस्जिद के इमाम भी थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। डॉ. अब्दुल कलाम जी पांच भाई बहनों में सबसे छोटे थे। डॉ. अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। बेशक उनके पिता पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी लगन, परिश्रम और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के लिए जीवन में बहुत काम आए। डॉ. अब्दुल कलाम जी को अपनी फीस भरने के लिए बचपन में अखबार तक बेचना पड़ा था। डॉ. कलाम ने 1958 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद डॉ. कलाम ने हावरक्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिये भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान (डीआरडीओ) में प्रवेश लिया। इसके बाद डॉ. अब्दुल कलाम 1962 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में आये जहाँ उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत, सूझबूझ और आसमान छू लेने वाली लगन और स्वप्न ने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी महती भूमिका निभाई। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी का सम्पूर्ण जीवन देशसेवा में बीता। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी को साल 2002 में सर्वसम्मति से पक्ष और विपक्ष की प्रमुख पार्टियों भाजपा और कांग्रेस सहित दर्जनों दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया। डॉ. कलाम को राष्ट्रपति बनाने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी खुद कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी के पास प्रस्ताव लेकर गए, जिसका उन्होंने पूर्ण रूप से समर्थन किया। नतीजतन देश की प्रमुख पार्टियों भाजपा

और कांग्रेस सहित दर्जनों दलों ने एकमत से डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी का नामांकन कराया और नतीजों में भी डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी 90 प्रतिशत के आसपास मतों से जीतकर देश के 11वें राष्ट्रपति बने और पूरे पांच साल उनका कार्यकाल शानदार रहा।



इसके बाद डॉ. कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के मानद फैलो, व एक विजिटिंग प्रोफेसर बन गए। राष्ट्रपति कार्यालय से मुक्ति के बाद डॉ. कलाम अंतिम सांस तक शिक्षक की भूमिका में रहे। जिससे देश के युवाओं को काफी कुछ सीखने को मिला। 27 जुलाई 2015 की शाम अब्दुल कलाम आईआईटी शिलोंग में "रहने योग्य ग्रह" पर एक व्याख्यान दे रहे थे जब उन्हें जोरदार दिल का दौरा पड़ा और व्याख्यान देते-देते बेहोश हो कर गिर पड़े। गंभीर हालत में डॉ. कलाम को बेथानी अस्पताल में आईसीयू में ले जाया गया और दो घंटे के बाद डॉक्टरों ने उनकी मृत्यु की पुष्टि कर दी। डॉ. कलाम जाते-जाते देश के लिए और देश की भावी पीढ़ियों के अपनी शिक्षाएं छोड़ कर गए। डॉ. कलाम देश के पहले कुंवारे राष्ट्रपति थे।

बेशक डॉ. कलाम कुंवारे थे लेकिन देश का हर युवा उनकी संतान की तरह था। देश के करोड़ों बच्चे और युवा उनकी संतान थे। डॉ. कलाम का बच्चों और युवाओं के प्रति खास लगाव था। इसी लगाव के कारण मिसाइल मैन बच्चों और युवाओं के दिल में खास जगह बनाते थे। डॉ. कलाम ने देश में मिसाइलों का निर्माण कर भारत की सुरक्षा को नए आयाम दिए। उन्होंने अपनी मिसाइलों द्वारा पाकिस्तान और चीन को अपनी जद में ला दिया। उन्ही की वजह से आज कोई भी देश भारत को आँख दिखाने से पहले दस बार सोचता है। यह डॉ. कलाम की ही दृढ़ इच्छाशक्ति थी जिन्होंने अत्याधुनिक रक्षा तकनीक की भारत की चाह को साकार किया। चाहें परमाणु हथियार हों, चाहें देश का अंतरिक्ष कार्यक्रम हो, चाहें बैलेस्टिक मिसाइल परियोजना, या लड़ाकू विमान परियोजना में उनके अतुलनीय योगदान ने उनके नाम को हर भारतीय की जुबां पर ला दिया। और उन्हें देश का हीरो बना दिया। डॉ. कलाम जी का सिद्धांत था कि जो लोग जिम्मेदार, सरल, ईमानदार एवं मेहनती होते हैं, उन्हें ईश्वर द्वारा विशेष सम्मान मिलता है। क्योंकि वे इस धरती पर उसकी श्रेष्ठ रचना हैं। उनका यह सिद्धांत उन्हीं पर लागू होता था, क्योंकि डॉ. कलाम वास्तव में एक सरल, ईमानदार और मेहनती व्यक्ति थे और ईश्वर द्वारा धरती पर के गयी श्रेष्ठ रचना थे और उनके जाने बाद ईश्वर के यहाँ भी उन्हें वही सम्मान मिलेगा जो उन्हें इस धरती पर मिला। डॉ. कलाम हमेशा कहते थे कि किसी के जीवन में उजाला डालो वास्तव में डॉ. कलाम भारत देश के लोगों के जीवन में अपनी महान उपलब्धियों और अपने विचारों का ऐसा उजाला डाल कर गए हैं जो कि देश के नौजवानों को सदा राह दिखाते रहेंगे। डॉ. कलाम सदा मुस्कराहट का परिधान पहने रहते थे उनकी मुस्कराहट उनकी आत्मा के गुणों को दर्शाती थी उनकी आत्मा सच में एक पवित्र आत्मा थी जिसे दैवीय शक्ति प्राप्त थी। डॉ. कलाम की ईमानदारी, शालीनता, सादगी और सौम्यता हर किसी का दिल जीत लेती थी। उनके जीवन दर्शन ने भारत के युवाओं को एक नई प्रेरणा दी। डॉ. कलाम करोड़ों लोगों के रोल मॉडल हैं। डॉ. कलाम सही मायनों में कर्मयोगी थे, कर्मयोगी शब्द का उदाहरण यदि भारत देश में है तो डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी का नाम अग्रिम पंक्ति में लिखा है। बतौर शिक्षक डॉ. कलाम अपने स्टूडेंट्स को सच्ची लगन से पढ़ाते थे। वे चाहते थे कि लोग उन्हें शिक्षक के रूप में अधिक जानें। आपको पता ही होगा कि अपने अंतिम समय 27 जुलाई, 2015 को भी डॉ. कलाम शिलोंग के आईआईएम कॉलेज में स्टूडेंट्स को पढ़ा रहे थे। लेकर में उन्होंने कुछ ही शब्द बोले थे कि दिल का दौरा पड़ने के कारण उन्हें चक्कर आ गया। तुरंत ही उन्हें हॉस्पिटल पहुंचाया गया किन्तु बचाया नहीं जा सका। वे 84 वर्ष के थे।

स्वस्थ रहना है तो ठण्ड के मौसम में ज़रूर करे इन फलों का सेवन

सर्दियों की शुरुआत हो चुकी है, इस मौसम में सेहत का खास ध्यान रखने की ज़रूरत होती है क्योंकि इस मौसम में अधिक ठण्ड होने के कारण बीमार पड़ने का खतरा बढ़ जाता है, इसलिए आज हम आपको कुछ ऐसे फलों के बारे में बताने जा रहे हैं जिनका सेवन करने से आप ठण्ड के मौसम में भी स्वस्थ रह सकते हैं.

1- वैसे तो सेब हमारी सेहत के लिए हमेशा ही फायदेमंद रहता है पर ठण्ड के मौसम में इसके लाभ दोगुने हो जाते हैं. अगर आप सर्दियों के मौसम में नियमित रूप से एक सेब का सेवन करते हैं तो इससे दिल मजबूत होता है साथ ही भूलने की बीमारी से भी छुटकारा मिलता है.

2- सर्दियों के मौसम में संतरे का सेवन भी बहुत फायदेमंद होता है, इसमें भरपूर मात्रा में विटामिन सी मौजूद होता है जिसके कारण ठण्ड के मौसम में इसके सेवन से सर्दी-जुखाम नहीं होता और बॉडी की इम्युनिटी



पावर भी बढ़ती है, अगर आप नियमित रूप से एक संतरे का सेवन करते हैं तो आपको कभी भी एंटीबायोटिक

दवाएं खाने की जरूरत नहीं पड़ेगी.

3- लाल अंगूर भरपूर मात्रा में विटामिन सी, ए और बी6 मौजूद होते हैं और साथ ही इसमें भरपूर मात्रा में फ्लेवेट, पोटैशियम, आयरन, कैल्शियम आदि पाए जाते हैं, सर्दियों के मौसम में इसके सेवन से कब्ज, थकान और पेट संबंधी कोई बीमारी नहीं होती है.

4- कीवी में विटामिन सी की भरपूर मात्रा पायी जाती है, अगर आप नियमित रूप से नाश्ते में कीवी फल में हल्का सा नमक छिड़क कर खाते हैं तो इससे शरीर गरम रहता है और ठंड नहीं लगती.

सर्दियों के मौसम में ज़रूर करे गाजर जूस का सेवन

ठण्ड के मौसम में लाल गाजर खाना बहुत अच्छा लगता है पर क्या आपको पता है की गाजर हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है. नियमित रूप से कच्ची गाजर खाने या इसका जूस पीने से आप अपने शरीर को कई समस्याओं से बचा सकते हैं, गाजर में भरपूर मात्रा में औषधीय गुण मौजूद होते हैं, जो आपकी सेहत को हमेशा



तंदरुस्त बनाये रखने में आपकी मदद करते हैं, अगर आपको हमेशा कमजोरी महसूस होती है तो रोज सुबह खाली पेट में आधा गिलास गाजर के जूस में पालक का रस मिलाये और फिर इसमें भुना जीरा, काला नमक मिला कर पिए इससे शरीर की कमजोरी दूर हो जाती है. ठण्ड के मौसम में नियमित रूप से गाजर के जूस का सेवन करने से आपकी बॉडी अंदर से गर्म रहती है इसके अलावा अगर आपको ठण्ड के कारण सर्दी जुकाम हो गया है तो गाजर के रस में काली मिर्च मिला कर पिए, ऐसा करने से सर्दी-खांसी, जुकाम और कफ की समस्या ठीक हो जाती है. पेट के लिए भी गाजर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है, अगर आपको पेट से जुड़ी समस्याएँ रहती हैं तो इसके लिए नियमित रूप से गाजर के रस में नींबू और पालक का रस मिलाकर पिए, इससे पेट तो स्वस्थ रहता है साथ ही कब्ज की समस्या दूर होती है.

दिमाग को तेज बनाता है टमाटर

शरीर के साथ साथ दिमाग का स्वस्थ रहना भी बहुत ज़रूरी होता है, पर उम्र के बढ़ने के साथ ही हमारे दिमाग के सेल्स सिकुड़ने लगते हैं जिससे इनको बहुत नुकसान पहुँचता है, आज के समय में तो सिर्फ बड़े ही नहीं बल्कि बच्चे भी दिमाग के कमजोर होने की समस्या का शिकार हो रहे हैं. जिसके कारण वो कम उम्र में ही डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं, अगर आप भी बार बार भूल जाते हैं तो इसका मतलब ये है की धीरे धीरे आप भी दिमागी कमजोरी का शिकार हो रहे हैं. ऐसे में आपको कुछ खास आहारों का सेवन करने की ज़रूरत है इन आहारों के सेवन से आपका दिमाग तेज हो जायेगा पालक में भरपूर मात्रा में नेचुरल रूप से एंटीऑक्सीडेंट गुण मौजूद होते हैं जो हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं, पालक में भरपूर मात्रा में आयरन और मैग्नीशियम पाए जाते हैं जो याद रखने की क्षमता को बढ़ाते हैं और खून को दिमाग से लेकर शरीर के अन्य हिस्सों तक पहुंचाने का काम करते हैं. अलसी के बीज भी याद रखने की क्षमता को बढ़ाने का काम करते हैं, अलसी के बीजों में भरपूर मात्रा में फाइबर और प्रोटीन मौजूद होते हैं अगर आप अलसी के बीजों को दही का सेवन करते हैं तो इससे दिमाग तेज होता है.



कब्ज की समस्या से छुटकारा दिलाता है अमरुद

अमरुद एक बहुत ही मीठा और स्वादिष्ट फल होता है, पर क्या आपको पता है की अमरुद हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है, अमरुद से कई बीमारियों को इलाज भी किया जा सकता है, अमरुद में भरपूर मात्रा में विटामिन सी, विटामिन ए, कैल्शियम, आयरन जैसे सभी ज़रूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं. सिर्फ अमरुद ही नहीं बल्कि इसके बीज और पत्तियों भी हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं, आज हम आपको अमरुद के कुछ फायदों के बारे में बताने जा रहे हैं. अगर आप पेट से जुड़ी समस्याओं से परेशान रहते हैं तो नियमित रूप से सुबह खाली पेट में अमरुद को काले नमक के साथ खाएं. ऐसा करने से आपकी पाचन क्रिया दुरुस्त हो जाएगी. और पेट से जुड़ी और भी कई समस्याएँ दूर होंगी. कई बार बच्चों के पेट में कीड़े हो जाते हैं जिसके कारण बहुत परेशानी होती है, अगर आप भी इसी समस्या से परेशान हैं तो अपने बच्चे को अमरुद खिलाये. अमरुद के सेवन से पेट के सभी कीड़े मर जाते हैं. अमरुद के इस्तेमाल से आँखों की सूजन को भी दूर किया जा सकता है, इसके लिए अमरुद की पत्तियों को पीसकर अपनी आँखों के नीचे लगाएं. ऐसा करने से आपकी आँखों के नीचे की सूजन दूर हो जाएगी. आजकल अधिकतर लोग कब्ज की समस्या से परेशान रहते हैं. अगर आप कब्ज की समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं तो रोज सुबह खाली पेट पका हुआ अमरुद खाएं. ऐसा करने से कब्ज की समस्या दूर हो जायेगी.



मधुमेह ने एक बार पकड़ा तो फिर छोड़ेगा नहीं, इस तरह बचें

आजकल के इस भागदौड़ भरे युग में अनियमित जीवनशैली के चलते जो बीमारी सर्वाधिक लोगों



को अपनी गिरफ्त में ले रही है वह है मधुमेह। मधुमेह को धीमी मौत भी कहा जाता है। यह ऐसी बीमारी है जो एक बार किसी के शरीर को पकड़ ले तो उसे फिर जीवन भर छोड़ती नहीं। इस बीमारी का जो सबसे बुरा पक्ष है वह यह है कि यह शरीर में अन्य कई बीमारियों को भी निमंत्रण देती है। मधुमेह रोगियों को आंखों में दिक्कत,

किडनी और लीवर की बीमारी और पैरों में दिक्कत होना आम है। पहले यह बीमारी चालीस की उम्र के बाद ही होती थी लेकिन आजकल बच्चों में भी इसका मिलना चिंता का एक बड़ा कारण हो गया है। जब हमारे शरीर के पैंक्रियाज में इंसुलिन का पहुंचना कम हो जाता है तो खून में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है। इस स्थिति को डायबिटीज कहा जाता है। इंसुलिन एक हार्मोन है जोकि पाचक ग्रंथि द्वारा बनता है। इसका कार्य शरीर के अंदर भोजन को एनर्जी में बदलने का होता है। यही वह हार्मोन होता है जो हमारे शरीर में शुगर की मात्रा को कंट्रोल करता है। मधुमेह हो जाने पर शरीर को भोजन से एनर्जी बनाने में कठिनाई होती है। इस स्थिति में ग्लूकोज का बढ़ा हुआ स्तर शरीर के विभिन्न अंगों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देता है। यह रोग महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है। मधुमेह ज्यादातर वंशानुगत और जीवनशैली बिगड़ी होने के कारण होता है। इसमें वंशानुगत को टाइप-1 और अनियमित जीवनशैली की वजह से होने वाले मधुमेह को टाइप-2 श्रेणी में रखा जाता है।



हर्बल फेशियल से बढाए अपनी खूबसूरती

अपने चेहरे की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए लड़कियाँ अपने चेहरे पर कई तरह फेशियल करवाती है, पर इन फेशियल्स में केमिकल की भरपूर मात्रा मौजूद होती है, जिससे आपके चेहरे को काफी नुकसान भी हो सकता है. इसलिए आज हम आपको आपके चेहरे को सुंदर और ग्लोइंग बनाने के लिए आप घर पर हर्बल फेशियल करने के तरीके के बारे में बताने जा रहे है.

सामग्री

आलू- 1,पीपीता- 1/4 कप ,ओट्स या राइस पाउडर- 2-3 टीस्पून,ग्रीन टी बैग- 3,आइस क्यूब,शहद- 2-3 टीस्पून
कोकोनट मिल्क- 1/2 कप (ड्राई स्किन),संतरे का रस- 1/2 कप (ऑयली स्किन),केला- 1/2 कप ,जैतून का तेल- 2 टीस्पून,बादाम तेल- 2 टीस्पून,ठंडा पानी,स्ट्रॉबेरी- 4

फेशियल करने का तरीका

- 1- स्किन की गंदगी और टैनिंग निकालने के लिए सबसे पहले अपने चेहरे को साफ पानी से धो ले और फिर इसके बाद आलू के एक टुकड़े को काटकर अपने चेहरे पर 5 मिनट तक रगड़े. चेहरे पर आलू रगड़ने के बाद स्किन को टिशू पेपर को गीला करके साफ कर लें.
- 2- अब एक बाउल में पीपीता और ओट्स या राइस पाउडर को मिलाकर पेस्ट बना ले और इसे अपने चेहरे पर लगाकर हल्के हाथों से 2 मिनट तक रब करें. और फिर इसे 5 मिनट तक ऐसे ही छोड़ दे और फिर रुई की मदद से चेहरा साफ कर लें.
- 3- स्किन के रोम छिद्रों को ओपन करने के लिए टी बैग को पानी में उबाले और फिर इससे अपने चेहरे पर भाप ले, और उसके बाद ब्लैकहेड रिमूवर से अपने चेहरे को साफ कर लें. अब इसके बाद अपने चेहरे पर 5 मिनट तक बर्फ के टुकड़े को रगड़े,
- 4- अब एक कटोरे में शहद, कोकोनट मिल्क या संतरे का रस और केला को लेकर अच्छे से मिला ले, अब इसे अपने चेहरे पर लगाकर मसाज करें. चेहरे की मसाज करते हुए बीच-बीच में बादाम और जैतून का तेल लगाते रहे, 10 मिनट तक मसाज करने के बाद ठंडे पानी से चेहरा धो लें.
- 5- अब स्ट्रॉबेरी, राइस पाउडर और शहद को मिलाकर पेस्ट बना ले और इसे अपने चेहरे पर 15 मिनट तक लगाएं.

कम कीमत में पाए गजब का निखार

आज के समय हर कोई इतना बिजी रहने लगा है की उनके पास ज़रा भी टाइम नहीं रहता है, फिर चाहे वो महिलाएँ हो या पुरुष, लगातार नज़रअंदाज़ होने के कारण महिलाओं

की स्किन रूखी और बेजान हो जाती है, जिससे उनके चेहरे का रंग सांवाला होने लगता है. कई महिलाएँ समय बचाने के लिए फेयरनेस क्रीम का इस्तेमाल करती है पर इससे भी कोई फायदा नहीं होता है,. इसलिए आज हम आपको एक ऐसा तरीका बताने जा रहे है जिसके इस्तेमाल से आपकी स्किन ग्लोइंग हो जाएगी और समय के साथ

साथ आपके पैसे भी बच जायेंगे.

अपने स्किन में निखार लाने के लिए सबसे पहले एक बाउल में थोड़ा सा बेसन ले ले, अब इसमें एक चुटकी हल्दी मिलाये और इसे कच्चे दूध की सहायता से गाढ़ा गोल कर पेस्ट बना ले, अब इस



पेस्ट को अपने चेहरे और गर्दन पर अच्छे से लगाए. और जब ये सूख जाये तो इसे ठण्डे पानी से धो ले, अगर आप हफ्ते में 4 बार इस पैक का

इस्तेमाल करती है तो इससे आपकी स्किन में गजब का ग्लो आ जायेगा, इसके अलावा आप दही में नींबू का रस मिलाकर भी चेहरे पर लगा सकते है. इससे भी आपका रंग गोरा हो जायेगा और स्किन के सभी दाग-धब्बे दूर हों जायेंगे.



फिट बॉडी बनाने के टिप्स

अच्छी बॉडी चाहिये तो, प्रोटीन और पोषक तत्वों से भरे आहार लेने होंगे। बॉडी बिल्डिंग के लिये आपको चीनी, कार्ब और अतिरिक्त वसा वाले भोजन पर रोक लगानी होगी। अगर आप भी बॉडी बिल्डिंग का शौक रखते हैं तो हम आपको ऐसे आहारों की जानकारी देंगे, जिसे नियमित खाने से आपकी बॉडी जल्द बनेगी। साथ ही आपका इम्म्यून सिस्टम भी मजबूत रहेगा।

अंडे

बॉडी बिल्डिंग के लिये अंडे से अच्छा कुछ नहीं हो सकता क्योंकि इसके सफेद भाग में 84 प्रतिशत प्रोटीन और 0 प्रतिशत वसा होती है। अंडे को हमेशा उबाल कर ही खाना चाहिये। दिन में दो से तीन बार 2-4 अंडे दूसरे खाद्य पदार्थों जैसे नट्स, दूध आदि के साथ लेना चाहिए।

माँसाहारी भोजन

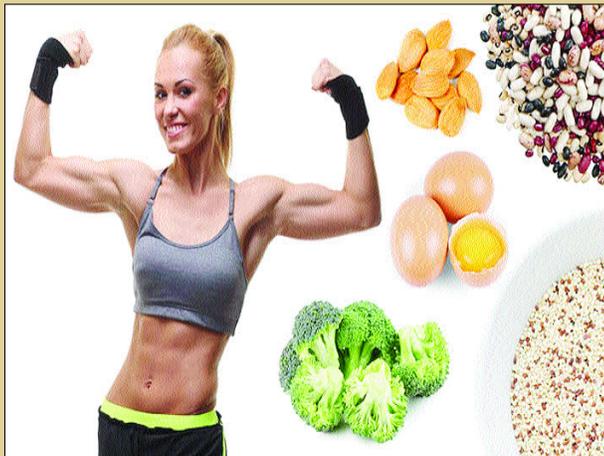
अधिक मसल्स का निर्माण करने लिए माँसाहारी भोजन काफी लाभदायक होता है मांस, चिकन और टर्की लीन मीट प्रोटीन के सबसे अच्छे स्रोत हैं। इनमें प्रोटीन के साथ-साथ अमीनो एसिड भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है जो हमारे शरीर के मसल्स को बनाने में मदद करते हैं। हफ्ते में एक बार मटन जरूर खाएं लेकिन कोशिश यह करें कि मटन फ्राई ना किया हुआ हो। मटन प्रोटीन, आयरन, जिंक और विटामिन बी से भरा होता है। मछली आपकी मासपेशियों को बढ़ाने के लिये मोनो सैचुरेटेड फैट की आवश्यकता होती है। वर्कआउट करते समय शरीर का सारा फैट बर्न हो जाता है तो ऐसे में शरीर में जमा मोनो सैचुरेटेड फैट ही शरीर में एनर्जी बढ़ाता है।

पनीर

इसमें बिल्कुल भी फैट नहीं होता और काफी मात्रा में प्रोटीन होता है। इसलिये यह बॉडी बिल्डिंग के लिये अच्छा होता है।

ब्रॉकली

इसमें विटामिन सी होता है जो कि शरीर में सैल्स को तुरंत खराब नहीं होने देती और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है।



ग्रीन टी

इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि यह शरीर में अच्छे बैक्टीरिया को जन्म देती है जिससे बॉडी बिल्डर्स का इम्म्यून सिस्टम मजबूत होता है और बीमारियां दूर होती हैं।

मशरूम

डॉक्टरों का कहना है कि मशरूम का सेवन मानव सेहत के लिए रामबाण है। सफेद रंग के मशरूम लाभदायक होते हैं। इसमें बहुत सारा पोषण होता है जिससे मासपेशियां बनने में मदद मिलती है। मशरूम में मौजूद एंटी ऑक्सीडेंट हमें भयंकर फ्री रेडिकल्स से बचाता है। इसको खाने से शरीर में एंटीवाइरल और अन्य प्रोटीन की मात्रा बढ़ती है, जो कि कोशिकाओं को रिपेयर करता है। मशरूम में लीन प्रोटीन होता है

जो कि वजन घटाने में बड़ा कारगर होता है।

केला

इसे खाने से शरीर की प्रतिरक्षा बढ़ती है और यह प्रोटीन बढ़ाने में भी मददगार होता है। केला ऊर्जा का बहुत अच्छा स्रोत माना गया है, इसमें औसतन 105 कैलोरी पायी जाती हैं जो शरीर को किसी भी प्रकार की कमजोरी से बचाती है। अगर आप व्यायाम करने के बाद थक जाते हैं, तो तुरन्त एक केला खा लीजिए यह रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ा कर आपको शक्ति देगा।

पाइनएप्पल

अच्छी मसल्स बनाने के लिए ताजे पाइनएप्पल का सेवन बहुत फायदेमंद है इससे वर्कआउट के लिये एनर्जी मिलती है।

बादाम

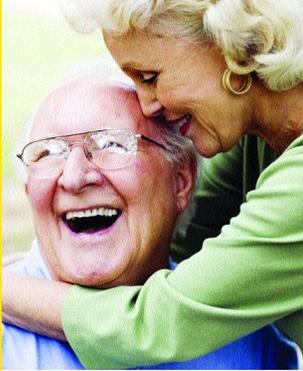
बॉडी बिल्डिंग के लिये बादाम बहुत अच्छे स्रोत माने जाते हैं। इसमें बहुत सारा अमीनो एसिड होता है जो कि मसल्स बनाने में उपयोगी होते हैं। बादाम खाने से न कॉलेस्ट्रॉल बढ़ेगा न वजन। बादाम प्रोटीन का अच्छा स्रोत है। सौ ग्राम बादाम में 21 ग्राम के आसपास प्रोटीन होता है।

हरी सब्जियां

पालक और अन्य हरी सब्जियां मसल्स के लिए बहुत फायदेमंद होती हैं। सब्जियों में एंटीऑक्सीडेंट्स भारी मात्रा में पाए जाते हैं, इसलिए मसल्स के लिए सब्जियां बहुत जरूरी हैं। भारी वर्कआउट करने के बाद मसल्स को आराम की जरूरत होती है। ये सब्जियां मसल्स को रिलेक्स करने में भी मदद करती हैं।

लंबा जीवन और अच्छी सेहत पाने के लिए करें इन चीजों का नियमित सेवन

जैसा की आप जानते ही है कि जैसे-जैसे उम्र बढ़ती चली जाती वैसे-वैसे कई सारी बीमारियों का सामना करना पड़ता है. आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में व्यक्ति अपने आप पर



ध्यान नहीं दे पाता है, जिसके कारण कई सारी बीमारियों की जकड़ में आ जाता है. उम्र के साथ ही शुगर, डायबिटीज जैसी बीमारियाँ और अधिक बढ़ने लगती है, ऐसी स्थिति में हमें अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि

खान-पान पर ही हमारी सेहत निर्भर करती है. आज हम कुछ ऐसी ही चीजों के बारे में बात करेंगे, जिनकी मदद से हम एक अच्छा जीवन व्यतीत कर सकते हैं. एक अच्छे स्वास्थ्य के लिए इन चीजों का सेवन करना जरूरी है, जैसे कि आँवला इसमें विटामिन सी पाया जाता है जो हमारे शरीर को संक्रमण से बचाता है. दूसरा है अदरक इसमें एंटी-ऑक्सीडेंट्स पाया जाता है जो डायबिटीज से बचाता है, वही इलाइची शरीर के विषैले तत्व को दूर करने में मदद करती है. जिससे शुगर लेवल बराबर रहता है. लोंग का इस्तेमाल एक औषधि के रूप में किया जाता है, इसमें बीमारियों से लड़ने के कई सारे गुण पाए जाते हैं, इन चीजों का सेवन करने से हम खुद को स्वस्थ रख सकते हैं.

अस्थमा रोगियों के लिए फायदेमंद होता है प्याज का सेवन

प्याज का इस्तेमाल तो लगभग हर किचन में किया जाता है, ये हमारे खाने के स्वाद को दोगुना कर देता है. पर क्या आपको पता है की प्याज हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है. प्याज में भरपूर मात्रा में एंटी बैक्टीरियल गुण मौजूद होते हैं, जो हमारे खून से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने का काम करते हैं. इसके सेवन से बुखार, कफ और कोलेस्ट्रॉल की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है. आज हम आपको प्याज से जुड़े कुछ सेहत सम्बन्धी फायदों के बारे में बताने जा रहे हैं.

1-अस्थमा की समस्या में प्याज का सेवन बहुत फायदेमंद होता है. इसके सेवन से अस्थमा की बीमारी को ठीक किया जा सकता है. रोज सुबह शाम थोड़े से प्याज के रस में शहद मिलाकर पीने से अस्थमा की बीमारी ठीक हो जाती है. इसके अलावा लीवर से जुड़ी समस्याओं के लिए भी प्याज का सेवन बहुत फायदेमंद होता है. ये हमारे खून को पतला करने का काम करता है.

2-प्याज के सेवन से कैंसर जैसी खतरनाक

बीमारी से बचाव किया जा सकता है. ये हमारी



बॉडी में कैंसर की कोशिकाओं को फैलने से रोकने का काम करता है. इसमें भरपूर मात्रा में सल्फर तत्व मौजूद होते हैं जो पेट, ब्रेस्ट, फेफड़े प्रोस्टेट कैंसर से बचाव करने का काम करते हैं.

3-आंखों के लिए भी प्याज का सेवन बहुत फायदेमंद होता है. प्याज में भरपूर मात्रा में केलिसिन और रायबोफ्लेविन और विटामिन बी मौजूद होते हैं जो हमारी आँखों की रौशनी को तेज करने में मदद करते हैं.

ये टिप्स बनायेंगे आपको फिल्म स्टार्स सा खूबसूरत

हर लड़की अपनी स्किन को खूबसूरत और गोरा बनाना चाहती है पर लाख उपायों को अपनाने के बाद भी उनकी स्किन में वो निखार नहीं आ पाता है. कई लड़कियां तो अपनी स्किन को खूबसूरत बनाने के लिए महंगे महंगे ब्यूटी ट्रीटमेंट्स भी करवाती हैं जिनमें सिर्फ ढेरों पैसे खर्च होते हैं पर मनचाहा रिजल्ट नहीं मिल पाता है. पर आज हम आपको एक ऐसा तरीका बताने जा रहे हैं जिसके इस्तेमाल से आपकी स्किन फिल्म स्टार्स जैसी खूबसूरत हो जाएगी. हम रोज जो कुछ भी खाते हैं उसका सीधा असर हमारी स्किन पर पड़ता है, इसलिए अपनी डाइट में पौष्टिक आहार को शामिल करें. इसके अलावा ग्लोइंग स्किन पाने के लिए आप हार्डिज़ फेशियल ट्रीटमेंट भी करवा सकती हैं. इससे आपकी



स्किन पर मौजूद ब्लैकहेड्स आसानी से निकल जाते हैं और स्किन सॉफ्ट होती है. इसके अलावा अपनी स्किन को खूबसूरत बनाने के लिए आप कुछ घरेलू तरीकों को भी अपना सकती हैं. अगर आपकी स्किन ऑयली है तो अपनी स्किन पर बेसन में हल्दी और दही मिलाकर चेहरे पर लगाए, इसके अलावा अगर आपकी स्किन ड्राई है तो ओट्स पाउडर में शहद और दूध मिलाकर इस्तेमाल कर सकते हैं. इन चीजों के इस्तेमाल से आप भी फिल्म स्टार्स जैसी खूबसूरत स्किन पा सकती हैं.



सिर्फ अमीरों के घर में ही लगा होता है ये पौधा, चुंबक की तरह पैसे खींचता है!

वैसे आजकल ऐसे कई लोग हैं जो अपने घरों पर सुंदर पेड़ पौधे लगाने का शौक रखते हैं वहीं कौन नहीं चाहेगा कि वो अपने घर में हरे भरे पेड़ पौधे देखें इससे ना केवल घर में हरियाली फैलाती है बल्कि ये पौधे देखने में भी अच्छे लगते हैं इतना ही नहीं ये आपकी आंखों को भी सुकून देते हैं। लेकिन अक्सर लोग अपने घरों में वही पौधा लगाते हैं जो उन्हें अच्छा लगता है लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि घर पर लगाए जाने वाले इन पौधों में कुछ ऐसे भी होते हैं जो आपकी किस्मत तक बदल सकते हैं। जी हां ये सच है लेकिन कुछ लोग जानकारी के अभाव में इसे नहीं लगाते हैं लेकिन जिसे इस बात की जानकारी होती है उसे आप देखेंगे तो देखते ही रह जाएंगे, क्योंकि इस पौधे के कारण ही उसकी लाइफ आपसे अगल होती है। जी बता दें कि ये ऐसा पौधा है जिसके लगाने से घर के आसपास भी नकारात्मक ऊर्जा का भटकना दूर हो जाता है। वही घर पर लगाए जाने वाले कई पेड़ों से हमारी सेहत पर अच्छा प्रभाव पड़ता है तो कुछ पौधे हैं जो परिवार के लोगों के लिये लकी होते हैं। माना जाता है कि इस पौधे के घर में लगा लेने मात्र से ही सकारात्मक ऊर्जा पूरे घर में फैल जाती है और नकारात्मक ऊर्जा बाहर चली जाती है। वही घर में सभी का स्वास्थ्य भी सही बना रहता है और वे हमेशा खुश रहते हैं। तो आइये जानते हैं कौन सा है वो पौधा, अगर आप ध्यान देंगे तो देखेंगे कि मोरपंखी का पौधा जहां लगा होता है उस घर के लोगों को कभी पैसों की समस्या नहीं होती है।

आज हम आपको इसी मोरपंखी पौधे के बारे में पांच ऐसी बातें बताएंगे जिसे जानना अनिवार्य है।

1. कभी भी इस पौधे को अकेला न लगाए बल्कि हमेशा जोड़ा लगाएं।
2. इस पौधे को जब भी लगाएं घर के मुख्य द्वार के पास ही आमने सामने लगाएं। माना जाता है कि जिस घर के मुख्य द्वार पर ये पौधा लगा होता है उस घर में नकारात्मक ऊर्जा कभी प्रवेश नहीं कर पाती है।
3. इस पौधे के लगाने से पैसों की कमी कमी नहीं होती है, इसलिए आपने ध्यान दिया होगा तो ये पौधा अमीरों के यहां ही रहता है।
4. इसे नियमित रूप से जल देना आवश्यक है क्योंकि ये पौधा सूखना नहीं चाहिए अगर ये सूख जाता है तो उस गमले में दूसरा पौधा खरीदकर तुरंत लगाएं।
5. माना जाता है कि जिस घर में पौधा रहता है उस घर में कोई बिमार नहीं होता है इसलिए जल्द ही इस पौधे को अपने घर ले आएं।

घर में लगाएंगे ये खास पेड़ तो होगा शनि का प्रकोप कम और आण्णा घर में धन

श्री बालाजी धाम, सहारनपुर के संस्थापक श्री अतुल जोशी जी महाराज के अनुसार, हमारे पुराणों में भी वर्णित है कि पीपल, केला और शमी का वृक्ष आदि ऐसे पेड़ हैं, जो हमारे जीवन में सुख-समृद्धि प्रदान करते हैं। पीपल और शमी दो ऐसे वृक्ष हैं, जिन पर शनि का प्रभाव होता है। पीपल का वृक्ष बहुत बड़ा होता है, इसलिए इसे घर में लगाना संभव नहीं हो पाता। वास्तु शास्त्र के मुताबिक नियमित रूप से शमी की पूजा करने और उसके नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाने से शनि दोष और उसके कुप्रभावों से बचा जा सकता है। शमी के वृक्ष को घर के मुख्य दरवाजे के बाईं तरफ लगाएं। मान्यता है कि शमी का पेड़ घर में लगाने से देवी-देवताओं की कृपा बनी रहती है। हम आपको बताते हैं कि शमी वृक्ष घर में लगाकर उसकी नित्य आराधना करने पर क्या फायदे हैं-शमी को गणेश जी का प्रिय वृक्ष माना जाता है। इसलिए भगवान गणेश की आराधना में शमी के वृक्ष की पत्तियों को अर्पित किया जाता है। इस पेड़ की पत्तियों का आयुर्वेद में भी महत्व है। आयुर्वेद की नजर में शमी अत्यंत गुणकारी औषधि है। कई रोगों में इस वृक्ष के अंग काम लिए जाते हैं। शमी के पेड़ की पूजा करने से घर में शनि का प्रकोप कम होता है। शास्त्रों में शनि के प्रकोप को कम करने के लिए कई उपाय बताए गए हैं। लेकिन इन सभी उपायों में से प्रमुख उपाय है शमी के पेड़ की पूजा। घर में शमी का पौधा लगाकर पूजा करने से आपके कामों आने वाली रुकावट दूर होगी। शमी के वृक्ष पर कई देवताओं

का वास होता है। शमी के कांटों का प्रयोग तंत्र-मंत्र बाधा और नकारात्मक शक्तियों के नाश के लिए होता है। शमी के पंचांग, यानी फूल, पत्तियों,



जड़, टहनियों और रस का इस्तेमाल कर शनि संबंधी दोषों से मुक्ति पाई जा सकती है। शमी वृक्ष की लकड़ी को यज्ञ की वेदी के लिए पवित्र माना जाता है। शनिवार को करने वाले यज्ञ में शमी की लकड़ी से बनी वेदी का विशेष महत्व है। एक मान्यता के अनुसार कवि कालिदास को शमी के वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करने से ही ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। दशहरे पर शमी के वृक्ष के पूजन का विशेष महत्व है। नवरात्र में भी शमी के वृक्ष की पत्तियों से पूजन करने का महत्व बताया गया है। नवरात्र के नौ दिनों में प्रतिदिन शाम के समय वृक्ष का पूजन करने से धन की प्राप्ति होती है।

घर के इस हिस्से में रखें तुलसी का पौधा

हिंदू धर्म में वास्तुशास्त्र का काफी महत्व है। घर में किस वस्तु को किस दिशा या स्थान पर रखना चाहिए इसकी जानकारी वास्तुशास्त्र में मिलती है। मान्यता है कि वास्तु शास्त्र के अनुसार अगर घर को सजाया जाए तो घर में खुशहाली आती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, कई बार हम घर का वातावरण अच्छा करने के लिए पौधे लगाते हैं लेकिन वास्तु ठीक न होने से कारण घर में नकारात्मक ऊर्जा आती है। लेकिन अगर इन्हीं पौधों को वास्तु में बताए गए स्थान पर लगाएं तो बहुत ही शुभ होता है। वास्तु के मुताबिक तुलसी का पौधा घर में जरूर होना चाहिए। मान्यता है कि इस पौधे में साक्षात् मां लक्ष्मी का वास होता है। इस पौधे का घर में होने से कंगाली दूर होती है। साथ ही इसको लगाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश नहीं कर पाती है। अगर होती भी है तो यद उसे नष्ट कर घर में धन की वृद्धि करता है। वास्तु के अनुसार, घर के दक्षिण भाग में छोड़कर कहीं भी तुलसी का पौधा लगाया जा सकता है। क्योंकि दक्षिण में लगा पौधा फायदे की बजाए नुकसान पहुंचा सकता है।



बिजनेस वूमन बॉलीवुड अभिनेत्रियां

बॉ लीवुड की बेहतरीन फिल्मों में नजर आने वाली एक्ट्रेससे सिर्फ अपनी एक्टिंग ही नहीं बल्कि अपने बिजनेस में कामयाबी हासिल कर चुकी हैं। दीपिका पादुकोण, अनुष्का शर्मा, आलिया भट्ट समेत कई टॉप एक्ट्रेस फिल्मों के साथ-साथ अपना बिजनेस भी चलाती हैं जिससे उनकी जबरदस्त इनकम होती है। आइए जानते हैं कौन हैं बिजनेस करने वाली बॉलीवुड एक्ट्रेससे-

दीपिका पादुकोण-बॉलीवुड की हाईएस्ट पेड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण फिल्मों के अलावा अपने क्लोदिंग ब्रांड ऑल अबाउट यू से भी अच्छी कमाई करती हैं। ये एक ऑनलाइन क्लोदिंग स्टोर है जिसे एक्ट्रेस ने साल 2015 में मित्रा के साथ कोलेबोरेशन कर शुरू किया है। इसके पहले भी दीपिका ने 2013 में वान हुसैन के साथ मिलकर महिलाओं के लिए

फैशन ब्रांड की शुरुआत की थी। दीपिका अक्सर अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपनी क्लोदिंग ब्रांड का प्रमोशन करती रहती है।

शिल्पा शेठ्टी-कई सालों से फिल्मों से दूर

शिल्पा शेठ्टी रेस्टोरेंट, स्पा और बार का बिजनेस करती हैं। इसके साथ ही शिल्पा ने कुछ महीनों पहले ही मुंबई के वर्ली इलाके में बेस्टियन चैन नाम का एक नया रेस्टोरेंट शुरू किया है। इन हॉस्पिटेलिटी बिजनेस से शिल्पा की करोड़ों में कमाई होती है। इसके अलावा शिल्पा आईपीएल की टीम राजस्थान रॉयल्स की भी मालकिन हैं।

कटरीना कैफ-टाइगर जिंदा है और भारत जैसी कई बेहतरीन फिल्मों में नजर आ चुकी कटरीना कैफ एक कामयाब बिजनेसवुमन हैं। एक्ट्रेस ने साल 2019 में अपनी ब्यूटी ब्रांड लॉन्च की है जिसका नाम के ब्यूटी है। इसके लिए एक्ट्रेस ने मेकअप ब्रांड नायका के साथ टाइअप किया है। एक्ट्रेस पिछले कई सालों से इस बिजनेस की तैयारी कर रही थीं जिसे उन्होंने पिछले साल लॉन्च कर दिया है। कटरीना की मेकअप ब्रांड को काफी पसंद किया जाता है।

सनी लियोन-बॉलीवुड की पसंदीदा और क्यूट



आइटम गर्ल एक नहीं बल्कि दो बिजनेस संभालती हैं। पॉर्न स्टार रह चुकीं सनी एक ऑनलाइन एडल्ट स्टोर चलाती हैं जिसे उन्होंने साल 2013 में शुरू किया है। इस स्टोर के जरिए सेक्स टॉय, सेक्सी कॉस्ट्यूम, स्विम वियर, पार्टी वियर कॉस्ट्यूम को सेल किया जाता है। ये भारत का पहला लीगल एडल्ट स्टोर है।

सोनम कपूर-एक्टिंग की बजाय अपने फैशन सेंस के चलते सुर्खियों में रहने वाली सोनम कपूर ने अपनी बहन रिया कपूर के साथ मिलकर कपड़ों का बिजनेस शुरू किया है। उनकी फैशन ब्रांड का नाम रीहसोन है जिसमें डिजाइनर कपड़ों, जूलरी और फुटवियर की रेंज मिलती है।

आलिया भट्ट-फिल्मों के साथ ही आलिया भट्ट लगातार स्टार्टअप में इंवेस्ट करती आई हैं। साल 2013 में एक्ट्रेस ने स्टाइल क्रैकर नाम का एक स्टार्टअप शुरू किया था। इसमें आलिया की टीम मिलकर लोगों को स्टाइल करती है। इसके अलावा आलिया ने 2020 में खुद की कंपनी शुरू की है जिसका नाम एड-ए-मम्मा है। ये एक किड फैशन ब्रांड है जिसमें 4 से 12 साल के बच्चों की जरूरत के सभी कपड़े मिलते हैं।

अनुष्का शर्मा-कुछ सालों पहले ही बॉलीवुड एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा ने नुश नाम की क्लोदिंग लाइन शुरू की है। इसके अलावा अनुष्का ने अपने भाई के साथ मिलकर क्लिन स्लेट फिल्म प्रोडक्शन हाउस भी शुरू किया है। इस प्रोडक्शन हाउस से अब तक एनएच10, फिल्लौरी और परी जैसी फिल्में प्रोड्यूस की जा चुकी हैं। इस प्रोडक्शन की वेब सीरीज पाताललोक भी दर्शकों द्वारा काफी पसंद की गई थी।

